विलासिनी

लेखक

श्री भगवतशरण उपाध्याय
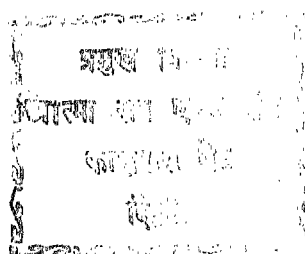
प्रकाशक

प्रयाग पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण

मूल्य १)

देवकुमार मिश्र द्वारा हिंदुस्तानी प्रेस, पटना में मुद्रित और
प्रयाग पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद
द्वारा प्रकाशित

श्री राजेंद्रनाथ नागर को

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ ४५ पृष्ठ ४५ पर दूसरी पंक्ति के नीचे पृष्ठ ४७ की दूसरी पंक्ति के 'इस समय दुबाय…' से लेकर पृष्ठ ४८ के 'उसके साथ फ्रांस भाग जायगी।' (नीचे से चौथी पंक्ति) तक के सारे अंश को पढ़ें।

पृष्ठ ४८ (नीचे से दूसरी पंक्ति) 'को' की जगह 'उसको' पढ़ें।

भूमिका

प्रस्तुत संग्रह मेरी नौ कहानियों का है। कथानक बिदेशों से संपर्क रखते हैं। विदेश ये हैं—मिस्र, स्पेन, इंगलैंड, फ्रांस, इटली, रूस, चीन, जर्मनी और अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र। इनका उद्देश्य सर्वथा मनोरंजन है।

लखनऊ] —लेखक

विलासिनी

[१]

"क्रीटा, प्रकाश फिर फैल चला, खिड़कियों पर पर्दे डाल दे।"

"रानी, खिड़कियों पर दुहरे पर्दे पड़े हैं—नीलम की झालरों पर पन्नों की कतार डाली है और उनपर काली मखमल के पट खोल दिए हैं।"

क्षण भर बाद—

"क्रीटा, पर्दे खोल दे। दिन की दमक है, नहीं रुकने की।"

खिड़कियों से बहुमूल्य काले पर्दे हट गए। उनके खुल जाने से सूर्य का प्रकाश छन-छनकर भीतर आने लगा। सागर का गम्भीर नाद—उसकी लहरों का अनवरत टूटना—भी सुन पड़ने लगा। कमरे का कोना-कोना आलोकित हो उठा। दीवारों की झालरों के मोतियों में सागर का रंग सूर्य की किरणों के साथ भरने लगा और उसकी लहरियाँ फेन की अनन्त कतारों में उठती हुई स्फटिक की स्वच्छ दीवारों में प्रतिबिम्बित होने लगीं। समुद्र की छाया सूर्य के आलोक से मिल प्रासाद की रत्नजटित वस्तुओं में भिन्न-भिन्न रंगों की सृष्टि करने लगी।

मिस्र की रानी ने धीरे-धीरे अपनी अलसायी आँखें खोलीं। धीरे ही धीरे ऊँचे पलंग की बेशक़ीमत हरी, पीली, नीली झालरों के बाहर उसने अपना भुवनमोहन मस्तक निकाला।

"क्रीटा, तनिक मदिरा ढाल"—वह बोली।

उसके चन्द्रकान्त मुख पर चिकुरराशि बिखरी पड़ी थी। जागरण से नेत्रों के पट कुछ भारी दीखते थे। अँगड़ाती हुई रानी कुछ उठी, फिर हँसती हुई वह तकिए पर लुढ़क गयी।

क्रीटा ने स्वर्णपर्यंक की रत्नमयी झालरें खींचकर दोनों ओर पन्नों के अंकुशों में अटका दीं। फिर उसने सामने दीवार में चमकती आलमारी खोली। उन्नतग्रीव झंझर पर अनेकों रत्न जगमग-जगमग करते थे। क्रीटा ने उसे दोनों हाथों से पकड़ कमर के सहारे उठाया। बेकस* का खिचित परिवार झंझर पर चमक उठा। क्रीटा ने सुवर्ण की तिपाई पर रखे हीरक के चषक को उठा लिया और वह धीरे-धीरे हँसती हुई चली।

"आह! क्रीटा, तू कितना विलम्ब करती है! रात की खुमारी नष्टप्राय है।"

"आयी, रानी, आयी। पर मदिरा का रंग क्या तनहाई में चढ़ेगा?"—क्रीटा ने चषक देते हुए पूछा।

"चढ़ेगा, क्रीटा, अवश्य। क्लियोपेट्रा की निर्जनता में मदिरा ही तो सखी है। ला, ढाल।" उसने नेत्रों को और फैलाकर चषक लेते हुए कहा।

क्रीटा ने चषक भर दिया। जब क्यूपिड† की आकृति का बना चषक भर चला, क्लियोपेट्रा बोली—भर, और भर, क्रीटा। क्यूपिड प्यासा है।

---

* मद्यपान का ग्रीक देवता। † ग्रीकों का कामदेव

चषक उसने होठों से लगा लिया। एक साँस में वह रिक्त हो गया। उसने खाली चषक क्रीटा की ओर बढ़ा दिया। क्रीटा ने उसे फिर भर दिया। चषक होठों से लगाते ही बिखरी अलकें उसपर झुक पड़ीं। क्रीटा उन्हें सम्हालने चली।

"रहने दे, रहने दे, क्रीटा। मदालस में उन्हें भी अलसाने, अँगड़ाने दे। चल, भर जल्दी।" मिस्र की रानी बोली।

"रानी, गुलाब खिल चला, अब बस करो।" मदिरा ढालती हुई क्रीटा बोली।

"अब बस करो—क्यों, क्यों? अब बस क्यों करूँ? अनाड़ी लड़की, क्या यह मेडिटरेनियन * बस करता है, जो मैं बस करूँ। इसकी स्वामिनी होकर? ढाल और ढाल। और देख जरा उस समुन्दर की ओर।" क्लियोपेट्रा ने धीरे-धीरे अपनी भुजा सामने खिड़की की ओर उठाई। संगमरमर-सरीखी भुजा स्कन्ध तक खुली थी। कन्धे के आच्छादन से अत्यन्त छोटे मोतियों की अनेकों लड़ियाँ तितर-बितर हो नीचे लटक गयीं।

स्वयं उसने क्रीटा के साथ मेडिटरेनियन की हल्की उठती लहरियों को देखा। उसके विशाल नेत्रों में वह नील सागर लहराने लगा। आकाश मेघों से उन्मुक्त था, सागर वायु से निरुद्वेलित। सागर की हल्की लहरियाँ उमड़ रही थीं और उनके फेन-कणों में सूर्य के सात रंग रह-रहकर चमक उठते थे। चषक फिर भर गया। क्लियोपेट्रा के केश वायु के झोंकों से उठ-उठकर पीछे की ओर लहराने लगे। मुख दमक उठा। चन्द्रमा के मण्डल में एक भी धब्बा न था। सालस नेत्रों के

---

* भूमध्यसागर

ऊपर भौंहों का उन्नयन पश्चिम की ओर धनुष ताने हुए था—रोम की ओर, जिधर पिछली रात को ही जूलियस सीजर का जहाज चल पड़ा था। विलासिनी ने चषक मुख से लगा लिया। सुरा का लाल रंग श्वेत ग्रीवा की रगों को और नीली करता नीचे उतर गया।

कुछ स्मरण-सा हुआ। रानी उठी। खिड़की पर जा खड़ी हुई। प्रशस्त सागर विशाल दुर्ग की प्राचीरों पर टकराता था और नगर का छोर उसके तट पर लौट-लौटकर अटक रहा था। मिस्र के राजकीय पोत अपनी नीली पालें ताने इधर से उधर उड़ रहे थे। तटवर्ती यान यात्रीयानों से कर ले रहे थे। माँझी सामुद्रिक मत्स्यों के अर्थ विशाल जालें समुद्र में डाले छोटी डोंगियों पर शिकार की टोह में फिर रहे थे। अलेग्जैंड्रिया के नागरिक जलक्रीड़ा में विभोर थे। प्राचीन तालेमी * वंश की दुहिता हाथ में चषक लिए दूर पश्चिमी क्षितिज पर विलीन होती पालों की धुँधली रेखा देख रही थी। उसके हाथ में उस रत्नजटित चषक का बाल-क्यूपिड खिलखिला रहा था। उसने अपना हाथ क्रीटा की ओर बढ़ा दिया। क्रीटा उसे लेने लगी।

"नहीं, धर नहीं, भर इसे, क्रीटा।" वह बोली।

चषक भर गया। रिक्त होते देर न लगी।

"फिर भर, फिर, फिर।"

चषक फिर भर गया, फिर, फिर।

धीरे-धीरे विलासिनी ने चषक स्वर्ण की तिपाई पर रख दिया।

"क्रीटा, इधर आ।" वह बोली।

---

* मिस्र का ग्रीक राजकुल

क्रीटा भी खिड़की पर जा पहुँची।

"देख, क्रीटे, उधर सुदूर प्रतीची की ओर एक धुँधली रेखा मिट रही है, उधर उस क्षितिज पर। देखा ?"

"देखा, रानी। पर क्या रोम की प्राचीरें तुम्हारी पहुँच से परे हैं ?" क्रीटा ने उत्तर में पूछा।

विलासिनी खिलखिला पड़ी। उसने क्रीटा को कसकर अपने बाहुपाश में बाँध लिया। फिर वह उसे पर्यंक पर खींच ले गयी। दोनों लिपट गयीं। क्रीटा के सुनहरे केशों को सहलाते हुए रानी ने अपना मुख उनपर रख दिया।

"तेरा तालेमी कहाँ है, क्रीटा ? जा उसे शांत कर, तड़प रहा होगा। तू भी जल रही है। सारी रात आज यहीं पड़ी रह गयी।" क्रीटा को ढकेलती हुई क्लियोपेट्रा ने कहा।

"दुर् !" कहती हुई क्रीटा पर्यंक से उठ गयी।

पर्यंक पर उलटती हुई विलासिनी फिर बोली—एक प्याला और देना, क्रीटा।

क्रीटा ने एक प्याला और भर दिया, एक और, फिर और।

फिर भरे, बिखरे गले से रानी बोली—क्रीटा, पर्यंक की झालरों के बंद अब खोल दे। खिड़कियों को बंद कर दे। उनके पर्दे गिरा दे।

[२]

दिग्विजयी सीजर षड्यंत्र का शिकार हो चुका था। कैसियस और ब्रूटस तलवार के घाट उतर चुके थे। ऐन्टोनियस पूर्व का स्वामी था—एकमात्र। वह पार्थिया-विजय के लिए चला। साइलीसिया में समुद्र तट के समीप सिडनस नद के तट पर वह डेरा डाले पड़ा था। कैसियस के सहायकों को उसे दंड

देना, था अपने सहायकों को पुरस्कार। शत्रुओं को उसने त्रस्त किया, मित्रों को विभूषित।

अब क्लियोपेट्रा की बारी थी। उसने कैसियस की मदद की थी। ऐन्टोनियस ने उसे बुला भेजा। पूर्व के सबसे समृद्ध राज्य की वह स्वामिनी थी। तालेमी के विशिष्ट ग्रीक परिवार की वह क्लियोपेट्रा सर्वतेजस्वी नक्षत्र थी, मिस्र के हरे-भरे मैदानों की शासिका। उसका सारा वैभव उसके विलास के साधन थे। रोम और ग्रीस के सारे विलास की वस्तुएँ भारत के बंदरों से मिस्र होकर जाती थीं। मिस्र स्वयं उस विपुल विलासराशि का क्रेता था।

× × ×

क्लियोपेट्रा के प्रासाद में विषाद छाया हुआ था। उसका अनुज तालेमी संत्रस्त था, भागने की तैयारियों में व्यस्त। क्लियोपेट्रा के विलास के सारे सहायक आज मूक थे। क्रीटा और रानी की अन्य सहचरियाँ भयातुरा हो काँप रही थीं। क्लियोपेट्रा स्वयं चुप थी; परंतु एक बार भी उसने अपने होठों से हँसी दूर न होने दी। क्रीटा उसकी हँसी से चिढ़ने लगी थी, पुरुष उसकी शांति देख दाँतों तले उँगली दबाते।

ऐंटोनियस दूत पर दूत भेज रहा था। पार्थिया पर आक्रमण करने का यह सबसे उपयुक्त समय था, जिसका क्षण-क्षण निकला जा रहा था। उसने कहलाया—"पार्थिया फिर ले लूँगा, पर याद रहे अब यदि एक दिन की भी देर हुई तो अलेग्जैंड्रिया को उखाड़कर सागर में फेंक दूँगा।"

क्लियोपेट्रा ने ऐंटोनियस का पत्र पढ़ा। क्रीटा काँप उठी। पत्र का आशय सारे नगर में आँधी की भाँति फैल गया। नगर के अधिवासी काँप उठे। क्लियोपेट्रा अट्टहास करती हुई उठी।

उसने मंडन संपन्न किया और दरबार में ऐंटोनियस के दूत को बुलाकर वह बोली—दूत, जाकर अपने जेनरल से कहो—क्लियोपेट्रा धमकियों से नहीं डरती। वेनस * उसकी आराध्य देवी है, बेकस उसका सहायक है; बाल-क्यूपिड उसके सहचर हैं। ऐंटोनियस को यदि अपने हरक्यूलिज का भरोसा है तो उसे भी अपनी आइसिस† का। फिर भी वह आयेगी—जेनरल प्रतीक्षा करे।

अभी दूत उसके मान भरे उत्तर पर आश्चर्य ही कर रहा था कि मानिनी उठी और प्रासाद के भीतर चली गयी।

× × ×

ऐन्टोनियस ने दूत से फिर पूछा—निकेतो, क्या यही शब्द हैं उसके?

"यही, जेनरल, अक्षरशः।"

ऐन्टोनियस हँस पड़ा। उसने फिर पूछा—निकेतो, क्या सचमुच वह बड़ी सुन्दरी है?

निकेतो ऐन्टोनियस के विलास में सहायक मित्र था। गम्भीर मुद्रा बनाए वह बोला—ऐन्टोनियस, ग्रीस, क्रीट और साइप्रस पार्थिया और आरमेनिया, ईजिया और आयोनिया, सिसिली और इटली, गाल और ट्यूतनी में हमने ऐसा मोहक रूप न देखा।

ऐन्टोनियस विस्मित था। "क्या ब्रिटेन में भी नहीं?" उसने पूछा।

"ब्रिटेन में भी नहीं।" निकेतो बोला।

"फुल्विया और आक्टेविया के रूप तुम्हें याद हैं निकेतो?"

---

* ग्रीक-रोमनों की विलास की देवी † मिस्रियों की वेनस

"फुल्विया और आक्टेविया से कहीं सुन्दरी तो क्लियोपेट्रा की चेरियाँ क्रीटा और एपिफैनिया हैं, ऐन्टोनियस, क्षमा करना।"

फुल्विया और आक्टेविया एन्टोनियस की पत्नियाँ थीं, रूप और गुणों में रोम में अप्रतिम।

ऐन्टोनियस उछलकर निकेतो के पास जा पहुँचा। उसके कन्धों को जोर से हिलाते हुए उसने कहा—सुना है वाक्चातुरी से उसने सीजर को जीत लिया था।

"ऐन्टोनियस, उसके गुणों की शक्ति उसके रूप से कहीं बढ़-कर है। सात-सात राष्ट्र प्रतिनिधियों से उनकी भाषा में एक साथ अद्भुत क्षमता से बात करते उसे मैंने स्वयं सुना। डिमास्थेनीज * और सिसेरो† उसके सामने नहीं टिक सकते। उसके स्वर में झंकार है, भाषा में जादू।

ऐन्टोनियस का विलासी मन निकेतो के एक-एक शब्द से उछल रहा था। वह निकेतो का कन्धा छोड़, मन ही मन प्रसन्न होता कौच की ओर बढ़ चला।

फिर लौटकर उसने पूछा—निकेतो, क्या यह सच है कि वह आइसिस की भाँति प्रसाधन करती है?

"सदा।" निकेतो ने उत्तर दिया।

"तब मैं ओसिरिस‡ बनूँगा"—ऐन्टोनियस ने संकल्प किया।

[२]

"क्रीटा, मंडन कर।"

क्रीटा उठी। एपिफैनिया ने अपनी तंत्री नीचे रख दी।

---

* एथेंस का प्रख्यात वक्ता † रोम का अप्रतिम वाचाल

‡ देवी आइसिस का भाई और पति

सदा की भाँति क्रीटा आइसिस के अनुकूल वस्त्राभूषण लेकर चली।

क्लियोपेट्रा ने उसे रोका। वह बोली—क्रीटा, आज आइसिस के मंडन-संभार रहने दे। इजिप्ट मैं जीत चुकी, अब मुझ रोम जीतना है। मेरा प्रसाधन आज वेनस के अनुरूप कर।

क्रीटा मुसकराई, एपिफैनिया ने होंठ काटा।

"हाँ, वेनस के अनुरूप।" क्लियोपेट्रा बोली—"जानती हो एपिफैनिया, वेनस सौन्दर्य की देवी है, प्रेम की जननी, हास्य की रानी, विलासों की स्वामिनी, वारांगनाओं की संरक्षिका।"

"जानती हूँ रानी"—एपिफैनिया बोली।

"पर क्या वल्कन * को छोड़ दोगी ?" क्रीटा ने पूछा।

"अभागा वल्कन तो कब का छूट चुका"—एपिफैनिया ने उत्तर में कहा।

क्लियोपेट्रा जोर से हँस पड़ी। क्रीटा और एपिफैनिया भी हँस पड़ी।

"हाँ, हाँ," क्लियोपेट्रा फिर बोली—"वल्कन के पर्यंक पर अब अन्य देवता क्रीड़ा करेंगे—मार्स, मर्करी, बेकस, नेप्चून, एडोनिस†— सभी।"

आज क्लियोपेट्रा बड़े उत्साह में थी। विश्वविख्यात सैनिक ऐन्टोनियस उसकी प्रतीक्षा कर रहा था—उसका मस्तक गर्व से और ऊँचा उठ गया। उससे दो शब्द कहने के लिए उसके होंठ फड़कने लगे। उसके उत्साह की छाया उसकी सखियों पर भी पड़ी और फिर प्रासाद के बाहर नागरिकों पर। सबने जाना,

---

* वेनस का विवाह-पति † वेनस के उपपति और ग्रीक देवता

क्लियोपेट्रा ऐन्टोनियस के पास टारसस जा रही है। लोगों की जान में जान आयी। आक्रमण की आशंका मिटी।

× × ×

सिडनस नदी के दोनों किनारों पर बड़ा समारोह था। सुन्दर तुरगों पर सजे विलासी नागरिक बढ़े चले जा रहे थे। अरब के सुवासित द्रव्यों से लदा वायु आकाश में भरने लगा। विविध वाद्यों से दिगन्त व्याप्त हो उठा। नदी के बीच स्रोत पर क्लियोपेट्रा का हाथीदाँत और चन्दन का बना हंस के आकार का बजरा थिरकता हुआ तैर चला। उसके पिछले पंख और पुच्छ ऊपर उठे अनेक रत्नों की आभा जल में डाल रहे थे। सामने चोंच और मुखभाग स्फटिक और सुवर्ण से आवेष्टित थे। नेत्रों में नीलम स्फटिकभूमि में फैले थे और उनके बीच पुतलियों की जगह दो विशाल हीरे जगमगा रहे थे। पीले किनारोंवाली नीली अनेकों पालें हवा में फैली हुई थीं और संगीत से स्वर मिलाते हुए रजत के डाँड़ जल में छप-छप कर रहे थे। क्लियोपेट्रा रत्नजटित सुवर्ण-खचित ऊनी सोफे के सहारे विशाल कनक-छत्र के नीचे स्फटिक रथ पर बैठी थी। रथ में कपोतियाँ जुती हुई-सी उत्कीर्ण थीं। क्लियोपेट्रा की मूर्ति पूर्णतया वेनस की-सी प्रतीत होती थी—पैरों में मोतियों की लड़ियों से आभूषित सैन्डल पड़े थे, निचले वस्त्र की स्वर्णरेखाओं से निकल-निकलकर लाल-हरे रत्नों की झालरें लटक रही थीं। ऊपरी फ्राक और अधोवस्त्र की सन्धि पर कटि में वह अद्भुत ज्योतिवाला सेस्टस (बेल्ट) विराज रहा था, जिसकी चोट से देवता व्याकुल हो उठते थे। दोनों हाथों में उसने सेब और गुलाब धारण किये थे। मोतियों की लड़ियों से केशपुंज आच्छादित था और प्रशस्त ललाट की ऊपरी सीमा पर हीरों से जगमगाता टायरा धरा था।

युवा क्यूपिड दोनों ओर खड़े शुतुर के पत्तों से बने पंखे झल रहे थे। क्रीटा और एपिफैनिया नीले वस्त्रों से सजी उसके दोनों ओर चरणों में झुकी थीं। अनेकों रूपगर्विता दासियाँ नीरिड* और ग्रेसों* के वेश में पतवार और पाल की रस्सियों के पास बैठी थीं। सुवासित द्रव्यों से प्रादुर्भूत धूम्र वायुमंडल को भर रहा था।

वेनस ने यह एडोनिस के प्रति ओलिम्पस से अभिसार किया था। चारों ओर से जनसमुदाय यह आश्चर्य देखने उमड़ पड़ा। अगोरा से भी जनता कढ़ी। रोमन लीजियनों † के बड़े-बड़े जेनरल ऐन्टोनियस के पास से उठकर तट की ओर दौड़े। ऐन्टोनियस अकेला रह गया।

जेनरल ने क्लियोपेट्रा को भोजन के लिए निमंत्रित किया। वह मुसकराई—कहाँ तो वह विचारार्थ बुलाई गयी थी, कहाँ यह भोजन का आमन्त्रण! और वेनस को उसके ही साम्राज्य में अपना अतिथि कोई कैसे बना सकता था?

हँसकर उसने कहा—ऐन्टोनियस क्लियोपेट्रा का अतिथि है, क्लियोपेट्रा ऐन्टोनियस का नहीं। बेकस को वेनस के पास आना होगा।

कामार्त सैनिक भिद गया। खेमे से निकलकर जिस समय वह तट की ओर चला उसके पास एक भी सैनिक न था। उसके सारे ऐश्वर्य क्लियोपेट्रा के हो गए थे—उसके साथी, सैनिक, सभासद, जेनरल—सभी।

उसके सामने पहुँच एन्टोनियस का मस्तक अपने आप झुक गया। अलेग्जैन्ड्रिया के नागरिकों ने अपनी रानी का जयघोष

---

* वेनस की परिचारिकाएँ † सेनाएँ

किया। ऐन्टोनियस उसका वैभव देखता रह गया। ऐसा सौन्दर्य उसने कहीं न देखा था। क्लियोपेट्रा के पार्थिव मंडन उसके अपार्थिव सौन्दर्य से होड़ करकर हार रहे थे। उसका रत्न-वैभव ऐन्टोनियस और रोम के अन्य श्रीमानों को चकित कर रहा था।

ऐन्टोनियस के आते ही पतवार और मस्तूल की रस्सियों के पास बैठी नीली पीली ग्रेसें तितलियों की भाँति पंख फैला खड़ी हो गयीं, क्यूपिड हँस पड़े; क्रीटा और एपिफैनिया चैपलेट (मस्तक की माला) लेकर और झुकीं। वेनस की उज्ज्वल दन्तपंक्ति खुल गयी। उसने अपनी दोनों भुजाएँ बेकस की ओर बढ़ा दीं। ऐन्टोनियस अब भी खड़ा था—मूक, स्तब्ध।

वेनस बोली—बेकस, आओ। ओलिम्पस के गिरिशिखर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

हँसता ऐन्टोनियस मन्त्रमुग्ध-सा खिंच कर बजरे पर जा पहुँचा। वेनस के पार्श्व में वह बैठ गया। उसका उसे बुला भेजना बर्बरता-सी जान पड़ी। क्लियोपेट्रा की समृद्धि के सम्मुख उसका वैभव कितना नगण्य था, कितना तुच्छ!

दोनों तटों पर शत्रु-मित्र भरे थे। उनके बीच से वेनस बेकस को उड़ा ले चली। सिडनस का हंस लौट पड़ा। रोमन साम्राज्य का इम्परेटर*, रोम का असाधारण सैनिक ऐन्टोनियस आज क्लियोपेट्रा का विजित बन्दी था। जिन करों ने साम्राज्य के अप्रतिम वक्ता सिसेरो का मस्तक काटकर उसके प्यारे सिनेटरों के बीच फोरम में टाँग दिया था वे आज बँधे थे, नि:शक्त।

पश्चिमी क्षितिज की रक्तता जब कुछ धुँधली होने लगी क्लियोपेट्रा के बजरे का प्रकाश सहसा जल उठा। उसका कोना-कोना लाल, पीली, हरी, रोशनी से जगमगा उठा। उनकी चमक

*शासक।

रत्नों की चमक में मिल आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करने लगी। प्रकाशों की विविध छटा थी—वृत्ताकार, त्रिभुजाकार, अर्धचन्द्राकार! ऐन्टोनियस चकित रह गया।

फुल्विया उसकी ओर से रोम में आक्टेविस से युद्ध कर रही थी, पार्थियन सेनाएँ उसकी सीरिया में प्रवेश कर रही थीं और स्वयं ऐन्टोनियस विलास की खोज में अलेग्जैन्ड्रिया की ओर उड़ा जा रहा था!

× × ×

ग्रीक विलासी देवताओं की कथाएँ कहानियाँ मात्र रह गयीं। ऐन्टोनियस की मानुषिक तृष्णाएँ उनसे कहीं अधिक था और क्लियोपेट्रा के साधन वेनस के साधनों से कहीं बढ़कर थे। अलेक्जैड्रिया के प्रासाद संगीत वास से गूँज उठे और सारी तंत्रियों से कहीं अधिक कम्पन क्लियोपेट्रा की अपनी वाणी में था।

क्लियोपेट्रा को उपयुक्त विलासी मिला था और ऐन्टोनियस को उपयुक्त विलासिनी। दोनों ने एक दूसरे को पहिचाना। विलास का रंग जम गया। रोम और पार्थिया धीरे-धीरे ऐन्टोनियस के स्मृतिपटल से मिट गए और क्लियोपेट्रा ने भी मिस्र को भुला दिया।

क्लियोपेट्रा ने विधान किया—'प्रेम और विलास की देवी के सम्मुख अब अजों की वलि न होगी, उसके मन्दिर के प्राचीरों में अब मानव जोड़े केलि करेंगे।' इस प्रकार न केवल अलेग्जैन्ड्रिया के ऋद्ध प्रासादों में, वरन् वेनस के मन्दिर में भी विलास के साधन जुटे, कामनाओं की तृप्ति जगी। रानी ने आदेश दिया—कोई किसी के काम-प्रस्ताव न ठुकराए। वेनस के साम्राज्य में प्रेमियों की वासनाएँ जाग-जाग तृप्त होती हैं, उसकी प्रजा इनकार नहीं करती।

फिर तो अलेग्जैन्ड्रिया में घर-घर बेकस के समारोह सजने लगे ; गली-गली में क्यूपिड दौड़ने लगे। सिडनस की अप्रतिम सुन्दर, नग्न, अचेतन मूर्ति को एक भावुक नवयुवक ने अपने राग से रँग दिया।

[४]

सीजर ने मिस्र पर आक्रमण की तैयारियाँ कीं। सनिक को कुछ चोट लगी। अलेग्जेन्ड्रिया से वह निकल पड़ा। ऐक्टियम के पास समुद्र में, तट पर आक्टेवियस की सेनाएँ अपने स्कन्धावार खड़े करने लगीं। ऐन्टोनियस के जहाज भी भूमध्य-सागर की लहरों पर चढ़-चढ़ इतराने लगे। क्लियोपेट्रा के भी जहाज अपने वैभव से शत्रु को आक्रान्त करने लगे।

ऐन्टोनियस ने कहा—रानी वेनस विलासांगण की सेनानेत्री है। तुम जाओ, मैं जब साम्राज्य की सारी समृद्धि तुम्हारे चरणों में ला धरूँगा, तब मिलना।

क्लियोपेट्रा अड़ गई। पुरुषों का विधान उसने कभी नहीं सहा था। वह अपनी इच्छाओं के अनुसार चलती थी।

"रानी बेकस के समकक्ष विलास में वेनस है परन्तु रण में वही ऐन्टोनियस के पार्श्व में क्लियोपेट्रा है।" उसने कहा।

× × ×

घमासान छिड़ गया। जहाज से जहाज भिड़ गए। एकाएक क्लियोपेट्रा को त्रास ने धर दबाया। 'यदि कहीं ऐन्टोनियस इस युद्ध में विजयी न हुआ ?' उसने अपने आपसे पूछा और उसके चमकते साठों पोत अपनी पालें चढ़ा अलेग्जेन्ड्रिया की ओर भागे। उनकी रक्षा के लिए ऐन्टोनियस ने उन्हें बीच में रखा था। उनके हट जाने से उसके पोतों की शृंखला टूट गई।

क्षणभर ऐन्टोनियस ने विचारा—क्लियोपेट्रा गई, वह अद्भुत विलासिनी, अद्वितीय सुन्दरी, वह अनुपम वेनस।

ऐन्टोनियस की वासना एकाएक जग उठी। उसने अपने पोत का मुख अलेग्जैन्ड्रिया की ओर घुमाने की आज्ञा दी। सीजर की सेनाएँ दंग थीं। संसार ने युद्ध में ऐन्टोनियस की पीठ न देखी थी। रोम के नागरिकों ने पहले इस संवाद पर विश्वास न किया।

[५]

अलेग्जैन्ड्रिया के भवनों में विषाद छा गया था। वेनस और बेकस के वे कृत्रिम कलेवर उतर गए। ऐन्टोनियस की सैनिकता में धब्बा लग गया था। उसने अपनी तलवार घुटने पर तोड़ दी।

क्लियोपेट्रा ने विषाद को विलास में डुबोना चाहा। फिर एक बार वह वेनस बनी। उसने ऐन्टोनियस को बेकस बनाया, उसकी दासियाँ ग्रेसें बनीं, दास क्यूपिड। मदिरा की धारा बह चली। परन्तु रह-रहकर बेकस कराह उठता और उसकी प्रतिध्वनि वेनस के कलेजे के आरपार हो जाती। और जब बेकस और वेनस सहसा केलि के बीच चुप हो उठते, क्यूपिडों और ग्रेसों के कथोपकथन गूँज-गूँज एक दूसरे का उपहास करते।

× × ×

क्लियोपेट्रा ने अपने को उपेक्षित जाना। वह रो उठी।

धीरे-धीरे एक अजीब धारणा उसके भीतर बल पकड़ने लगी। उसने सोचा, क्या कोई साधन है जिससे वह ऐन्टोनियस के प्रेम को नाप सके।

ऐन्टोनियस अपने कमरे में प्यालों की दौर से अपनी पराजय की स्मृति भुलाने का प्रयत्न कर रहा था।

क्रीटा घुटने टेक बोली—ऐन्टोनियस !

ऐन्टोनियस ने द्वार की ओर देखा।

"अलेग्जैन्ड्रिया के प्रासादों में आग लग गई है, ऐन्टोनियस ! तुम यहाँ बैठे हो ?" क्रीटा बोली।

उसने नहीं समझा। एक प्याला और भर कर वह बोला—"लपटें तो नहीं दीखतीं, क्रीटा।"

"सारा जलकर राख हो गया। लपटें कैसे दीखें ?" क्रीटा उसी भाषा में बोली।

"और वेनस !" वेनस के नाम से अब उसे कुछ चिढ़-सी हो गई थी। उसने कुछ व्यंगपूर्वक पूछा।

"वेनस ?" विक्षिप्त क्रीटा ने कहा—"वेनस भी उसी में भस्म हो गई।" वह अट्टहास कर उठी।

"क्या कहा ?" ऐन्टोनियस ने मदिरा की प्याली फेंक दी। वह उठ खड़ा हुआ।

"क्लियोपेट्रा ने आत्मघात कर लिया।" क्रीटा फिर बोली।

ऐन्टोनियस ने दोनों हाथों से अपने बालों को पकड़ लिया। वह धीरे-धीरे पर्यंक पर बैठ गया। सैनिक ने अपना सब कुछ खोकर क्लियोपेट्रा को पाया था। इससे वह उसके शौर्य से भी अधिक प्रिय हो गई थी। उसका सहारा टूट गया।

"ऐन्टोनियस, अब तू क्यों देर कर रहा है ? तेरे जीवन का एकमात्र अवलंब तो चल बसा।" वह अपने आपसे बोला।

"क्लियोपेट्रा, मुझे इसका इतना दुख नहीं कि तुम मेरे पास न रही, क्योंकि मैं शीघ्र तुमसे मिलूँगा। दुःख इस बात का है कि रोम का इम्परेटर होता हुआ भी मुझमें एक स्त्री के बराबर भी साहस न रहा।" वह फिर बोला।

"एरास !" भरी आवाज में उसने अपने स्वतंत्र किए दास को पुकारा। एरास ने प्रवेश कर मस्तक झुका लिया।

"एरास, तुम्हें अपनी प्रतिज्ञा याद है ?"

"एरास अपनी प्रतिज्ञा कभी नहीं भूलता, स्वामिन् ।"

एरास को जब ऐन्टोनियस ने दासत्व से मुक्त किया था, उस से प्रतिज्ञा करायी थी कि जब वह आदेश करेगा, एरास उसे शरीर से मुक्त कर देगा।

"आज उसे पूरी कर, एरास।"

"अच्छा, स्वामी।" उसने अपनी कटार निकाल ली।

"परन्तु एक बात, स्वामिन् !"

"बोल, एरास, मरते हुए अपमानित सैनिक के पास तो कुछ धरा नहीं, परन्तु यदि इजिप्ट का राज्य तुझे हेय न हो तो उसे दूँ।"

"बस एक भिक्षा, स्वामिन्—वीर, उदार स्वामी पर सम्मुख प्रहार की क्षमता एरास में नहीं, जरा अपना वह देवदुर्लभ मस्तक उधर फेर लें।"

ऐन्टोनियस ने अपना बिखरे बालोंवाला मस्तक फिरा लिया।

कटार की आवाज हुई—खप्प ! परन्तु चोट ऐन्टोनियस पर न पड़ी। वह विस्मित हो फिरा। उसके चरणों में उसका पुराना किंकर दम तोड़ रहा था।

"शाबाश, एरास ! यद्यपि तुम अपनी प्रतिज्ञा पूरी न कर सके, तुमने मुझे वह सुझा दिया जो करना है।"

एरास की कटार एकाएक उसने उठा ली और पलक मारते वह खून-भरी जिह्वा ऐन्टोनियस के वक्ष में घुस गयी।

[६]

क्लियोपेट्रा मकबरे में जा घुसी थी। आक्टेवियस सीजर

के हरकारे पर हरकारे आ रहे थे। स्वयं सीजर आया। पर वह न निकली।

मनस्विनी ने कहा—सीजर से कह दो, वह उसे विजय की अन्य वस्तुओं के साथ रोम नहीं ले जा सकेगा। इजिप्ट की थोड़ी-सी भूमि और ऐन्टोनियस का शव उसके लिए संसार की सारी विभूतियों से बढ़ कर हैं।

फिर उसने ऐन्टोनियस को दफनाने की सीजर से अनुमति माँगी। सीजर उसके विषाद से झुक गया। उसने अनुमति दे दी। ऐन्टोनियस का शव लिए वह बाहर निकली। जिन्होंने प्रिय की मृत्यु पर उसका रूप देखा था, वे चकित रह गये। क्लियोपेट्रा का वेश आज विषाद का न था। उसका शृंगार विलास का था।

रोमन सैनिक दूर वृत्ताकार खड़े थे। सीजर भी अपने जनरलों के साथ दूर खड़ा इस अद्भुत स्त्री का उपक्रम देख रहा था। हाल के लाये फूलों की टोकरी से निकालकर कुछ फूल उसने ऐन्टोनियस के शव पर डाले। फिर वह उन फूलों को धीरे-धीरे उटकारने लगी। क्रीटा ने उसका आदेश पालन किया था।

प्यार से उसने उस हरे दो मुँहे नाग को पकड़ा। नाग ने उसकी भुजा कस ली और उसे चूमा जिसे चूमने की लौ लगाये कितने ही सम्राट् मिट चुके थे। फिर क्लियोपेट्रा ने उसे अपने हृदय से लगा लिया। जब उसका शरीर शिथिल हो धीरे-धीरे गिरने लगा, रोमन सैनिक दौड़े। क्रीटा और एपिफैनिया स्वामिनी के चरणों में लोट चुकी थीं।

सीजर ने पास पहुँच कर देखा—क्लियोपेट्रा ऐन्टोनियस के काफिन पर पड़ी थी और उसके खुले वक्ष पर वह विलक्षण जन्तु उलट रहा था!

इन्साफ

[१]

उस्मान बेग के रिसालों ने जब स्पेन पर कब्जा कर लिया, वहाँ के बसनेवाले ईसाइयों में कुहराम मच गया। उनकी जान के लाले पड़ गये। पूरब, दक्खिन और पच्छिम में अथाह समुन्दर लहरें मारता था। पूरब की ओर फ्रांस के दक्खिनी नाके पर खूँखार गयास भगोड़ों की इन्तजार में राह रोके पड़ा था। उसके फौजी जनीसरी अपनी दमिश्की शमशीरों की धार आदमियों की गरदनों पर आजमाते और जब किसी अभागे का धड़ नाच-नाचकर गिरता ऊँचे तुर्क तालियाँ बजा-बजा मूँछों पर हाथ फेरते। कहीं निकल भागने की राह न थी। ईसाइयों ने अपनी गर्दनें तुर्कों की भेंट कर दीं।

माद्रिद के बाहरी मैदान लाशों से पट गये। ईसाई अपने देश के लिए जान हथेली पर ले-लेकर लड़े, परन्तु उनसे ड्योढ़े ऊँचे तुर्कों की दोधारें उनकी छोटी तलवारों से कहीं गहरी चोट करती। ईसाई शहर की गलियों में भागे। चारों ओर से उस्मान की फौजों ने शहर में प्रवेश किया। गलियाँ लाशों से पट गयीं। नगर ने आत्म-समर्पण कर दिया। उस्मान के सिपाहियों

ने अब तक रुकावट नहीं जानी थी। सिकन्दर की मकदूनिया और कैसर का रोम उस्मान को खिराज भेजते थे। स्पेन की यह जुर्रत ! उस्मान ने कत्ले आम बोल दिया। तीन दिन, तीन रातें आँखें फाड़-फाड़ देखती रहीं—इन्सान के लोहे के नीचे इन्सान तड़पता था। माद्रिद की गलियाँ खून के पनाले बन गयीं।

खलीफा ने उस्मान को लिखा—बन्द करो खून-खराबा, अब काफिर सिर न उठायेंगे। किताबिए बुतपरस्तों को काफी सजा मिल चुकी। रसूल और नबी के नाम पर उन्हें पनाह बख्शो। गिरजों को जरदोज कर मस्जिदें बनवाओ, दरगाहें खड़ी करो। काफिरों को दीने इस्लाम में दाखिल करो। जिन्हें इन्कार हो, उन्हें गुलाम बना लो।

खून-खराबा बन्द हो गया। रसूल और नबी के नाम पर ईसाइयों को पनाह बख्शी गयी। गिरजे जरदोज हुए, मस्जिद बनीं, दरगाहें खड़ी हुईं। लाखों काफिर दीने इस्लाम में दाखिल हुए। जो बच रहे, गुलाम बने। माद्रिद के ईसाई परिवारों की सुन्दरियाँ उस्मान और उसके सेनापतियों के हरम में दाखिल हुईं।

जोम में भरा तुर्क पग्गड़ के ऊपर कुलह निकाले, सीना ताने, कमर से तलवार लटकाये, मद में झूमता जब अकेला गुलामों के कूचों से निकल जाता, ईसाइयों के दल सहम कर सिर झुका लेते। तुर्क खेलवश जरा अपनी तलवार खनका देता, ईसाई दीवालों में दुबक जाते, सारों में छिपने की जगह ढूँढ़ते।

[२]

सदियाँ बीतीं, जमाना बदला, मजहब तक बदल गये। मगर स्पेन पर खलीफा की शान बरकरार रही। तुर्कों की तल-

वारें कुछ नरम पड़ीं, पर उनके जुल्म की याद बनी रही। अब उनकी जगह मुल्लों की जबान चलती थी। उसकी धार तलवार की धार से ज्यादा पैनी थी। उसके पीछे सूबेदार की तलवार पैंतरे करती।

× × ×

मुल्ला अबू दरदा कभी खाँड़े और दोधारे फिरा चुका था। जईफी में अब उसकी जबान फिरती थी। उसके दासों की संख्या शहर में सबसे अधिक थी, सैकड़ों में। ये दास उसके घोड़ों की निगरानी करते, मवेशियों की देखभाल करते, बगीचों को सँवारते, बेलों को दीवारों पर चढ़ाते, दाखों की कतार बाँधते। इन दासों का सरदार था पैट्रिक—पैट्रिक डा सालामानका—कभी का डान पैट्रिक डा सालामानका।

पैट्रिक के पूर्वज सालामानका के आस-पास की सारी भूमि के स्वामी थे, ईसाई-परिवारों के प्रमुख नेता। परन्तु, जब अलवासेती और अलहमरा, बार्सिलोना और बर्गो, ग्रानाडा और गेरूना, माद्रिद और मलागा, सालामानका और सेविल्ला, बारी-बारी तुर्कों के सामने झुक गये, पैट्रिक के पूर्वज पीटर ने भी अपनी तलवार रख दी। विजेताओं ने सारे परिवार को कत्ल कर डाला। स्त्रियों को काम के साधन बनाये और पीटर के महलों में आग लगा दी। पीटर के दो वर्ष के पोते को एक विधवा ने पाला। पैट्रिक उसी शिशु का वंशज था।

पैट्रिक के परिवार का परिचय सारे दास-समुदाय को था। उसकी सर्वत्र इज्जत होती। उसके मालिक भी उसका कुछ खयाल करते। उसके संभ्रांत कुलागम के अतिरिक्त उसमें आदर्श गुणों की भी कमी न थी। गुलाम होता हुआ भी वह गुणी था, गुणों का आदर करता था। उसका स्वभाव बड़ा सरल था—

बालक-सा। परन्तु, अपने धर्म का वह अनन्य सेवक था। उसके इस चरित्र से उसका स्वामी अबू दरदा भी परिचित था। और, इसी कारण वह उससे घृणा करता। उसको दीने इस्लाम में दाखिल करने के अर्थ उसने बड़े प्रयत्न किये थे। बड़े-बड़े लालच दिये, खिलअत और जागीरें चमकायीं, परन्तु पैट्रिक पूर्ववत् अपने धर्म का पुजारी बना रहा। गुस्से में कितनी ही बार अबू दरदा ने उसकी धर्ममूर्त्तियाँ तोड़ दीं, मरियम और ईसा की तस्वीरें पैरों से कुचल डालीं, कंडीलें फेंक दीं। आँखों में आँसू भरे पैट्रिक देखता रहा और जब चिढ़कर उसके स्वामी ने उसे लात मारी, उसने उसकी चोट हँसते-हँसते ली। उसके जूते उसने झाड़-पोंछकर फिर पहना दिये।

× × ×

एक आँधी और चली। अबू तालिब मिस्र होता हुआ स्पेन पहुँचा। उसने तबलीग का काम अपने हाथों लिया था। क्या वजह कि ईसाइ पूरी तौर से इस्लाम में वसूलों को अख्तियार नहीं करते? कोई जरूरत नहीं, उनके ईसाई बने रहने की। सारा खलक खुदा का बन्दा बने और नबी के पैगाम पर ईमान लाये। मिस्र मुसलमान हो गया, लिब्या और मोरक्को में ईसाइयों की संख्या नहीं के बराबर हो गयी।

अबू तालिब स्पेन के तट-प्रदेश पर उतरा। स्पेन काँप उठा। स्पेन छोड़-छोड़ ईसाई भाग चले। अधिकतर मुसलमान हो गये। जो बचे या तो अपाहिज थे या बूढ़े। पैट्रिक भी इन्हीं में था। उसने न तो देश छोड़ा न मजहब। उसके बेटों ने भी प्राण रहते पिता को छोड़ना मुनासिब न समझा। परन्तु जब उसकी बेटी मेरी को अबू दरदा के बेटे घूरने लगे, वह कैडिज के एक ईसाई-परिवार में शादी कर, उससे जा मिली।

अबू तालिब अबू दरदा के प्रासाद में ठहरा। सारा माद्रिद उनके दर्शनों का अभिलाषी था ; पर ईसाई उनसे पनाह माँगते। किन्तु अबू तालिब के पास न क्षमा थी, न पनाह। उसने जब शाम को खाने के समय लम्बी श्वेत दाढ़ी से विभूषित पैट्रिक का शुभ्र मुख देखा, वह प्रसन्न हो उठा। उसने न जाना कि पैट्रिक ईसाई है। पैट्रिक के गांभीर्य ने उसे और भी आकर्षित किया।

दूसरे दिन कुछ अभागे ईसाई अबू दरदा के घर जबर्दस्ती मुसलमान बनाये जाने लगे। जब उन्होंने इन्कार किया, उनपर कोड़े बरसने लगे। एक मुसलमान थका, दूसरा आया, दूसरा थका, तीसरा आया। पैट्रिक की आँखें बरस पड़ीं। वह पीछे आड़ में हट गया।

परन्तु, अबू तालिब ने उसे देख लिया था।

उसने उसे पुकारकर कहा—ईमानदार इन्सान, तू क्यों नहीं इस दरियाए सवाब में गोते लगाकर खुदा के प्यारे बन्दों में नाम लिखाता ? चल, लगा तू भी दो-चार हाथ।

पैट्रिक चुप था।

अबू तालिब बोला—बुजुर्ग, अबू तालिब तुमसे कुछ कम बूढ़ा नहीं, पर दीन के जौहर उसकी रगों में इस उमर में भी खून की तेज रवानगी पैदा कर देते हैं।

उसने कोड़ा जल्लाद के हाथ से झटककर छीन लिया और लगा एक ईसाई बच्चे पर उसे बरसाने। बच्चा चीख उठा, उसकी माँ बेहोश होकर गिर पड़ी।

बच्चे का बाप लड़खड़ाता हुआ बोला—मिहरबान पैट्रिक, क्या तू भी इनसे मिला है ? खुदा के पवित्र बेटे के लिए कहीं तू भी अपने हाथ कलंकित न कर लेना।

अबू तालिब तमक उठा—ऐं, यह क्या मुसलमान नहीं ?

"दरदा, तू काफिरों को पनाह देता है। यह कुफ्र है, तू खुद काफिर है।" वह घूमकर अबू दरदा से बोला।

अबू दरदा एक ओर खड़ा काँप रहा था।

वह बोला—जनाब, जरूर फिद्‌वी कुफ्र का गुनहगार है। पर उसका कुसूर मुआफ फरमाया जाय। वह दीन के लिए हर खिदमत पर आमादा है।

"कहाँ है कुनबा इस दोजखी कुत्ते का?" अबू तालिब ने पूछा।

अबू दरदा ने इशारा किया। उसके बेटे ने पैट्रिक के दोनों बेटों—जान और टामस को ला हाजिर किया।

अबू तालिब ने कोड़ा फटकारते हुए पूछा—दीन कबूल करते हो?

"नहीं" दृढ़ शब्दों में दोनों ने उत्तर दिया।

कोड़े बरसने लगे। इस सवाब के काम में अबू दरदा और उसके बेटे ने पूरा हाथ बटाया। पैट्रिक दम साधे खड़ा था।

"एक तरफ तलवार है, दूसरी ओर ईसाइया मजहब। बोलो, क्या कहते हो?" अबू तालिब ने पूछा।

"तलवार हिरोद की है, प्यार और क्षमा खुदा के प्यारे बेटे के हैं।" उत्तर मिला।

"बदनसीब, सोच ले।"

"मरियम का बेटा नये बिहिश्त का द्वार खोले मुझे बुला रहा है।"

"बोल—अल्लाह की शान!"

"पवित्र आत्मा के बेटे, इन गुमराह गरीबों को क्षमा कर। इनपर अपनी छाया डाल।"

अबू तालिब ने कहा—इसकी खाल उतार लो।

छूरियाँ चलने लगीं। जॉन कमजोर था, दम निकल गया। पैट्रिक के आँसू सूख गये। उसने रक्त का घूँट पी लिया।

अब टामस की बारी आयी। उसने उफ् न किया। उसके घावों पर नमक छिड़का गया, कोड़े लगे; पर वह चुप निर्जीव-सा पड़ा रहा।

"कहाँ है, इनका बाप?"

आँखें पैट्रिक की ओर लगीं। पैट्रिक वहाँ न था। सारा घर ढूँढ़ डाला गया। उसका कहीं पता न चला। उसे ढूँढ़ने हरकारे दौड़े; परन्तु वह कहीं न मिला। पैट्रिक के इस अस्वाभाविक लोप पर अबू दरदा को भी अचरज हुआ।

"इस कुत्ते को दोजख भेजो।" अबू तालिब टामस की ओर उँगली उठाकर तड़प उठा।

[३]

स्पेन के कैटेलोनिया नामक सूबे में आग लगी, जो सारे स्पेन में फैल चली। ईसाइयों ने बेहद बर्दाश्त किया; परन्तु तुर्कों का जुल्म अबू तालिब की सख्तियों से चरम सीमा को पहुँच गया। दु:ख के घने हो जाने से पीड़ा भी कठोर हो चली। ईसाई नवयुवकों में त्याग और बलिदान की भावना जगी। अपने सिर हथेली पर लेकर वे शासकों का सामना करने निकल पड़े।

फर्डिनेन्ड ने कैटेलोनिया में बगावत का झंडा उठाया। उसके झंडे के नीचे स्पेन के कोने-कोने से नवयुवक, बालक, वृद्ध, स्त्रियाँ आ-आकर खड़ी होने लगीं। इटली और बाल्कन स्वतंत्र हो चुके थे। फ्रांस भी अपना दामन छुड़ा चुका था। इंगलैण्ड और जर्मनी अन्य राष्ट्रों की तुर्कों के विरोध में मदद कर रहे थे। स्पेन दूर यूरोप के कोने में पड़ा तड़प रहा था।

जब फर्डिनेन्ड ने स्वतंत्रता के नारे लगाये, स्पेन के ईसाइयों ने एक साथ अपनी आवाज बुलन्द की। इटली और फ्रांस, जर्मनी और बाल्कन से नवयुवक ईसाई धर्म के त्राण के अर्थ स्पेन में उमड़ने लगे। इंगलैंड और जर्मनी की सम्मिलित सेना अतलांतिक की राह पोर्तुगल में उतर गयी और दिन-रात धावे बोलती माद्रिद जा पहुँची।

पहिले तो मुसलमानों ने सामना किया। मोरक्को, लिब्या और मिस्र से कुछ मदद ली। परन्तु मिस्र दूर था। नये राष्ट्रों के उदय से लिब्या और मोरक्को सहमे हुए थे। जब इंगलैण्ड और जर्मनी की फौजों ने स्पेनियों के साथ मिलकर स्पेन में विजय पर विजय करनी शुरू की, लिब्या और मोरक्को ने एक-दम अपने हाथ रोक लिये।

एक-एक कर अलवासेती और अलहमरा, बार्सिलोना और बर्गो, ग्रानाडा और गेरूना, माद्रिद और मलागा, सालामानका और सेविल्ला, स्वतन्त्र हो गये। अपने खून के प्यासे शासकों को उन्होंने मार भगाया।

परन्तु, कुछ ही दिनों पहिले जो जुल्म मुसलमान ईसाइयों पर करते थे, वही अब ईसाई मुसलमानों पर करने लगे। दया को उन्होंने भुला दिया। मस्जिदें धड़ाधड़ गिरने लगीं, उनकी जगह ऊँचे विशाल गिरजे खड़े होने लगे। जब मरता हुआ मुसलमान पानी माँगता, ईसाई उसकी दाढ़ी पकड़ उसे घसीटता और इस प्रकार उसकी प्यास बढ़ा-बढ़ा उसे प्यासों मारता।

मुसलमानों के दल के दल भूख-प्यास से व्याकुल हो आत्म-समर्पण कर देते। अबू तालिब के कोड़े अभी ईसाइयों को भूले न थे। उन्होंने कोड़ों का उत्तर कोड़ों से दिया। बदला लेने में उन्होंने भी कोर-कसर न रखी। तलवार के जोर पर ईसा के

प्रेम-साम्राज्य में लोग दाखिल किए जाने लगे। ईसाइयों की तबीयत के सामने मुसलमान स्त्रियों की आकबत की कुछ कीमत न समझी गयी। पुराने सताये हुए लोगों ने अपने गुबार निकाल डाले। पिताओं ने अपने मरे बच्चों की हविश पकड़े गये मुसलमान-बच्चों को मारकर मिटायी।

अब तालिब भागा। माद्रिद की दरगाह से जो उसके पाँव उठे, तो सालामानका में ही जाकर टिके। उसने चोगा और अमामा फेंक दिये थे, दाढ़ी घुटा ली थी। आज वह 'खुदा के बन्दों' की हिफाजत में तकरीर न कर सकता था। जान के लाले पड़े थे। हजारों जानें उसके सामने तड़प-तड़पकर निकली थीं, परन्तु उनकी हिम्मत की याद से उसको साहस न मिला। दर-बदर वह भागता फिरा, टुकड़े-टुकड़े को तरसता, चिथड़े-चिथड़े को रोता।

× × ×

सालामानका में ईसाई-धर्म के विचारकों के खेमें खड़े थे। उस ओर के सारे सूबों का विचार-केन्द्र सालामानका था। पैट्रिक आज सालामानका का फिर विशिष्ट नागरिक था, उसका शासक। परन्तु उसके कुनबे में कोई न बचा था—उसकी एक विधवा लड़की मेरी भर शेष थी। पैट्रिक का नम्र स्वभाव इस तूफान में भी वैसा ही बना रहा। मार-काट से उसे नफरत थी। कितनी ही बार उसने रोम को लिखा—यह मार-काट खतम की जाय। खूँरेजी ईसाई-धर्म के वसूलों के खिलाफ है।

परन्तु, उसकी प्रार्थना न सुनी गयी। उल्टे पोप ने पूछा कि यह मुसलमानों के प्रति दया दिखानेवाला कौन है? कहीं वह भी धर्म का शत्रु न हो। पैट्रिक चुप हो रहा। जब उसके दुर्ग में अभागों के दल आते, वह आकर उनको देखता, चुपके आँसू

बहाता और उन्हें विचारकों के पास भेज देता। उसका कलेजा पत्थर का हो गया था। अपने कुनबे को मिटते हुए उसने अपनी आँखों देखा था, परन्तु बदला लेने का इरादा उसने एक बार भी न किया। दूसरे की दुनिया उजाड़कर अपने अरमान कभी उसने पूरे न किये। लोग उसकी शक्ति पर आश्चर्य करते।

× × ×

एक दिन प्रातःकाल ही हज़ारों कैदी सालामानका में जंजीरों से जकड़े हुए लाये गये। नियम के अनुसार पैट्रिक उन अभागों को देखने और उन्हें विचारार्थ भेजने चला।

जाड़ों का मौसिम था। कैदियों के तन पर नाममात्र के वस्त्र थे। स्पेन की सर्दी में वे अकड़े जा रहे थे। कितने ही पिछली रात की सर्दी में चल बसे थे। माँ बच्चे को अपने तन से ढके हुए थी; बाप बेटे को धीरज बँधाता था।

पैट्रिक ने एक ओर से अपना गश्त शुरू किया। ईसाई-धर्म में दीक्षित होने के लिए कितनों ही ने प्रार्थना की। परन्तु उन्हें ईसा के विस्तृत साम्राज्य में खड़े होने को स्थान न था। पैट्रिक को यह देखकर बड़ी ग्लानि होती। वह नित्य अपनी प्रार्थना में माँगता—पिता, इन अभागों को क्षमा दो; इन्हें अपनी शरण में ले लो। परन्तु किसी ने उसकी न सुनी—न बिहिश्त के पिता ईसा ने, न पृथ्वी के पिता पोप ने।

पैट्रिक ने रोते हुओं को पुचकारा, डरे हुओं पर प्रेम से हाथ फेरा। पर वह जानता था उसका हाथ अभय का नहीं है और उसकी सान्त्वना क्षणिक है। आज ही उन अभागों का अन्त होना है। अपनी असमर्थता पर वह स्वयं रो पड़ा।

एकाएक उसकी नजर पड़ी एक कातर व्यक्ति पर, जो कमर तक बिलकुल नंगा था और सर्दी के मारे अकड़ा जा रहा था।

एक अभागिनी के कम्बल में वह घुसा जाता था। कम्बल की मालकिन उसे ढकेलकर बोली—रास्ते भर तूने मुझे नरक में घसीटा दोजखी कुत्ते, एक घड़ी का मामला है, अब तो परवरदिगार को डर। कयामत के रोज क्या जवाब देगा ?

पैट्रिक की नजर जब उधर गयी, उसने उस व्यक्ति को पहिचाना। उसका विकृत रूप पैट्रिक को धोके में न डाल सका। उसके चेहरे में अत्यन्त अन्तर पड़ गया था। आँखें भीतर जा घुसी थीं, पसलियाँ बाहर निकल आयी थीं। दाढ़ी मुँडी हुई थी। सहसा पैट्रिक के मुख से निकल पड़ा—अबू तालिब !

इस सम्बोधन ने जादू का काम किया। वह घबरा उठा। उसके नाम ने प्रत्येक व्यक्ति को सजग कर दिया। उस नाम से ईसाई काँप जाते थे। दशाब्दियों तक उसने खून से स्पेन की जमीन रँग डाली थी। आज जो ईसाई मुसलमानों से बदला ले रहे थे, उनके बच्चों को जला रहे थे—इन सबका कारण भी तो उसी की नृशंसता थी। कैदियों में एक लहर-सी उठी।

उस स्त्री ने पूछा—क्या कहा, अबू तालिब ?

पैट्रिक चुप था। अपनी भूल पर वह आप पछता रहा था। भीड़ में खलबली-सी मच गई। लोग अबू तालिब की ओर बढ़ने लगे। कोई पूछता—क्या कहा ? अबू तालिब ? कोई कहता—'हमारे दु:खों का विधायक अबू तालिब ? चारों ओर अबू तालिब की धूम मच गई। मानो ईसाइयों से उनको कोई शिकायत न थी, उनका एकमात्र शत्रु अब तालिब था। प्रत्येक ने उसकी तकरीरें सुनी थीं, प्रत्येक ने उसे पहिचाना था। भीड़ उसकी ओर उमड़ चली। पैटि्क की ओर वह भागा परन्तु पास की स्त्री ने उसके पैर पकड़ लिए। पैटि्क ने बहुत अनुनय की, परन्तु भीड़ ने उसे न छोड़ा। हजारों की भीड़ के बीच अबू

तालिब कराह रहा था, चिल्ला रहा था—खुदा के नाम पर मुझे छोड़ दो। परन्तु उसकी आवाज का उत्तर ठोकरों से मिला। एकाएक, पैट्रिक ने देखा, अबू तालिब ऊपर उछला और भीड़ ने उसे ऊपर ही ऊपर लोक लिया। गालियों से कान बहरे हो रहे थे।

उसका शरीर फिर न दिखाई पड़ा। पैट्रिक ने उसपर झुके हुए दो व्यक्तियों को पहिचाना—वे थे अबू दरदा और उसका बेटा।

पैट्रिक ने अपने को सम्हाला। उनकी शोचनीय दशा पर उसे दया आयी, परन्तु उसने अपनी जबान पर काबू रखा। धीरे-धीरे उसने कैदियों को विचार के लिये भेजकर घर की राह ली।

रात हुई। बचे कैदी सर्दी से तड़पने लगे। इसी समय एक सिपाही ने प्रवेश किया।

उसने अबू दरदा से कहा—अपने परिवार के साथ चलो।

कैदियों ने समझा उनका विचार रात्रि में होगा। गिरते-काँपते अबू दरदा, उसका बेटा, बेटे की बहू और उसकी बेटी सैनिक के पीछे-पीछे चलीं। मैदान से निकल, पेचदार गलियों से होते हुए एक विशाल भवन के पृष्ठ भाग में वे घुसे। उन्होंने सामने बरामदे में पैट्रिक और उसकी लड़की को बैठे पाया।

अबू दरदा हिम्मत हार गया।

उसने मेरी से पूछा—बेटी, हमारा विचार क्या तू करेगी?

विधवा मेरी इनकी दशा देख रो पड़ी।

"नहीं, तुम्हारा विचार तुम्हारा खुदा करेगा।" उसने कहा।

पैट्रिक ने गम्भीर मुद्रा से कहा—अबू दरदा, तुम स्वतंत्र हो, परन्तु स्वतंत्रता से तुम्हें फिर मृत्यु मिलेगी। तुम रातों-रात वेश बदलकर अपने परिवार के साथ समुद्रतट पर चले जाओ। वहाँ तुम्हारे लिए नौका का प्रबन्ध है। दूसरे

दिन तुम्हें जहाज मिलेगा जिससे तुम उस पार पहुँच जाओगे। तुम अरब चले जाओ।

यह सुन अबू दरदा क्षण भर अवाक् हो गया।

"पैट्रिक, मैं तुम्हारे बेटों का खूनी हूँ, दामाद का हत्यारा"—अबू दरदा के मुँह से बेतहाशा निकल पड़ा। उसके परिवार का प्रत्येक व्यक्ति रो रहा था।

"मरियम के पुत्र के साम्राज्य में बदला नहीं, प्रेम है, अबू दरदा। शीघ्रता करो, भागो।" पैट्रिक मुस्कराता हुआ बोला।

आगे सैनिक चला, पीछे अबू दरदा का परिवार वेश बदले। वे दूसरे दिन स्पेन की खूनी सीमा से बाहर हो गये।

[४]

पैट्रिक का विचार हो रहा था। विचारक बैठे थे। सामने पैट्रिक जंजीरों में जकड़ा खड़ा था, भालों से सजे सैनिकों के बीच। दूर जनता की भीड़ उमड़ रही थी।

विचारपति बोला—कैदी, तुम्हारे ऊपर स्पेनराष्ट्र के बागियों और ईसाई धर्म के शत्रुओं को भगाने का जुर्म लगाया गया है। तुम्हें इसके निस्बत कुछ कहना है?

"कुछ नहीं।"

"जुर्म स्वीकार करते हो?"

"हाँ, पिता!"

"कैदी, तुम्हारे अपराध के अनुरूप ही तुम्हारा दण्ड भी भीषण होगा।"

"मैं जानता हूँ, पिता! परन्तु मेरा आचरण खुदा के पवित्र बेटे के उसूलों के अनुकूल हुआ है।"

"तुम्हें प्राणदण्ड दिया जाता है, कैदी! परन्तु तुम्हारी और

तुम्हारे पूर्वजों की सेवा के कारण तुम्हें वह दण्ड आग में जला-कर या जल में डुबाकर न दिया जायगा। तुम्हारी शूली होगी।"

जनता ने साधुवाद किया—मुसलमानों को शरण देनेवाला राष्ट्र और धर्म का शत्रु है—धन्य विचारपति, धन्य !

"क्या मरियम के पुत्र के पार्थिव उत्तराधिकारियों का न्याय यही है—प्रेम और दया के विरुद्ध ?"

"अब हमें कुछ कहना नहीं है, कैदी !" विचारपति अन्तिम बार बोला।

भीड़ में एक काँपती आवाज ने कहा—खुदा के बेटे, यह कैसा इन्साफ !

आवाज स्त्री की थी, भर्राई हुई, दुर्बल। जनता के कोलाहल में वह डूब गयी। खुदा का बेटा उसे न सुन सका।

मन की थाह

[१]

जेनरल पस्सीनी ने पूछा—रुबिया तुमसे हो सकेगा ? प्राणों की ही बाजी नहीं है।

रुबिया ने स्थिर भाव से उत्तर दिया—प्राणों की यदि बाजी होती तो मैं जानती हूँ, आप इतनी भी बात न कहते। उत्तर-दायित्व बड़ा है, मैं समझती हूँ और मैं इसे करूँगी।

जेनरल की घनी भूरी मूँछें उसके होठों को छिपाये हुए थीं। उँगलियों से घनी मूँछों को श्वेत दाढ़ी के उलझे बालों से अलग करते हुए उसने धीरे-धीरे सिर उठाकर रुबिया को देखा। फिर नीचे मेज पर पड़े कागजों की ओर अपना रुख फेर लिया। उसके चौड़े ललाट पर चिन्ता और बुढ़ापे की गहरी रेखाएँ पड़ी हुई थीं।

रुबिया स्थिर, सीधी खड़ी थी। सुन्दरी रुबिया की कमनीय मूर्ति इटली की देशभक्त सेना के एक-एक सैनिक के हृदय में सजीव विद्यमान थी। उसके साहस और देश-प्रेम की कथा इटली के नगरों में जुलूस के समय गायी जाती थी, घर-घर कही जाती थी। उसके नाम से देशभक्त वीर कसमें खाते और

प्रतिज्ञाएँ करते थे। कायर उसका नाम सुनकर दहल उठते थे। उसके पुष्ट गात्रों में अकृत्रिम चंचलता भरी थी। इटली के बड़े-बड़े सैनिक और स्पेन, फ्रांस और वैक्ट्रिया के बड़े-बड़े सेनापति उसको चाह-भरी आँखों से देखते थे, उसे पाने के सौ-सौ मन्सूबे बाँधते थे। उसे विदेशियों द्वारा बड़े-बड़े लालच दिये गये; पर उसकी मुद्रा में, उसकी भाव-भंगी और उसके साहस में, जरा भी अन्तर न पड़ा। जब स्पेन, फ्रांस और आस्ट्रिया इटली को दक्षिण-पश्चिम और उत्तर में नोच-खसोट रहे थे, तब रुबिया अपने व्याख्यानों से इटली के नौजवानों में जोश भर रही थी। उसमें एक अद्भुत् आकर्षण था, जिसकी ओर लोग स्वत: खिंच आते थे। देश के वृद्धों का वह साहस थी, बच्चों की माँ और जवानों की उपास्यदेवी। कोई उसके घुँघराले बालों पर लट्टू था, कोई उसकी सदा तनी हुई भृकुटी पर। कोई उसकी चंचलता का शिकार था, कोई उसकी भाला फेंकने की शक्ति पर। बन्दूक का निशाना उसका अचूक था। इटली के बूढ़े शरीर में उसने प्राण फूँक दिये थे। जब वह बगल में रिवाल्वर लटकाये, इटली की पताका फहराती, घोड़े पर निकल पड़ती, तब सहस्त्रों अश्वारोही वीर उसके पीछे-पीछे दौड़ पड़ते थे। वृद्ध इटे-लियन जेनरल पस्सीनी का उसपर पुत्र की भाँति गर्व और पुत्री की भाँति ममत्व था। बीसों बार उसने बड़े ही साहस और उत्तरदायित्व के कार्य उसे सौंपे थे। रुबिया ने बड़ी खूबी के साथ उन्हें पूरा किया था। शत्रु उसके भय से काँपते और उसके साहस और चातुर्य की प्रशंसा करते थे। उनकी यह प्रबल इच्छा थी कि वे उसे जिंदा पकड़ लें; पर रुबिया की चातुरी के आगे उनकी एक न चलती थी। जेनरल पस्सीनी इस बार रुबिया को यह काम सौंपते घबराता था। उसे इस बात का

पूरा डर था कि जीते-जी तो कोई उसे पकड़ नहीं सकता; पर कहीं इस कठिन काम में प्राणों से भी हाथ न धोना पड़े।

जेनरल उठा और धीरे-धीरे कमरे में टहलने लगा।

रुबिया निश्चल खड़ी थी। उसकी आँखें जेनरल पर लगी थीं। वह जैसे-जैसे टहलता वैसे वैसे उसकी आँखें भी उसके साथ ही आगे-पीछे होतीं। रुबिया ने निस्तब्धता भंग की—श्रीमान् काउण्ट! असमंजस काहे का? क्या मेरे साहस में आपको कुछ सन्देह है?

नहीं, रुबिया! इटली की आत्मा में साहस की कमी नहीं, इसमें कौन सन्देह कर सकता है? मैं इटली की स्वतंत्रता की रक्षा चाहता हूँ; पर उसकी आत्मा का निधन बर्दाश्त नहीं कर सकता। तुम इटली की आत्मा हो। ललाट पर चमकती पसीने की बूँदों को हाथ से धीरे-धीरे पोंछते हुए पस्सीनी ने कहा।

"श्रीमान्! इटली की स्वतंत्रता के समक्ष में मेरे अथवा किसी व्यक्ति-विशेष के प्राणों का क्या मूल्य हो सकता है?" जेनरल पस्सीनी के स्नेह से आँखों में आँसू भरकर रुबिया ने पूछा।

"कुछ नहीं" पस्सीनी बोला। उसकी भौहें फिर एक दफा उठकर तन गयीं। उसने फिर कहा—"कुछ नहीं।"

"क्या मेरी तरह की हजारों लाखों आत्माएँ स्वदेश की वेदी पर बलि नहीं की जा सकतीं, महानुभाव?" रुबिया ने ओज-भरे शब्दों में पूछा।

पर हजारों-लाखों वीर आत्माएँ हैं कहाँ रुबिया? जेनरल के नेत्र सजल हो गये। 'आज' इटली केवल धन में ही नहीं, वीरता और देशभक्ति में भी कंगाल हो गया है। आज यदि वे हजारों और लाखों आत्माएँ होतीं?

रुबिया के आँसू उसकी आँखों में सूख गये। उसका मुख-मण्डल साहस और शौर्य से दमक उठा और छाती साँसों के वेग से फूल उठी। उसने अपने घुटने टेक दिये और कहा—श्रीमान् काउन्ट, यदि आपके इन बूढ़े बाहुओं में बल है और इन बूढ़ी नसों में गरम खून की रवानगी होती है, तो याद रखिये, इटली की तीन करोड़ आत्माएँ मिट्टी की पुतली नहीं हैं। आपके आशीर्वाद से नगर और कानन गुंजा दूँगी।

रोम की दीवारें शत्रु पर आग उगलेंगी और पिता टाइबर की जलराशि उन्हें निगल जायगी। मैं इटली के कमजोर दिलों में आग के शोले उठाऊँगी और शीघ्र ही यहाँ के नौजवानों में वह शक्ति जग उठेगी, जिसकी चोट से विदेशी कराह उठेंगे। श्रीमान् काउन्ट आज्ञा दें।

वृद्ध पस्सीनी की आँखें चमक उठीं। रुबिया के बालों पर हाथ फेरते-फेरते उन्होंने उसे उठा लिया। फिर कहा—जाओ रुबिया, तुम्हारी बात सही हो। तुमसे इटली को बड़ी आशा है। रुबिया ने अभिवादन किया और बाहर निकल घोड़े पर बैठ गयी। एँड़ लगते ही घोड़ा उत्तर की ओर उड़ चला। रुबिया के घुँघराले केश हवा में लहरा रहे थे। जेनरल पस्सीनी खिड़की की राह से उसे तब तक देखता रहा, जब तक वह आँखों से ओझल न हो गयी।

[२]

समुद्र के किनारे कोनिस के सघन वन में छिटकती चाँदनी में कुछ आहट हुई। धीरे-धीरे एक अश्वारोही पतले रास्ते से निकला और उस जगह पहुँचा, जहाँ एक और घुड़सवार किसी की प्रतीक्षा में खड़ा था।

उसने नवागन्तुक को देखते ही कहा—सिलनी ! तुम तो आ गये, पर अभी रुबिया का पता नहीं है। क्या वह स्थान नहीं है, जहाँ मिलने की बात थी ?

स्थान तो वही है और समय भी करीब-करीब हो ही गया है। रुबिया समय पर अवश्य आ पहुँचेगी ; उसके कार्यक्रम में कभी परिवर्तन नहीं हो सकता। सुनो तो, घोड़ों की टाप सुन पड़ती है। पर देखो, ब्रुक्सियानो ! जरा मेरे घोड़े की रास पकड़ना। ऐसा जान पड़ता है, कई घोड़े आ रहे हैं। सिलनी ने अपने घोड़े से उतरते और उसकी रास ब्रुक्सियानो के हाथ में देते हुए कहा।

सिलनी ने जमीन से कान लगाकर सुना और आशंका से उसका चेहरा कुछ गंभीर हो गया। उसने अपने साथी से कहा—ब्रुक्सियानो ! रुबिया आ रही है, पर अकेली नहीं है। उसका पीछा किया जा रहा है। सावधान हो जाओ। घोड़ों के मुँह कस दो और उन्हें पेड़ों की छाया में झट बाँध दो।

ब्रुक्सियानो घोड़ों को बाँधकर जैसे ही सिलनी के पास पहुँचा, सिलनी ने उसे एक चमड़े का बड़ा फन्दा देते हुए कहा—यह लो। सिलनी, इसमें तुम उस्ताद हो। देखो, वार खाली न जाय। शायद तीन हैं और तीनों रुबिया के थोड़े फासले पर हैं। जैसे ही रुबिया का घोड़ा निकल जाय, उसके पीछे वाले घोड़े में फन्दा डालो। एक के गिरते ही अन्य ताबड़-तोड़ उसपर गिरेंगे। उसके बाद का काम मेरा है, देखो, होशियार !

धीरे-धीरे टापें बहुत स्पष्ट हो गयीं और उनकी आवाजें बिल्कुल पास आ गयीं। ब्रुक्सियानो पेड़ों की छाया में घुटनों के बल सचेष्ट बैठा था। सिलनी दूसरी ओर पेड़ की आड़ में दम रोके खड़ा था। एकाएक रुबिया का घोड़ा निकल गया। उसकी

छोटी परछाईं धीरे-धीरे चाँदनी में बढ़कर फिर छोटी हो गयी। अुक्सियानो का ध्यान था सामने की बढ़ती हुई छाया पर। सहसा उसके हाथ के साथ ही बढ़ती हुई छाया और धम्म से एक घोड़ा मय उसके सवार के नीचे आ रहा; फिर दूसरा, फिर तीसरा। पलक मारते ही सारा काण्ड हो गया। अुक्सियानो फन्दा फेंकने में बड़ा कुशल था। सिलनी की गोली से आगेवाले सवार की कलाई टूट गयी और उसके हाथ की पिस्तौल छूट पड़ी। रुबिया रुककर लौट पड़ी। उसके हाथ में भरी पिस्तौल थी!

अुक्सियानो ने सवारों को जकड़ लिया। उनमें से सबसे पिछले सवार का मुँह नकाब से ढँका था। रुबिया ने पूछा, भला इन्हें कैसे पता चला कि हमें यहाँ मिलना है? मालूम होता है, ये इधर ही आ रहे थे जब मैं इन्हें मोड़ पर मिली और इन्होंने मुझे पहचानकर पकड़ना चाहा। पर इनकी नकाब तो काटो। देखो, यह कौन है? शायद यही इनका सरदार हो।

सिलनी ने नकाब का फन्दा काट दिया और सवार का चेहरा खुल गया। यदि नकाब के पीछे से शेर का चेहरा निकलता, तो शायद रुबिया को इतना आश्चर्य न होता। वह सहसा कई पग पीछे हट गयी। अुक्सियानो चीख उठा और सिलनी पुकार उठा—अरे! यह तो बम्पा है। रुबिया की आँखों से ज्वाला निकल रही थी। उसने सिलनी की ओर देखकर कहा—"हाँ, यह बम्पा है।" फिर बम्पा की ओर देखकर पूछा—बम्पा, इसी देशभक्ति का दम भरा करते थे? मैं जानती हूँ, तुमने यह क्यों किया। पर, क्या देश-प्रेम किसी के आसरे होकर रहता है? कायर! नरपिशाच! क्या तुमने समझा था कि इस देश-द्रोह के फलस्वरूप इनाम में विदेशियों द्वारा मुझे पाओगे?

वम्पा की दाहिनी जाँघ टूट गयी थी। उसने अपनी आँखें नीची कर लीं; दूसरे सवार भी घायल पड़े थे। रुबिया ने पूछा—वम्पा, इसकी सजा तुम जानते हो, क्या है, और वह तुम्हें मिलेगी। वम्पा जानता था, वह वह सजा कौन-सी थी। मृत्यु की विभीषिका उसके नेत्रों में नाचने लगी।

भय से काँपता हुआ वह बोला—रुबिया मुझे क्षमा कर। वह रो पड़ा, उसकी घिग्घी बँध गयी।

रुबिया ने पूछा—कायर, अब क्या मरने से डरता है? फिर उसने सिलनी से कहा—देखो, इसे सामने के पेड़ से बाँध दो।

देखते-देखते वम्पा वृक्ष से बँध गया।

रुबिया एक काटों से भरी पतली लम्बी छड़ी जंगल से काट लायी। वम्पा का शरीर कमर तक नंगा कर दिया गया। काँटेवाली छड़ी लिये जब रुबिया वम्पा की ओर बढ़ी, तो वह भय से चिल्ला उठा—रुबिया! मुझे गोली मार दो, पर यन्त्रणा न दो।

रुबिया हँसी। उसने कहा—"इतनी सुख की मृत्यु देश-द्रोही को नहीं मिल सकती है। वह वम्पा पर छड़ियों की वर्षा करने लगी। उनकी चोट से वम्पा बिलबिला उठा। उसके चीत्कार से सारा जंगल गूँज उठा; पर रुबिया उसे मारती ही रही। उसका कोमल रमणी-हृदय पत्थर का हो गया था और उसका सहज सुन्दर मुख क्रोध और घृणा से विकृत हो उठा था। विदेशी घायल आस्ट्रियनों में से एक यह मार देखकर मूर्च्छित हो गया। दूसरे ने जो उफ् करके उठना चाहा, तो रुबिया ने लौटकर उसे जोर से ठोकर मारी। रुबिया क्षण भर के लिये रुक गयी।

मूर्च्छित आस्ट्रियन ने जब होश में आकर आँखें खोलीं, तब रुबिया ने उससे कहा—देखो, इटली अपने देश-द्रोहियों से किस प्रकार निपटता है।

उसने फिर वम्पा को मारना शुरू किया। काँटों की चोट से वम्पा का शरीर चलनी हो गया और उसकी संज्ञा विलुप्त हो गयी।

रुबिया ने कहा—यदि मेरे पास समय होता और मैं थकती नहीं, तो मैं इस बात को पसन्द करती थी कि इस अभागे का अन्त मेरे कोड़ों से ही हो।

इसी समय वम्पा ने फिर आँखें खोलीं और धीरे से उसने कुछ कहा। रुबिया ने उसका अर्थ समझा—'क्षमा'। पर उसके पास क्षमा कहाँ ?

उसने कहा—वम्पा, अब अपनी अन्तिम प्रार्थना कर ले। देख, केवल एक मिनट। तू जानता है, मेरे पास क्षमा नहीं है। यह कहकर वह सीधी तनकर खड़ी हो गयी। उसने काँटेवाली छड़ी फेंक दी और पिस्तौल सम्हाली। उसे अच्छी तरह हाथ में कसकर उसने वम्पा की ओर देखा। वह अभागा रो रहा था; पर उसके आँसू प्रायश्चित्त के नहीं, भय के थे।

रुबिया ने कहा, एक मिनट और! वम्पा गिड़गिड़ा उठा। सिलनी घृणा से उसकी ओर देख रहा था; ब्रुक्सियानो क्रोध से होंठ काट रहा था; आस्ट्रियन सैनिक दूसरी ओर मुँह किये पड़े थे। सहसा रुबिया की पिस्तौल दग उठी और वम्पा का सिर बायीं ओर लुढ़क गया। उसके ठीक दिल के पास एक रक्तमय धब्बा घना हो रहा था। सिलनी ने उसके मुँह पर थूक दिया और ब्रुक्सियानो ने उसे ठोकर मारी। फिर सिलनी ने वम्पा के खून से नीचे पत्थर पर कुछ लिखा।

रुबिया सहसा आस्ट्रियनों की ओर घूम पड़ी और उसने उनसे कहा—मरने के लिये तैयार हो जाओ। अन्तिम प्रार्थना कर लो। स्वतंत्रता के अपहरण करने में जो सहायक होते हैं, उनके लिये क्षमा नहीं। केवल दो मिनट।

सैनिक जैसे के तैसे पड़े रहे। पर उन्होंने आँखें मींच लीं—शायद प्रार्थना में लीन हो गये। सहसा रुबिया के पिस्तौल-भरे दोनों हाथ उठे। एक साथ ही दो धड़ाके हुए और दोनों सैनिक ढेर हो गये।

रुबिया ने कहा—सिलनी, ब्रुक्सियानो, आस्ट्रियन वीर हैं। इनसे मरना सीखो।

रुबिया ने फिर कहा—"अच्छा, अब काम की बात।" वह धीरे-धीरे अपने साथियों से कुछ परामर्श करने लगी। करीब-करीब आधे घंटे तक वह उन्हें अपनी व्यवस्था समझाती रही; फिर कुछ जोर से उसने कहा—देखो, यात्रा लम्बी है और काम कठिन। पर उसे करना ही होगा। याद रखना—१५ मई की रात, ठीक एक बजे। और तीनों एक साथ। सिलनी, आस्ट्रिया, ब्रुक्सियानो, स्पेन। जाओ।

सिलनी उत्तर की ओर बढ़ा, बुक्सियानो दक्षिण की ओर।

रुबिया पश्चिम की ओर धीरे-धीरे यह कहती हुई बढ़ी—जेनरल ने कहा था—"आज इटली केवल धन से ही नहीं, वीरता और देशभक्ति से भी कंगाल है।" इसी कारण वहाँ इतना बड़ा काण्ड हो जाने पर भी रात में पास के गाँववालों को आने की हिम्मत न हुई। प्रात:, जब वे वहाँ पहुँचे, तो उन्होंने दो आस्ट्रियन सैनिकों को मरा पाया और बम्पा के पैरों के पासवाले बड़े पत्थर पर खून से लिखे अक्षर पढ़े—'देशद्रोही बम्पा।'

[३]

जेनरल पस्सीनी के आनन्द की सीमा नहीं थी। उसे खबर मिली कि फ्रेंच, आस्ट्रियन और स्पेनिश जेनरल मय अपने बारूदखानों और शिविरों के १५ मई को एक बजे रात में एक साथ उड़ा दिये गये। शहरों से इटालियनों ने विदेशियों को मार भगाया। कुछ समय के लिये इटली स्वतंत्र था। उसे अब दम लेने और अपनी डाँवाडोल स्थिति सम्हालने का मौका मिला। सारा देश आनन्द-उत्सव में लीन हो गया। खुशियाँ मनायी जाने लगीं। देशभक्त पुरस्कृत होने लगे। जेनरल पस्सीनी का हृदय उछल रहा था—कब रुबिया आवे और वह उसे हृदय से लगा ले। सारा देश उसका ऋणी है। इटली की स्वतंत्रता की एकमात्र रक्षिका रुबिया है। सारा देश हृदय खोले उसके स्वागत की प्रतीक्षा कर रहा था; पर वह पो नदी के किनारे अभी तक शिविर डाले पड़ी है। जेनरल पस्सीनी सुखी हैं; पर रह-रहकर उनके हृदय में एक प्रकार की शंका उठती है, और वे कुछ घबरा उठते हैं। लोम्बार्डी का उत्तरी सुविस्तृत मैदान अवश्य इस समय अपना है; पर अभी तक वहाँ देशप्रिय नेत्री का रहना निरापद नहीं। क्या जाने कब विदेशी सेनाएँ आ धमकें।

जेनरल ने हरकारे पर हरकारे भेजे; पर रुबिया नहीं आयी, नहीं आती! कुछ बहाने बनाकर टाल देती है।

× × ×

फ्रेंच शिविर के बारूदखाने में रुबिया के सम्मुख आग लगायी गयी। करीब दो हजार सैनिकों का नाश हुआ। फ्रेंच सेनापति मारा गया। रुबिया ने बचे-खुचे सैनिकों पर धावा कर

फ्रेंच शिविर लूट लिया। फ्रेंच सेनापति का पुत्र विकाम्टी दुवाय उसके हाथों कैदी हुआ। X → Read.

X// → दुवाय से रुबिया का कई बार सामना हो चुका था। उसकी वीरता और उसका पौरुष रुबिया के हृदय पर अंकित हो चुके थे और वह रात के आखिरी पहर सोयी। पो नदी के किनारे लोम्बार्डी के मैदान में वह सो रही थी। प्रात: पवन के स्पर्श से उसकी निद्रा गहरी हो रही थी। उसने स्वप्न में देखा, पेरिस के बुलेवार से टहलकर लौटी है और दुवाय के प्रासाद में उसके अंक में पड़ी हुई है। सहसा उस कमरे में लगे एक चित्र से एक मानव-शरीर धीरे-धीरे प्रादुर्भूत हुआ। धीरे-धीरे वह इसकी ओर बढ़ा। जब वह उसके पास आया, तो उसने पहचाना—वह वम्पा था।

वम्पा ने कहा—मैंने अपने पापों का प्रायश्चित्त कर लिया है, रुबिया अब तेरी बारी है—देख, देश-द्रोह का क्या परिणाम है।

रुबिया ने देखा—वम्पा एक हाथ में एक काँटेदार छड़ी और दूसरे में पिस्तौल लिये धीरे-धीरे, किन्तु स्थिर पगों से उसकी ओर बढ़ रहा है।

रुबिया डर से चीख उठी। उसकी निद्रा टूट गयी। कई दिनों के अन्तर-संघर्ष के बाद रुबिया ने अपना कर्त्तव्य निश्चित कर लिया। वह अपना सर्वस्व खो देगी, पर देश-द्रोह न करेगी।

आज जब वह कैदी से मिलने गयी, तो उसने रोज के वक्तव्य का उत्तर अपने रोज के हो शब्दों में दिया; पर उसके स्वर में आज भय और दुर्बलता का नाम न था, वरन् ओज और शक्ति का परिचय था।

[४]

आज रोम में कार्निवल है। इस अवसर पर इटली के परम शत्रु फ्रांस के सेनापति के पुत्र दुवार्य का वध होगा। सारा नगर सुखी है, चारों ओर हलचल मची है। शहर भर की गाड़ियाँ बयाना ले चुकी हैं। लोगों ने उनको मुँहमागे किराये पर नियुक्त किया है। प्रांगण की सारी खिड़कियाँ दुगने-तिगुने किराये पर उठी हैं।

× × ×

दस बजे सारा प्रांगण दर्शकों से खचाखच भर गया। सारी खिड़कियाँ मानव-मस्तकों से भर गयीं। मनुष्य का वध देखने के लिये मनुष्य लालायित रहता है। कसाई का छुरा देखकर वध के लिये आयी गायों में से एक को प्राण-दान पाकर लौटती देखकर शायद और गायें आनन्द से रो उठें; पर यहाँ रोम की मानवता मनुष्य वध के लिये प्रसन्न-चित्त प्रतीक्षा कर रही है। और, मनुष्य सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी कहा जाता है।

नर-नारी चारों ओर ठसाठस भरे थे। सामने ऊँचे स्थान पर एक भारी पत्थर रक्खा था, जहाँ एक तेज फरसा लटक रहा था।

पूर्व की ओर से संतरियों के बीच धीरे-धीरे बढ़ता हुआ दुवाय प्रांगण में दाखिल हुआ। लाखों आँखें उसकी ओर फिरीं और हजारों जवानों ने कहा—यह इटली का शत्रु है—रुबिया का किया हुआ बन्दी।

रुबिया जेनरल पस्सीनी के पास उससे प्रेमपूर्वक बातें कर रही थी। हृदय मसोस रहा था, पर आज उसने उसे पत्थर का कर लिया था। वधस्थल के पास दुवाय पहुँचा। जन-कोलाहल से स्थल गूँज उठा। कोई दुवाय को गाली देने लगा, कोई

रुबिया को बधाई। किसी का फेंका एक पत्थर संतरियों के पास दुवाय के पाँव पर गिरा। इस समय दुवाय उसकी देश-प्रियता का कायल था। रुबिया के नाम से इटली का वन-प्रान्त गूँजा करता था। दुवाय को बराबर उसे देखकर जॉन आफ यार्क की याद आती। उसने उसे कई बार छिपकर देखा था। जब कभी रुबिया इटली का झंडा लिये जुलूस में निकलती, दुवाय हृदय मसोस कर रह जाता। कई बार उसने शहरों पर पिता की आज्ञा से हमले किये थे; पर उसका दिल बार-बार उससे कहता यह अनुचित है।

दुवाय आज रुबिया का कैदी था; रुबिया उसकी स्वामिनी थी। पर रुबिया रो रही थी, और दुवाय हँस रहा था। रुबिया का हृदय दुवाय का बन्दी हो चुका था। दुवाय अपने को रुबिया को सौंप कर सुखी था; पर रुबिया के हृदय में उथल-पुथल मच रही थी। वह सोचती थी—उसने जीतकर हारा और दुवाय ने हारकर जीता।

रुबिया के हृदय में भयानक संघर्ष चल रहा था। दुवाय लड़ाई का कैदी था—वह भी इटली की स्वतंत्रता के युद्ध का। विदेशियों ने इटली की छाती पर सैकड़ों वर्ष तक मूँग दली थी और फ्रांस का हाथ उसमें कम न था। दुवाय उस फ्रेंच जेनरल का पुत्र था, जिसने शहर के शहर जला दिये थे, जिसकी मार और जुल्म से पश्चिमी इटली का बच्चा-बच्चा पुकार उठा था। दुवाय इटली का शत्रु था। किस खुशी से इटली का जन-समुदाय उसकी मृत्यु पर उत्सव मनावेगा, यह रुबिया जानती थी। यह निश्चय था कि वह देश से विश्वासघात नहीं करेगी; पर उसका क्या होगा? रुबिया मर्माहत हो गयी। उसका हृदय कुचल गया। उसने नहीं जाना था कि उसका हृदय कोमल स्त्री का है।

बम्पा को उसने बड़े कष्ट से मारा था, पिनोजा और वाल्टा भी उसी प्रकार उसके क्रोध और न्याय के शिकार हुए थे। आज वह स्वयं अपराधिनी है। कर्त्तव्य घूरता है; पर हृदय दुवाय को अपनी कोमल रक्तमय छाप से ढँक लेता है। रुबिया का हृदय आज खून के आँसू रोता है। इस विषय को वह टालती है; पर वह कब तक इसे टालेगी? बरबस उसका चित्त दुवाय के भविष्य की ओर खिंच जाता है।

रोज रुबिया बन्दी के शिविर में एक बार जाती है और दिल पर हाथ कर कैदी से बात करती। रोज दुवाय उससे एक बात कहता, बस एक ही बात 'रुबिया'! अपना देश-प्रेम तुम्हारी इस सौंदर्य-राशि पर निसार कर चुका हूँ। मुझसे एक बार—केवल एक बार कह दो, तुम मुझे प्यार करती हो और मैं असीम आनन्द के साथ मर सकूँगा। रुबिया उससे केवल यह कह देती—रुबिया अपने देश-दुश्मनों से घृणा करती है। पर यह कहते उसका हृदय टूक-टूक हो जाता। दुवाय की स्मृति उसके एकान्त का चिन्तन थी। उसके स्पर्श में उसे स्वर्ग का आनन्द होता; पर इस मनस्विनी का कर्त्तव्य उसकी दुर्बलता पर उसे धिक्कार उठता।

धीरे-धीरे उसका हृदय उसके कर्त्तव्य-विवेक पर विजय पाने लगा और एक रात, जब उसका कठोर आवरण हट गया, एकान्त में सिसकियाँ बँध गयीं। उसने जाना कि उसका हृदय केवल नारी-हृदय है। उसने स्थिर कर लिया, वह दुवाय को स्वतंत्र कर, उसके साथ फ्रांस भाग जायगी। ✕|| —›

✕यदि वह छोड़ दिया जाता, तो शायद वह सभ्य मानव-समाज को नोचकर खा जाता। रुबिया स्थिर मन से एक टक दुवाय को देख रही थी। उसके पौरुष पर वह बलि जाती थी। जेनरल

वध-स्थल की ओर देख रहा था, खुश था, रुबिया भी उसी ओर देख रही थी। उसका मुँह हँसता था, हृदय रोता था।

दुवाय चारों ओर किसी को ढूँढ़ रहा था। एकाएक जेन-रल के पार्श्व में रुबिया को देखकर वह उछल पड़ा और उसने अपना हाथ चूमकर उसकी ओर उठाया। फिर खुशी से उसने अपना सिर पत्थर पर रख दिया।

रुबिया देख रही थी।

जेनरल ने कहा—रुबिया, देखो बहादुर है, इटालियन क्यों न हुआ?

रुबिया ने धीरे से कहा—हाँ।

एकाएक जल्लाद ने फरसा उठाया। रुबिया उसे एकटक देख रही थी।

जेनरल ने उसे देखकर कहा—रुबिया, तुमने पुरुष-सिंहों का हृदय पाया है। वृद्ध पस्सीनी ने मुँह फेर लिया। रुबिया देखती रही। खटाके की आवाज हुई, दुवाय का सिर लुढ़क पड़ा और खून का स्रोत उसके धड़ से फूट पड़ा। जल्लाद ने उसका मस्तक उठाकर जनता को दिखाया। हर्ष-कोलाहल से वायु-मंडल व्याप्त हो गया। इसी समय जेनरल की खिड़की में पिस्तौल की आवाज हुई और रुबिया का निष्प्राण शरीर लोट गया।

रुबिया का प्रच्छन्न प्रेम किसी ने नहीं जाना, दुवाय ने भी नहीं?

बर्दाश्त

[१]

बाल्जाक ने जब साँझ के समय बाहर से लौटकर अपने धुँधले कमरे की खिड़कियाँ खोलीं, तो मेज पर पड़े विजिटिंग कार्ड की ओर उसका ध्यान गया। कार्ड कुछ असाधारण-सा था। एक नजर में उसने देख लिया कि वह उसके वर्ग के अनेक मिलनेवालों में से किसी का नहीं हो सकता। उसने उसे उठा लिया। धुँधले प्रकाश में भी उसने उस कार्ड के सुनहरे किनारों को देखा, जिसके बीच सुन्दर अक्षरों में छपा हुआ था—काउन्टेस दि गीमे।

बाल्जाक फड़क उठा। फ्रांस की मेधाविनी काउन्टेस दि गीमे की कृपा-कोर उसकी ओर फिरी है—यह जानते उसे देर न लगी। उसने अपने भाग्य को सराहा और उस भगवान के अनजाने धन्यवाद किए जिसके अनस्तित्व में उसने कितने ही निबन्ध रचे थे, कितनी ही वक्तृताएँ दी थीं।

काउन्टेस दि गीमे पेरिस की एक बड़ी प्रतिभाशालिनी कला-प्रिय विदुषी थी। उसकी आलोचनात्मक दृष्टि के सामने बड़े-बड़े आलोचकों ने सिर झुकाया था, और फ्रांस की राष्ट्रीय साहि-

त्यिक संस्था फ्रेंच एकेडेमी ने उसे कई पदक दिये थे। स्वयं काउन्ट दि गीमे फ्रांस के एक संभ्रान्त और धनाढ्य नागरिक थे। साहित्य और कला में उनकी अप्रतिहत गति थी। काउन्टेन्स तो पेरिस की विभूति थी। उसके सौजन्य और साहित्यिक सूझ का फ्रांस में साका चलता था। उसकी अतुल छबि सोने में सुहागा डालती थी। वह साहित्यिक जीवन के सिवा पेरिस के रसमय जीवन का भी केन्द्र थी।

खिड़कियों से आते धुँधले प्रकाश में बाल्जाक की धुँधली प्रवृत्ति भीतर से निकल, उसके मुख-मण्डल पर झलकने लगी। क्या उसका स्थान भी काउन्टेस की बैठक में फ्रांस के प्रमुख कलाकारों के बीच होगा ?—वह उछल पड़ा। इसी समय उसके हृदय में एक मनभावनी गुदगुदी उठी। उसकी वह घृणित कमजोरी कुछ प्रबल हो उठी। दूर अपनी बैठक में सजी, बैठी काउन्टेस की छबि को पहले उसने आँख के कोनों से झाँका, फिर मानो भीतर की ओर फिर-फिर निहारा। प्रसन्नता से उसके होंठ फैल गये। पैर गतिशील हो उठे।

बाल्जाक भीतर की ओर दौड़ा। रास्ते में उसने स्टूल उलट दिया। उसके धक्के से दाहिनी ओर स्टैंड से लटकती घड़ी गिरकर चूर-चूर हो गयी। कारीडर में प्रकाश लेकर आती दासी से वह जा टकराया। भीतरी बरामदे में अँधेरा फिर भर गया। पीतल का लैम्प जमीन पर जा गिरा—झन्नन्न्।

मुँहलगी दासी ने सच्ची झल्लाहट से पूछा—बाल्जाक, दीखता नहीं ? अन्धे तो नहीं हो गये ?

"नहीं, जोना, दीखता है। अब तो अँधेरे में भी दीखने लगा।"—बाल्जाक ने अपनी पुरानी कुत्सित कामना से दासी के खुले बाल उछाल दिये।

दासी लौट पड़ी।

बाल्जाक ने दौड़कर उसे पकड़ लिया। फिर प्यार-भरे शब्दों में वह बोला—जोना, मेरी प्यारी सुनहरी जोना, बता तो, क्या यह कार्ड अकेला आया ? क्या इसे देनेवाली ने कुछ और तुम्हें नहीं दिया ?

दासी अँधेरे में अपने हाथ छुड़ाती हुई बोली—ठहरो ठहरो, क्या करते हो ? दूसरे किराएदार टहलकर लौट रहे हैं। वह देखो, वह तुम्हारा मिराबो अपनी छबीली दासी के साथ कमरे में...।

बाल्जाक ने दासी की बातें पूरी न होने दीं। "जभी तो, जभी तो"—कहते हुए उसने उसे टाँग लिया और पास के प्रकाशित कक्ष में वह जा घुसा।

बाल्जाक ने पूछा—"बता जोना, उसने तुम्हें और कुछ न दिया ?"

"कुछ नहीं।" दासी कुछ मुस्कराती हुई बोली। सेमीज के ऊपरी भाग में जैकेट के नीचे सामने कुछ हलचल-सी मची।

"नहीं, यह हो नहीं सकता जोना, आज पत्रों में छपी थी—काउन्टेस दि गीमे और काउन्ट की बैठक में कल के साहित्यिक समारोह की बात।" बाल्जाक ने कुछ दासी से पूछा, कुछ स्वय विचारा।

"ले, दरिद्र दीवाना, ले अपने स्वप्न का सत्य—"दासी ने एक लिफाफा बाल्जाक के ऊपर फेंका। उसने वास्तव में लिफाफा खींचकर प्रचुर क्रोध से बाल्जाक को मारा। शायद उसने उस कागज से बाल्जाक के विशाल शरीर पर चोट करने की सोची थी। उसने उस लिफाफा देनेवाली काउन्टेस को देखा था, जिसके सौन्दर्य की धाक सारे फ्रांस में थी।

"नीच, नराधम, अभागा..." कहती हुई दासी ने तेजी से वह कमरा छोड़ दिया।

बाल्जाक ने दासी की गाली न सुनी। उसने लपककर वह चमकता लिफाफा ले लिया।

लाल छोटे लिफाफे पर नीली-हरी कितनी ही लहरियाँ पड़ी थीं। मुँह पर काउण्ट दि गीमे के प्राचीन वंश की उभरी हुई सुन्दर मुद्रा अंकित थी। ऊपर नारी के सुन्दर अक्षरों में पता लिखा था—"फ्रांस के अद्वितीय अनजाने साहित्यिक श्री बाल्जाक को"।

'बाल्जाक' उछल पड़ा। उछलते हृदय से उसने सावधानी से लिफाफा खोला।

पेरिस की घृणित गलियों में रहनेवाले प्रखर बुद्धि साहित्यिक को विख्यात आलोचक ने पहिचाना। 'बाल्जाक' ने अपने जीवन का यह आश्चर्य धीरे-धीरे जाना। उसने कई बार वह निमन्त्रण पढ़ा।

[२]

एक युग बाद।

'बाल्जाक' अब पेरिस की गन्दी गलियों का अभागा रसिक साहित्यकार न था। अब था वह फ्रांस के विस्तृत आकाश का देदीप्यमान चन्द्रमा। उसका शीत निवास अब पेरिस में विलास की विभूतियों से सजा काउन्टेस का ऋद्ध प्रासाद था और ग्रीष्म निवास दि गीमे परिवार का पेरिस से बाहर सीन के तट पर विशाल दुर्ग।

इन वर्षों में 'बाल्जाक' न केवल फ्रांस के कलाकारों का मुकुटमणि बना; वरन् उसने विलासिनियों के ऊपर भी अपना

प्रभुत्त्व जमा दिया। जब लेखनी को द्रव्य के निमित्त लिखने की आवश्यकता न रही, तो उसने भाव की प्रौढ़ता को और अपनाया। एक के बाद एक चकाचौंध उत्पन्न करनेवाले रत्न प्रसूत हुए और फ्रांस का साहित्यिक मैदान 'बाल्जाक' के हाथ रहा। मादकता से भरे उपन्यासों की उसने भरमार कर दी और उसकी लेखनी की आर्द्रता के मारे विलासिनियों ने उसके मार्ग में अपने फूल बिछाए। विलासी 'बाल्जाक' ने प्रत्येक के फूल बारी-बारी स्वीकार किये, फिर धीरे-धीरे उन्हें मसल डाले।

काउन्ट दि गीमे का आश्रयपात्र उसके प्रासाद का स्वामी बन बठा और स्वामी स्वयं अकिंचन किंकरा काउन्टेस का गहरा उन्माद युगान्त में भी नया बना रहा। वह भावनामयी नारी विलास की रानी थी; पर भावनाओं की चेरी। शक्ति और विस्मय उसे पकड़कर अपनी ओर खींचते और आश्रय की परवाह न कर, वह अपनी भावनाओं का पल्ला पकड़ दौड़ती, वेग से लुढ़कती, गिरती। उसके केवल हृदय और मस्तिष्क थे, नेत्र न थे। उसने उस पिण्डपूजक का बाहरी कुरूप विकृत आकार न देखा और उसका सौन्दर्य पर घातक व्यंग करनेवाला भद्दा रूप उसकी नारी छबि को आकृष्ट करने लगा। ज्यों-ज्यों बाल्जाक पेरिस की विलासस्थली में अपने स्थूल विशाल घुटने डाल उसे झकझोरता, काउन्टेस का मन कुरंग के उन्माद से रीझ उठता, अनोखे विलासी की भाँवरें भरता। और वह बाल्जाक स्वयं उसको भी कभी-कभी पतझड़ के गिराए फूल की भाँति कुचल कर आगे निभृत कोण में छिपी कली को तोड़ लेता। काउन्टेस उससे इस कारण नाराज न होती। वह संतुष्ट थी। कितनी ही बार जब उसके कामुक प्रणयी को अपनी लक्ष्यसिद्धि के अर्थ उसकी आवश्यकता होती, वह उसको उसकी लालसा तक पहुँचाती।

तब उस बीच वह उससे अनुनय भी करता, उससे कामुक स्नेह भी। फिर कभी काम की उतावली में वह भीषण मानव उस मुग्ध कामिनी को क्षत-विक्षत भी कर देता।

और काउन्ट ?

काउन्ट किसी से नाराज न था। उसकी विस्तृत दिनचर्या में 'बाल्जाक' और काउन्टेस के अभिनय खो-से जाते थे। अद्‌भुत क्षमतावाला वह अन्तर्हृत काउन्ट नित्य प्रात: अपने अध्ययन-कक्ष में जा पहुँचता और नित्य उसकी लेखनी सदैव की भाँति पृष्ठों पर दौड़ती। न कभी उसने अपने कुत्तों को क्रोध से दुत्कारा, न नौकरों पर भृकुटी भंग की। काउन्टेस के लंबे बालों को वह रोज धीरे-धीरे सहलाता और उसके अंग से चिपटी चमकती बिल्ली को वह प्रेम से पुचकारता। नित्य वह बाल्जाक को फूलों के दस्ते प्रदान करता। नित्य काउन्टेस चाहती, वह उसे एक बार भी झिड़के और उस विलासिनी के अन्तर्दाह का शमन हो। परन्तु काउन्ट की मुसकान सदा उसके होठों पर खेलती रहती। काउन्टेस ने न जाना कि काउन्ट के अंतर में अथाह सागर उद्वेलित होता रहता है; परन्तु उसने उसकी क्षुब्ध बीचियों को कठिन फौलादी चादर से ढक रखा है। काउन्टेस ने सदा यही जाना कि काउन्ट सर्वदा की भाँति उससे संतुष्ट है।

बाल्जाक को अपने नये वातावरण में प्रारम्भ में तो अवश्य कुछ प्रतारणा के धक्के लगे। परन्तु काउन्ट के सधे सौजन्य से उसका पाप धीरे-धीरे छोटे अपराध और बाद में साधारण कर्त्तव्य में परिणत हो गया। फिर तो जैसे-जैसे समय बीतने लगा, विलास की मादकता उसे विभोर करने लगी, उसने पहिले तो काउन्ट को गौण कर दिया; फिर धीरे-धीरे उसे बिलकुल ही भुला दिया। उसके हृदय में कृतघ्नता की कसक कभी न उठी।

उसने काउन्टद्वारा उपालम्भ में दिए अपने सर्वस्व को सर्वथा अपना लिया और काउन्ट स्वयं उसकी आँखों से ओझल हो गया। बाल्जाक ने फिर तो कभी सोचा भी नहीं कि काउन्ट भी उसके परिवार का कोई व्यक्ति है। उसका सारा परिवार, धन-वैभव, दास-परिचर सब बाल्जाक के अपने थे। वह संतुष्ट था। और नियति का मारा अदृष्टसेवी काउन्ट भी।

× × ×

काउन्ट घंटों से अपने प्रासाद के ऊपरी कमरे में बैठा खिड़की से आकाश की ओर देख रहा था। आकाश उसे धमका-सा रहा था। रुई की भाँति छोटे-बड़े बादल गुर्राते हुए-से धीरे-धीरे आकाश में ऐंठते-से एक ओर से दूसरी ओर उड़े जा रहे थे। काउन्ट एकटक उन्हें देख रहा था। परन्तु, मानव कब तक बादलों को देख सकता है। संध्या का समय था, आकाश ने पृथ्वी पर जल के फुहारे छोड़े थे। सामने फ्रांस के उज्वल राजवंश की कीर्ति सिर से उठाए विशाल लूवर खड़ा था। उसके ऊँचे घनभेदी कँगूरों की धुँधली छाया नीचे तालाबों की कतार में धीरे-धीरे हिल रही थी। परन्तु इस सौन्दर्य से भी मनुष्य का मन ऊब जाता है। फिर काउन्ट की तृप्ति क्यों नहीं होती? किन्तु, क्या वह सामने के प्राकृतिक दृश्यों की बहार देख रहा था? आँखें खुली थीं, मुख-मण्डल सदा की भाँति प्रसन्न-सा दीखता था। परन्तु उस पर मानो सामने श्याम मेघों की छाया पड़ रही थी। अन्तर के कोलाहल से यह छाया और गहरी-सी हो गयी दीखती थी।

× × ×

नीचे संगमरमर की बनी क्यारियों के बीच अनेकों फूलों की गंध से लदी वायु धीरे-धीरे डोल रही थी। बेलों में सुन्दर आसन

धरे थे। गुलाबों की छटा अनोखी थी। काउन्ट ने गुलाबों के पौधे अपने हाथों रोपे थे, बेलों की फुनगियाँ अपने हाथों नित्य चढ़ाई थीं। वह अपनी खिड़की पर अब भी बैठा था।

× × ×

बेलों के भीतर निकुंज की खिड़की से बाहर बाल्जाक की जब नजर गयी वह कुछ सहम गया। काउन्टेस ने जब उधर देखा आकाश के बादलों को काउन्ट के मुखमण्डल पर घुमड़ते पाया। घबड़ाकर उसने बाल्जाक से पूछा—काउन्ट ने देखा तो नहीं ?

काउन्टेस कुछ डर गयी थी।

बाल्जाक ने कहा 'नहीं।' उसने काउन्टेस को आड़ में खींच लिया।

× × ×

"श्रीमन्, चाय तैयार है"—पुराने वृद्ध अनुचर ने धीमी आवाज में कहा। उसके रोम-रोम में काउन्ट के लिए पीड़ा थी।

काउन्ट की मानो निद्रा टूटी। उसने फिरकर अनुचर की ओर देखा। फिर कहा—प्लाँशे, सामने देख, बादलों का कितना अटूट विस्तार है ?

"हाँ श्रीमन् काउन्ट, सत्य"—प्लाँशे ने उत्तर दिया और झट कमरे से बाहर जा उसने अपने आँसू पोंछ लिए।

काउन्ट ने उसकी भरी आँखें देख ली थीं। उसने पुकारा—प्लाँशे। काउन्ट के स्वर में दृढ़ता थी। प्लाँशे डर गया।

"श्रीमन् !" उसने लौटकर कहा।

उसकी आँखें अब भी डबडबाई हुई थीं। गालों के पुँछे आँसुओं के निशान अभी न मिटे थे। काउन्ट ने उन्हें देखा।

वह बोला—प्लाँशे, तुम पहिले-से संयत न रहे।

प्लाँशे के संयम का बाँध टूट गया। कठिनता से रोके आँसू वेग से बह चले। प्लाँशे एकटक काउन्ट की ओर देख रहा था। उसके श्वेत केश अस्त-व्यस्त हो, हवा में उड़ रहे थे। मुख की मुद्रा विकृत, दयनीय हो गयी थी। जबड़ों को उसने कसकर दबा लिया था। उसका वर्षों का धीरज आज टूट गया।

काउन्ट ने कुछ कठोर स्वर में कहा—जाओ।

प्लाँशे चला गया।

काउन्ट भी धीरे-धीरे सुनहरी कुर्सी से उठा।

[३]

जब काउन्टेस ने महीनों बाद लौटकर काउन्ट के कमरे में प्रवेश किया, उसका हृदय वेग से धड़क रहा था। उसके ललाट में बल पड़े हुए थे। काउन्ट उसे देखते ही पहिले की भाँति प्रसन्न हो उठ खड़ा हुआ। उसने बढ़कर काउन्टेस के होठों को चूमा। काउन्टेस ने पीछे खड़ी नर्स के हाथ से तीन महीने का शिशु काउन्ट के फैले हाथों पर रख दिया। उसके हाथ हिल रहे थे। काउन्ट के दृढ़ थे। मुस्कुराते हुए काउन्ट ने अपने हाथों को धीरे-धीरे उठाकर शिशु के ललाट को चूमा। काउन्टेस के मुख पर मुर्दनी-सी छाई हुई थी। उसने अपना मुख फेर लिया। काउन्ट ने धीरे-धीरे काउन्टेस का सिर सहलाया। फिर उस चिपटी नाकवाले बालक को प्रेम से देखा। उसके चेहरे पर जरा भी शिकन न थी। उसका स्वर स्पष्ट था, उसकी चेष्टा अविकृत थी।

काउन्ट ने धीरे-धीरे उँगली से अपनी हीरे की अँगूठी निकालकर नर्स की अनामिका में पहिना दी।

× × ×

दूसरे दिन औरों के साथ बाल्जाक भी काउन्ट को बधाई देने आया। उत्तर में काउन्ट ने उसे अपना कमरा स्वीकार करने का अनुरोध किया।

बालक के बप्तिस्मा के दिन पादरी ने पूछा—प्रिय काउन्ट, इस होनहार शिशु का धर्म-पिता कौन महाभाग होगा ?

"फ्रांस के मुख्यतम कलाकार और दि गीमे परिवार के प्रिय मित्र बाल्जाक के रहते आपका प्रश्न कुछ शिथिल-सा हो जाता है, पिता।" बाल्जाक की ओर देखते हुए काउन्ट ने हँसकर उत्तर दिया।

स्वभाव से ही निर्भीक बाल्जाक की भौहों पर कुछ बल पड़ गये। उसने धीरे-धीरे आगे बढ़कर शिशु को गोद में उठा लिया। लोग वेदी की ओर बढ़े।

[४]

कुछ साल और बीते। काउन्ट स्वस्थ था, पूर्ववत्। काउन्टेस अब रुग्ण रहा करती। काउन्ट ने उसे दक्षिण की ओर प्रोवेन्स और इटली को भेजा; परन्तु कुछ लाभ न हुआ। वह स्वयं उसे लेकर आस्ट्रिया के स्वास्थ्यकर चश्मों के पास बैठा; परन्तु काउन्टेस की खोई छवि फिर न लौटी। काउन्ट और काउन्टेस पेरिस लौटे।

बाल्जाक की लेखनी सदा की भाँति तीव्रता से चलती रही। फ्राँस का गद्य-साहित्य उसने भर दिया। वह चमक उठा। उसका धर्मपुत्र उसके पैरों के बीच खेला करता। बा······' को उस बालक से भी विशेष प्रेम न था। लेखनी और कागज से उसका सौहार्द्र था, जिसमें समय के आघात से कोई क्षति न हुई। काउन्ट का कमरा अब उसका था। उसमें बैठा वह नित्य

नवीन कल्पनाओं में साँस भरता और फ्राँस जाति उसपर गर्व करती। विदेशी साहित्यकार उसकी कृतियों का अनुवाद कर उनका रस लेते, उसका गुणगान करते। उसकी प्रत्येक कृति को काउन्टेस उदासीन भाव से देखती; परन्तु उदार काउन्ट प्रत्येक पर बाल्जाक की प्रशंसा में टिप्पणी लिखता।

× × ×

रात्रि की नीरवता में काउन्ट के कमरे का दरवाजा खुला। रात आधी से अधिक बीत चुकी थी, परन्तु काउन्ट पर्यंक पर चुपचाप पड़ा जाग रहा था। काले लबादे से ढँकी काउन्टेस को उसने पहिचाना। पर वह कुछ बोला नहीं।

काउन्टेस ने दबे पाँव प्रवेश किया और सीधी वह काउन्ट के पलंग की ओर बढ़ी। काउन्ट स्वाभाविक साँस लेता पड़ा रहा। काउन्टेस ने पलंग का पर्दा उठाकर एक काला लिफाफा काउन्ट के सिरहाने रख दिया। क्षण भर के लिए झुकी काउन्टेस की भींगी साँसों की वायु काउन्ट की गरम साँसों से मिली। काउन्टेस ने पलंग के पास घुटने टेक दिए, फिर वह धीरे-धीरे कमरे से बाहर निकल गयी।

काउन्ट चुपचाप पड़ा रहा। उसने लिफाफा नहीं खोला। शायद, इसलिए कि काउन्टेस को प्रातःकाल से पूर्व उसका पढ़ा जाना वांछनीय न था। सुबह रोज के समय उठकर काउन्ट ने काउन्टेस का पत्र पढ़ा। फिर उसने धीरे-धीरे उसे लिफाफे में रख-कर पास की जलती आग में डाल दिया।

काउन्ट ने घण्टी बजाई।

प्लाँशे ने दबे पाँव प्रवेश कर, सिर झुका लिया।

"चाय तैयार है, प्लाँशे?" काउन्ट ने पूछा।

"हाँ श्रीमन्।" प्लाँशे नतमस्तक हो बोला।

प्लॉशे की गरदन की नसें आज फिर फूली हुई थीं, उसकी वाणी आज फिर विकृत थी, उसकी आँखें आज फिर भरी हुई थीं।

"श्रीमन् काउन्ट!" उसने कुछ कहना चाहा।

"मैं चाय पीने चलता हूँ, प्लॉशे।" काउन्ट की तीव्र वाणी ने उसे कुछ कहने न दिया।

नित्य की दृढ़ गति से काउन्ट ने चाय के कमरे में प्रवेश किया।

× × ×

'बाल्जाक' को भी एक पत्र मिला था। उसका चित डाँवा-डोल था। सारा दिन वह अपने कमरे में टहलता रहा। भीतर से उसने कमरा बन्द कर लिया।

सारा पेरिस सोता था। ऊपर के कमरे में खिड़की के पास बैठा काउन्ट आकाश की ओर देख रहा था। उत्तर की ओर कुछ आहट-सी हुई। उसने देखा, प्रासाद की पिछली खिड़की से एक जन धीरे-धीरे उतर गया। काले लबादे से ढका उसका स्थूल शरीर कठिनता-से पतली खिड़की से निकल सका।

प्लॉशे ने कुछ देर बाद चुपचाप खिड़की बन्द कर ली।

मिट गये

[१]

"इलीविच ! मेरे प्यारे भाई, जरा किवाड़ खोल दे"—दस वर्ष की एक बालिका ने कहा—"उफ् ! हवा बिना भी तो—प्राण न बचेंगे"।

"हवा बिना तो प्राण बच जायँगे, प्राव्दा ! पर जिस हवा के हम आज तीन रोज से शिकार हो रहे हैं। उसका प्रवेश होते ही दम निकल जायगा। देख, मेरी प्राव्दा ! तू जरा खसककर मेरी पीठ से और आ लग। आगे मेरी गोद में जोशिया दुबका हुआ है"। चौदह साल के इलीविच ने काँपते हुए कहा।

बालिका चुप हो रही और खसककर भाई की पीठ से सट गयी। मारे सर्दी के उसके दाँत कटकटा रहे थे। हाथ-पावों का हिलना-डुलना बन्द-सा हो गया था।

प्राव्दा ने पूछा—इलीविच ! भला माइखेल का क्या हाल है ? कल उसने वह दर्दभरी चीख मारी थी !

"आह ! मेरी प्राव्दा, माइखेल की वह आखिरी चीख थी, पर वह चीख कल की नहीं, परसों की भी नहीं, चौथे रोज की थी। मेरी सूधी प्राव्दा, तुझे नहीं पता तेरा जीवन, मृत्यु के संघर्ष से

वापस लौटा है। तू तीन रोज से बेहोश थी। आज तीसरे दिन तेरी बेहोशी दूर हुई है।"

"तो क्या माइखेल चल बसा ?"

"माइखेल चल बसा, और मिकाया और निभनी भी।"

"ऐं! मिकाया और निभनी भी ?"

"हाँ मिकाया और निभनी भी; और..."

"रहमकर, इलीविच, अब और क्या कहेगा ? इससे भी भीषण खबर और क्या होगी ? जोशिया तेरी गोद में सोया है। प्यारे जोशिया के निस्बत कुछ और न कह। मेरे भले भाई, जरूर वह तेरी गोद में सो रहा है।

प्राव्दा चुप हो रही। इलीविच भी चुपचाप सुनता रहा। बाहर कलेजे को छेद देनेवाली और हड्डियों को हिला देनेवाली सर्द तीखी हवा बह रही थी। बर्फ बेशुमार गिर रही थी। अँधेरी रात में जब अपने ही हाथ नहीं सूझते थे, इलीविच चुपचाप आँसू बहा रहा था। उसका बाप जारशाही का शिकार होकर कोड़ों से कैद में मरा था। माँ पहिले ही आत्म-हत्या कर चुकी थी। माँ-बाप, किसी ने बच्चों की यह दर्दभरी मौत न देखी। हफ्ते भर पहिले से ही घर में दाना न था। बड़ा भाई निभनी एक बुक-स्टाल पर नौकर था। वही इस परिवार की आशा, इसका पोषक था। आज पाँच दिनों से मौसिम का यही हाल था। निभनी तेरह मील फटे कपड़ों में टूटे जूते पहिने न्युमानिया लिये घर पहुँचा था। अन्न और कपड़ों के अभाव में परिवार का परिवार मरा जा रहा था। निभनी, निकाया और माइखेल बारी-बारी से तड़पकर चल बसे थे। इलीविच चुप था, प्राव्दा निःशब्द थी और चार वर्ष का जोशिया भाई की गोद में दुबका पड़ा था।

प्राव्दा ने कहा—भाई, अगर उधर आ जाती, तो जोशिया दोनों ओर से ढका रहता। सर्दी से कुछ रक्षा होती।

भाई कुछ न बोला।

प्राव्दा के हाथ-पैरों ने करीब-करीब जवाब दे दिया था, पर वह लुढ़कती हुई जोशिया के पीछे जा पहुँची और उसने लगभग अपना सारा भार उसकी पीठ पर डाल दिया।

फिर उसने कहा—हाय मेरा निभनी ! हाय मेरी निकाया ! हाय मेरा माइखेल !

प्राव्दा की हिम्मत टूट गयी। सिसकियाँ बँध गईं। इलीविच ने उसे चुप कराने की, हिम्मत दिलाने की चेष्टा न की। चुपचाप वह रोता रहा। उसके आँसू अपने आप निकले और अपनी ही गर्मी से अपने आप सूख भी गये। किसी ने गरीब के आँसू नहीं पोंछे।

कल से हवा शान्त है, पर अब तक पुलिस के डर से कोई पड़ोसी इस गरीब अभागे परिवार की सहायता के लिये नहीं पहुँचा। धीरे-धीरे प्राव्दा के हाथ-पैरों में गर्मी आने लगी। इलीविच सारा दिन, सारी रात न जाने किस चिन्ता में निमग्न रहा। प्राव्दा ने उसका स्वप्न तोड़ा।

उसने पूछा—हमारे हाथ-पैरों में गर्मी आ गयी है; पर जोशिया क्यों अभी तक इतना ठंढा है। अभी तक क्या वह सो रहा है ?

"मैं भी यही सोचता था कि जोशिया सो रहा है, प्राव्दा।"

प्राव्दा को मरणान्तक चोट लगी। उसने जोशिया को हिलाया। जोशिया अकड़ गया था।

प्राव्दा ने पूछा—इलीविच, अरे क्या जोशिया बेहोश है ? बोलता क्यों नहीं ? क्या वह सो रहा है ?

"हाँ, वह सो रहा है, प्राव्दा। जोशिया सो रहा है। पर वह सुख की नींद सो रहा है। हमारी तुम्हारी गोद में नहीं, माँ-बाप की प्यारी सुखद गोद में, जहाँ उसे जार के कज्जाकों का भय नहीं।" इलीविच ने दाँत पीसते हुए कहा।

प्राव्दा रो पड़ी। उसका चीत्कार भीतर बाहर गूँज उठा। हिचकियाँ बँध गईं। उसने जोशिया को कसकर छाती से चिपका लिया और लगी उससे बात कर-कर रोने।

उसने कहा—जोशिया, तू भी चल बसा? क्या तेरी लाश को हम दो दिन दो रातें गोद में दबाये पड़े रहे? कहाँ है वह झूठा धनियों की रक्षा करनेवाला ईश्वर? कहाँ है वह खुदा का दयावान बेटा और कहाँ है उसका वह गरीबों के बहिश्त का राज्य?

"सब झूठ है प्राव्दा! यह ईश्वर और उसका राज्य। यह ईश्वर धनियों द्वारा गरीबों को ठगने का व्यापार है, एक भ्रान्ति है"—इलीविच ने प्राव्दा को जोशिया से अलग करते हुए कहा।

प्राव्दा गुस्से से ईश्वर और जार को कोस रही थी और आँसुओं से उसकी ओढ़नी तर हो रही थी।

इलीविच ने उसके आँसू पोंछते हुए शान्ति और दृढ़ता-पूर्वक कहा—प्राव्दा, इसमें अपना हाथ नहीं था। जार और वह धनियों का खुदा दोनों गरीबों के विरुद्ध षड्यन्त्र रच रहे हैं। हम दोनों को मिटा देंगे। पर आह! तू रोती है। छिः, प्राव्दा, तू रोती है?

प्राव्दा के आँसू सूख गए। ओज से उसका मुख मण्डल गम्भीर हो उठा।

उसने काँपते हुए स्वर में कहा—इलीविच, रोने में क्या रखा है ? नहीं रोऊँगी। घड़ी भर पहले जी चाहता था कि मर जाऊँ, पर नहीं मरूँगी। जीऊँगी और जीऊँगी प्रतिशोध के लिए। आओ, जोशिया के शव को स्पर्श कर शपथ करें।

दोनों ने जोशिया के शव के दोनों ओर घुटने टेक दिए। दोनों के हाथ मृत भाई के ऊपर थे।

जब इनकी मदद के लिए दयावान पड़ोसी रश्या ने हिम्मत करके इनके द्वार पर आवाज दी, कोई नहीं बोला। पर जब उसने दरवाजे पर धक्के दिए, तब कमजोर किवाड़ों का एक पल्ला टूटकर माइखेल की लाश पर जा गिरा और जब पड़ोसी ने भीतर कमरे में प्रवेश कर अपनी आश्चर्य और दुखभरी नजर डाली तो उसके कानों ने इलीविच और प्राव्दा की शपथ सुनी—

"जोशिया की शपथ, इस घर के बाकी मृतकों—निफ्नी, मिकाया और माइखेल—की शपथ, और जारशाही के शिकार हमारे मृत माता-पिता की शपथ, हम इस राजसत्ता का नाश कर देंगे।"

इन शब्दों में कम्पन और दृढ़ संकल्प था।

[२]

सात वर्ष बाद।

अब प्राव्दा सत्रह साल की थी और इलीविच इक्कीस का। प्राव्दा का सौंदर्य निखर आया था। गाँव की पली लड़की स्वास्थ्य और ताजगी की मूर्ति थी। उसकी चाल-ढाल में, रहन-सहन में, अल्हड़पन भरा था। भाई के साथ अपने पन्द्रहवें वर्ष में ही वह पेट्रोग्रेड आ गई थी और वहाँ वह क्रान्तिकारियों के अड्डों में भलीभाँति परिचित हो चुकी थी। भय का उसमें नाम

तक न था। पेट्रोग्रेड की बागी स्त्रियों का उसने अद्भुत संगठन कर रखा था।

उसका भाई इलीविच प्राव्दा का राजनीतिक गुरु था। उसी की देख-रेख में प्राव्दा का चरित्रगठन हुआ था, बहुत कुछ उसी के अनुरूप। साहस और गर्व का इलीविच केन्द्र था। उसके और प्राव्दा के सिर पर जार सरकार की ओर से हजारों रुबुल के इनाम घोषित हुए थे। सैकड़ों जासूस उनकी खोज में थे—कुछ द्रव्य के लालच से, कुछ नाम और प्रतिष्ठा के लिए। पर प्राव्दा और इलीविच का पाना कुछ आसान न था। इनके पकड़े जाने का मतलब था सैकड़ों कज्जाकों की लाशों का ढेर। फिर इनका पता भी अज्ञात था। इलीविच का बाहर आना-जाना तो खतरे से खाली नहीं था परन्तु प्राव्दा पेट्रोग्रेड की स्त्रियों की आँखों की पुतली थी और उसका घरों के भीतर बहुत दिनों तक छिपे रहना कुछ कठिन न था। दिन-रात दोनों छिपे नेताओं की भाँति क्रान्ति का प्रचार कर रहे थे।

इलीविच तथा दूसरे नेता लिखते थे और प्राव्दा अपनी साथिनों के जरिये मजदूर और कृषकों के अड्डों पर क्रांतिकारी साहित्य पहुँचाती थी। पुलिस दिन-रात उनकी खोज में लगी रहती; पर उनका रहना एक स्थल पर नहीं होता था—आज यहाँ तो कल वहाँ।

प्राव्दा का कार्य पूरा हो चुका था, पर शीघ्र उसके भाग्याकाश में अभाग्य के बादल घुमड़ने लगे। सन सोलह की पहिली मई दिन (मे-डे) पेट्रोग्रेड में क्रान्ति के लिए निश्चित था। प्राव्दा और इलीविच अन्य नेताओं के साथ देहातों से नगर में एक हफ्ता पूर्व ही आ गये थे। रोज आधी रात के समय विभिन्न स्थानों पर वे गुप्त-समिति की बैठकों में शरीक होते थे।

तीन दिन पहिले ही जार की खुफिया पुलिस को प्राव्दा के गुप्त निवास का पता चल गया। नगर के पुलिस असिस्टेण्ट कमिश्नर ने आधी रात के समय उसके ठहरने के मकान पर छापा मारा और उसे घेर लिया। सामने के ही मकान में इलीविच ठहरा हुआ था।

प्राव्दा के साथ तीन व्यक्ति और थे। सैकड़ों कज्जाकों ने हमला किया था और यह संभव न था कि कोई प्राणी जीता भाग जाय। प्राव्दा ने आत्मरक्षा के लिए लड़ना ही उचित समझा। उसने जान लिया कि मेरा अन्तिम समय अब निकट आ पहुँचा है।

एकाएक छत से पुलिस पर गोलियाँ दगने लगीं। कई गिरे, कई कराह उठे। असिस्टेन्ट कमिश्नर ने हुक्म दिया—घर में आग लगा दो। आग तत्क्षण लगा दी गयी। धुआँ उठने लगा। छत जल उठी। बीसों जवान नीचे सड़क पर गिर गए। पीछे, लता की घनी आड़ में उसी के सहारे प्राव्दा उतरने लगी। नीचे चारों ओर गैस और बिजली की रोशनी से दिन का-सा उजाला हो रहा था; परन्तु प्राव्दा दीवार और लता के बीच अँधेरे में उतर रही थी।

सामने की छत से इलीविच ने प्राव्दा का नीचे उतरना देख लिया था। उसका हृदय धड़कने लगा। अपने दोनों हाथों में उसने कसकर रिवाल्वर दबा लिये। एक-एक क्षण सालों की तरह बीत रहा था। नीचे की ओर प्राव्दा आँखों से ओझल हो गयी। किनारे, कोने की तरफ इलीविच दौड़ पड़ा। वहाँ से उसने देखा—बड़ी सावधानी से, छाया-सी प्राव्दा धीरे-धीरे उतर रही थी। सहसा प्राव्दा ने नीचे कुछ देखा और उसके हाथ से रिवाल्वर गिर पड़ा। उसके हाथ का सहारा छूट गया।

उसने एक चीख मारी और वह नीचे आ रही। इलीविच भी चीख उठा।

पर प्राव्दा जमीन पर नहीं गिरी, असिस्टेन्ट कमिश्नर मुत्किन की खुली बाहुओं के बीच गिरी।

मुत्किन ने कहा—प्राव्दा, तुम इन आखों को धोखा नहीं दे सकती। मैंने तुम्हें देख लिया था और यह कितना अनुचित होता अगर तुम्हारी कोमल देह इन बाहुओं के बजाय उन नुकीले पत्थरों पर गिरती।

इलीविच ने ये शब्द स्पष्ट सुने। वह अँधेरे में तनकर खड़ा हो गया। अपने रिवाल्वर उसने और कसकर पकड़े।

प्राव्दा ने मुत्किन के ऊपर थूक दिया और वह उसके हाथ झटककर निकल गयी। पर बीसों कज्जाकों ने उसे जकड़ लिया।

मुत्किन ने दाँत पीसते हुए कहा—प्राव्दा, इन्हीं हाथों से तुम्हारी सुन्दर माँ को मैंने हृदय से लगाया था; पर उस अभागिनी ने आत्महत्या कर ली और इन्हीं हाथों तुम्हारा अभागा पिता कोड़ों का शिकार हुआ। आज इन्हीं हाथों तुम्हें अपनी छाती से इस प्रकार कुचल डालूँगा।

मुत्किन प्राव्दा की ओर झुका और उसने जैसे ही चाहा कि उसे हाथों में ले ले, उसके मुँह पर उसने थूक दिया।

प्राव्दा और इलीविच दोनों ने एक साथ अपने दुःख के कारण को पहिचाना। इस मुत्किन की तरक्की उनके कुटुम्ब के नाश के परिणाम स्वरूप हुई थी।

सनासन दो गोलियाँ आयीं और वे कज्जाक, जो प्राव्दा को पकड़े हुए थे, गिर गये। सैकड़ों इलीविचवाले मकान की ओर दौड़ पड़े। मुत्किन ने स्वयं एक हाथ से प्राव्दा को पकड़ रखा था, दूसरे से उसका मुँह बन्द कर लिया था। प्राव्दा मुक्ति के

लिये छटपटा रही थी। उसे अपना भविष्य मालूम था। अब वह केवल मृत्यु का आवाहन कर रही थी। सहसा एक और गोली आयी और मुत्किन की मोटी कलाई टूट गयी। दूसरे हाथ से जैसे ही उसने अपनी कलाई पकड़ी, वह लुढ़क गया। इलीविच ने दूसरी गोली से उसका काम तमाम कर दिया था।

इलीविच क्रोध के कारण कुछ असावधान हो चला था। वह पकड़ गया और कज्जाकों ने उसे उसकी प्राव्दा के पास खींच लिया। बाद में इलीविच की नजरों के सामने वह घटना घटी जिसने रूस के इतिहास में उसकी पुलिस के कारनामों पर गहरी छाप डाल दी। मुत्किन की मृत्यु के पश्चात् उसके कज्जाक प्राव्दा पर टूट पड़े और इलीविच के देखते-देखते उन्होंने उसपर वे अत्याचार किये जिनका उल्लेख लेखनी नहीं कर सकती। नर-पिशाचों ने पुरुषत्व का वह उपयोग किया जिससे संसार का बड़े से बड़ा नृशंस भी सिहर उठता।

इलीविच ने अपनी आँखें मींच लीं।

प्राव्दा का शरीर थोड़ी ही देर में संज्ञा खो बैठा और वह कुछ ही घण्टों में निर्जीव होकर मुक्त हो गयी।

[३]

इलीविच अपने सहकारियों की सहायता से सैकड़ों सन्तरियों के पहरे से निकल भागा। उसके प्रतिशोध से मास्को और पेट्रोग्रेड की पुलिस काँप उठी। बारह सौ कज्जाक सैनिक और अफसर एक साल के भीतर उसके अचूक निशाने के शिकार हुए। शांतिमयी निर्दयता से उसने मुत्किन के सारे कुटुम्बियों को मार डाला। उसके नाम से जार की खुफिया पुलिस थर्रा उठती थी।

पर, इलीविच अपने कार्य की सफलता न देख सका। सन् सत्रह की सफल क्रांति में जब प्रजा जार का क्रेमलिन नामक विशाल प्रासाद घेरे खड़ी थी, जार की सेना ने गोलियाँ चलायीं। गोलियाँ थोड़ी ही चलीं; पर इन्हीं में से एक अचानक इलीविच के कक्ष में आ लगी और वह वीर सदा के लिये सो गया।

अभागे इलीविच की प्रतिज्ञा पूरी हुई, पर उसने न जाना कि कुछ ही घंटों के बाद उस क्रान्ति की विजय हुई जिसके लिये उसने और उसके सारे परिवार ने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया था!

मेरे जीवन का आश्चर्य

कौतूहलवश मैं उसके साथ हो लिया। उसके शब्दों में कुछ ऐसा जादू था, कुछ ऐसी बेबसी थी कि मैं अपने को रोक न सका। विवेक रह-रहकर कह-सा रहा था—कुछ सोच ले, कहाँ जा रहा है। परन्तु पौरुष धिक्कार उठता—छिः एक अबला के साथ जाने में तुम्हें कैसी घबराहट होती है, कैसा भय? करुणा भी पौरुष का साथ देती, विशेष कर जब वह बीच-बीच में रुककर कातर नेत्रों से लौट-सी पड़ती और कहती—"बस, अब आ पहुँचे, अब अगले मोड़ के बाद ही।"

परन्तु वह अगला मोड़ नहीं आया। आया सही, मोड़ तो कितने ही आये; परन्तु वह मोड़ जहाँ उसने हमारी मंजिल के अन्त होने की आशा दिलायी थी, नहीं आया। जब-जब मोड़ आता, मुझे आशा होती, वह अब रुकेगी। परन्तु मोड़ों पर, जब वह दूसरी गली में प्रवेश करती, उसकी गति विशेष तेज हो जाती। शायद तब वह मुझे अवसर न देना चाहती कि मैं मोड़ पर यात्रा खतम होने की बात पूछूँ। एक गली में दूसरी निकल पड़ती, दूसरी में तीसरी, फिर चौथी और फिर पाँचवीं। बिजली

की रोशनी भी अब भीतर की ओर नहीं के बराबर थी। प्रधान सड़कें कब की छूट चुकी थीं और आज से करीब तीस वर्ष पूर्व, जब की यह बात है, शंघाई की गलियों में बिजली का प्रबन्ध न था। बिजली केवल मुख्य सड़कों पर ही जलती थी; गलियों में साधारण स्ट्रीट लैम्पों की ही रोशनी होती थी।

जब गलियों के धुँधले प्रकाश में चलते-चलते कुछ देर हुई, मेरी उत्सुकता बेहद बढ़ चली। रह-रहकर जब-जब म्युनिसिपैलिटी का वह अभागा डूबता-सा प्रकाश मिलता, मैं अपनी घड़ी देखता। बारह बज चुके थे। जाड़े की रात, अजनबी के साथ, वह भी नारी और विदेश में अपरिचितों के बीच, जी ऊब गया। नहीं, नहीं, 'ऊबना' गलत शब्द है। यदि मैं अपनी तब की स्थिति को आज तीस वर्षों बाद ठीक-ठीक याद कर सकता हूँ, तो मुझे इसे 'ऊबना' न कहकर 'डरना' कहना चाहिये! मैं वास्तव में डर गया था। आधी रात का समय न्यूयार्क अथवा पेरिस में कुछ विशेष अर्थ नहीं रखता; बड़ी चहल-पहल रहती है और उस अलौकिक दिव्य देश फिनलैंड और नारवे के हेलिसकी और आस्लो में जून में तो दो बजे प्रातः सूर्य डूबता और डूबने के पूर्व ही फिर उसी क्षितिज पर निकलने भी लगता है। परन्तु मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि न्यूयार्क और पेरिस में, विशेषकर गलियों में, भय की बात नहीं होती। विदेशी के लिये तो सचमुच ही सर्वत्र आपत्ति की आशंका हो सकती है और न्यूयार्क में तो तस्कर भयावह हैं ही। विदेशियों के लिये तो वे ही प्राचीन 'के० के० के०' * के प्रतिनिधि से हैं। परन्तु इतना अवश्य है कि वहाँ आधी रात तक गलियों तक में

---

*क्यूक्लक्स क्लान—अमेरिकन आतंकवादियों की गुप्त संस्था।

सज्जन मिल जाते हैं। आस-पास के घरों में रोशनी चमकती रहती है, जन-स्वर सुनाई पड़ता है और इससे पथिक किसी कारण सर्वथा हताश नहीं होता। पुकारने पर कुछ मदद भी मिल सकती है। स्थान-स्थान पर, जो परस्पर दूर नहीं होते, टेलीफोन भी लगे रहते हैं, आदमी झट जरूरत पर उनका इस्तेमाल कर सकता है। परन्तु शंघाई की गलियाँ! पूर्वी जगत् का छोर!

खैर, मैं कहाँ से कहाँ जा पहुँचा। बात कुछ ऐसी है कि उस समय की अपनी अवस्था बताने के लिये इन बातों का कहना भी कुछ आवश्यक हो गया है। अच्छा, तो मैं फिर उस औरत की धुन में चला। एक फर्लांग, दो, तीन, चार। अब धीरज टूटने लगा। पैर शिथिल होने लगे। हृदय में डर भरने लगा। उस स्त्री से यह पूछते लज्जा होती थी कि अब कितनी दूर है। हिम्मत बाँध कर कुछ दूर और चला। फिर धीरे-धीरे कुछ डरती, काँपती आवाज में मैंने पूछा—"क्यों, क्या अभी दूर है? हम अब काफी दूर आ चुके हैं।"

बड़े मधुर कातर शब्दों में उसने उत्तर दिया—"बिल्कुल पास। बस, अब हम आ पहुँचे हैं। यही अब कुल पाँच मिनट का रास्ता और है।"

दम साधे मैं फिर चल पड़ा। जब-जब मोड़ पर वह शंघाई म्युनिसिपैलिटी का धुँधला धुँआ-सा प्रकाश मिलता, मैं अपनी घड़ी देखता। उसने कहा था—पाँच मिनट। पाँच मिनट कब के बीत चुके, दस मिनट बीते, पन्द्रह, बीस, पच्चीस, तीस। आध घंटा सुनसान, अपिरिचित स्थान में, आधी रात के समय बहुत होता है और समय के दौरान से कहीं बढ़कर उसका प्रभाव मनुष्य के मस्तिष्क पर पड़ता है। सो पूरा-पूरा मुझपर भी पड़ रहा था। पहले तो चूँकि वह रास्ते में बोलती भी जाती

थी, कुछ पता नहीं चला; परन्तु अब जब संसार सोया पड़ा था, रात्रि अपनी भयंकरता का पूरा-पूरा उद्घाटन कर चुकी थी, और जब उस स्त्री ने अपनी वाणी मूककर केवल चाल की तेजी पर ही जोर डाला था, मैं घबड़ा-घबड़ाकर रुक जाता था। फिर चल पड़ता था। यह बात याद आती कि न्यूयार्क और अन्य बड़े शहरों में किस प्रकार ऐसे समय में डाकू आक्रान्त करते रहते हैं, कैसे ऐसे ही समय में नर-हत्याएँ होती हैं। फिर शंघाई और हवाई तो अद्भुत रहस्यमय स्थल हैं। कौन जानता है, इस विशाल नगर में ही नर-हत्याएँ इस समय न हो रही हों। और फिर बस, मेरी विचारों की धारा यहीं रुक गयी, क्योंकि आगे मैंने बड़ी ही भीषण अवस्था की कल्पना की। कौन जाने, अन्य स्थल तो दूर रहे, इसी गली में कहीं मेरा ही...?

मैं घबड़ा उठा। निस्सन्देह मेरी अवस्था अजीब हो उठी। अपनी आशंका और विपत्ति की घनता स्वीकार करते मुझे आज कुछ लज्जा भी होती है; परन्तु लज्जा से कहीं बढ़कर उस अवस्था की याद से मुझे आज भी डर का आभास होता है। मैं बहुत ही डर गया था। विशेषकर तब जिस समय मुझे यह ख्याल हुआ कि यदि अनिष्ट की संभावना हो, तो शंघाई की इस गली और इस एकाकी स्थान से बढ़कर उसके लिये उपयुक्त और कौन स्थान हो सकता है? फिर उस निर्जनता में मेरे जूतों के शब्द भी ऊँचे प्रतीत होने लगे। उनकी प्रतिध्वनि मुझे और भयभीत करने लगी। उस स्त्री के पास तो जूते भी न थे।

मैंने एक बार और शक्ति का संचय किया और उससे पूछा—"क्या हम अपने स्थान पर पहुँच रहे हैं?"

फिर अपने भय और उद्वेग को छिपाने के लिये मैंने कहा—"बात यह है कि दो बजे मेरा जहाज कोबे के लिये छूटनेवाला है और इस समय एक बज चुका है।"

"बस, अब पहुँच ही गये। आपको तो मैं समुद्र-तट पर ही लिये जा रही हूँ, जो आपके जहाज से बहुत दूर न होगा। एक घंटा तो बहुत है।" उसने कुछ हँसते हुए कहा।

"मैं इस बात को भली-भाँति समझ रही हूँ कि एक विदेशी को इस प्रकार अपनी धुन में ले जाना न केवल एक अजीब बात है, बल्कि मैं इस समय की आपके धर्म-संकट की बात भी समझ रही हूँ। न तो आप पीछे ही लौट सकते हैं और न एक स्त्री की भिक्षा ही ठुकरा सकते हैं। आप सचमुच ही सोच रहे होंगे कि क्यों उसके साथ जाना स्वीकार किया। मैं केवल इतना ही कह सकती हूँ कि जब आपको मेरी वास्तविक दशा का ज्ञान होगा, तो आप मेरी इस सजीवता और साहस पर आश्चर्य करेंगे और फिर दु:ख भी। बस, थोड़ी दूर और। मैं विनय करती हूँ, बढ़े आइये।" उस पूर्ण भाषा में जिसमें अपने मत एक अँग्रेज प्रकट करने में गर्व करता, उस मेरी पथ-प्रदर्शिका ने मुझसे कहा। उसके धीमे मधुर शब्दों में असाधारण दृढ़ता थी।

अपनी बात कह वह और तेज चल पड़ी। मैं मंत्र-मुग्ध-सा फिर उसके पीछे चल पड़ा। उसने अपने वक्तव्य में सचमुच वही बात कह दी जो मैं अब सोच रहा था। सचमुच ही मैं बड़े धर्म-संकट में था—न तो मैं पीछे ही लौट सकता था और न आगे ही मेरे पैर पड़ते थे। वास्तव में मैं सोच रहा था कि क्यों मैंने इसके साथ जाना स्वीकार किया। मैं चकित था उसकी विचक्षणता पर। उसकी विपत्ति तो यथार्थ में उसकी

कातरता से ही लक्षित होती थी, उससे कहीं बढ़कर उसकी मेधा थी। और मैंने इस बात को विशेष प्रकार से स्थिर किया कि विपत्ति में पड़कर बड़े-बड़े मेधावियों की बुद्धि भी चरने चली जाती है; परन्तु यद्यपि इस सुन्दरी का रूप कष्ट और चिन्ता से कुछ विकृत हो गया है, अवश्य ही उसकी मेधा और उससे प्रादुर्भूत उसके युक्तिपूर्ण तर्क की शक्ति सुरक्षित है, अद्भुत बनी है।

सोच तो मैं अवश्य रहा था कि इस स्त्री के साथ आकर मैंने उचित नहीं किया। परन्तु मैंने स्वयं अपनी इस आशंका का उत्तर दिया—कौन उस अवस्था में, रात्रि की निर्जनता में, एक सुन्दरी की याचना को ठुकराता, जब उसमें सिवा इसके कुछ नहीं करना था कि वह उसके साथ जाये, उसकी कहानी की सच्चाई के सबूत वह अपनी आँखों उसके निवास-स्थान पर देख आये और उसकी मुसीबत की कहानी न्यायी अमेरिका के पत्रों में प्रकाशित कर दे? विशेषकर जब यह अनुनय उस विदेशी की ही भाषा में इस शिष्ट रूप में की गयी हो, जिसके स्वर-विन्यास पर वह स्वयं न केवल आश्चर्य करे वरन् ईर्ष्या करे? फिर यह बात तब जब कि वह जानता हो कि चीन में अंग्रेजी बोलनेवाले और अच्छी अंग्रेजी बोलनेवालों की संख्या बहुत ही कम है? फिर मैं अमेरिकन होता हुआ, जब कि एक अबला अमेरिका की न्यायप्रियता की चेतावनी दे रही हो, क्योंकर उसकी विनय को ठुकरा सकता था। और न्यूयार्क के एक विशिष्ट दैनिक का उच्चपदस्थ संवाददाता होते हुए मुझमें तो, मैं स्वीकार करता हूँ, इतनी उद्दण्डता न थी कि मैं उसके प्रस्ताव को ठुकरा सकता जब कि न केवल इसी विचार से, बल्कि मानवता के आदर्शों के अनुसार भी मैं उसकी मदद करने के लिये सर्वथा तैयार था।

मेरी अवस्था इस समय पचास से ऊपर हो रही थी। संसार के मनोवैज्ञानिकों का मत है कि लगभग चालीस वर्ष की अवस्था में मनुष्य की बुद्धि परिपक्व हो जाती है। सो मैं उस अवधि को दस वर्ष से अधिक पूर्व ही पार कर चुका था। करीब एक दर्जन बार मैं योरोप के चक्कर लगा चुका था। पूर्व में भी कई बार घूम चुका था और स्वयं शंघाई में मैं तीन दफे पहले आ चुका था। विद्या-बुद्धि के जितने आँकड़े मनुष्य की आँख में ऊपर उठाते और इज्जत देते हैं उनको तो पर्याप्त रूप से मैं प्राप्त कर ही चुका था। वैसे भी मैं अपने को एक विशेष क्षमता और प्रतिभावाला व्यक्ति समझता था और यह मेरी समझ कुछ घमण्ड के कारण न थी। अधिकारी व्यक्तियों ने मेरा यह मूल्य मेरी आँखों में आँका और रखा था। फिर एक बात तो स्पष्ट थी कि संसार के भ्रमण और संवाददाता के रूप में मेधावी विचारकों से बारम्बार मिलने के नाते मैं अपने को साधारण जनसमूह से इतर समझ सकता था। इस बुद्धिबल का मुझे विशेष भरोसा था और मैंने सोचा, इस कारण मेरा उस स्त्री के पीछे चल निकलना किसी प्रकार भी बेजा न था।

परन्तु अब मुझे अपनी तर्कशक्ति में कुछ अविश्वास-सा होने लगा; कुछ ह्रास भी। मैं इसी उधेड़बुन में चला जा रहा था कि किसी स्टीमर ने सीटी दी। अब मेरा ध्यान आत्मवृत्ति से टूटा। मैंने सामने के धुँधले प्रकाश में देखा, वह मोड़ पर गली में तेजी से घूम गयी। मैंने सोचा—सीटी सम्भवत: मेरे ही स्टीमर 'वाशिंगटन' की है। अब मैं साफ बता दूँ कि इस स्त्री की कहानी में चाहे जितनी भी सचाई हो, चाहे जितनी विपत्ति की भी प्रचुरता हो, मैं उसके लिये अथवा किसी अन्य के लिये भी अपना स्टीमर छोड़ने को तैयार न था।

इस कारण यद्यपि उस खरगोश की चाल चलनेवाली के मैं बहुत पीछे था और इसका कारण न केवल उसकी गति की तीव्रता थी, वरन् स्वयं मेरे दिमाग की उधेड़बुन भी थी, मैं लपककर उसके पास तक पहुँच गया। उसने अपनी चाल तेज कर दी, परन्तु चाहे स्त्री कितनी भी तेज क्यों न चले पुरुष आखिर उसे पकड़ ही लेगा, खासकर जब कि वह अमेरिकन हो और इस प्रकार का अमेरिकन हो जो किसी पत्र का संवाददाता हो और जिसकी टाँगें इतनी लम्बी हों जितनी मेरी। मेरे पास अब समय न था। और स्टीमर की सीटी ने उस मेरी निर्जनता के त्रास को बहुत कुछ कम कर दिया था। ऐसा प्राय: होता है कि जब मनुष्य किसी अनागत भय की आशंका में डूबा हो, उसी समय यदि कोई ऐसी आकस्मिक घटना घटे जो उसके लिये विशेष महत्त्व की हो, तो वास्तव में उसका भय बहुत कुछ जाता रहता है। ऐसा प्राय: पुत्र अथवा ऐसे ही अन्य आत्मीय के संकट में मनुष्य को होता है। सो वह स्टीमर की सीटी मेरे लिये उसी आकस्मिक घटना-सी जान पड़ी। मेरा भय कुछ क्षण के लिए गायब हो गया। मैं तेज बढ़कर उसके बहुत पास पहुँच गया।

मैंने उससे पूछा—"मेरे स्टीमर की सीटी हो चुकी है, और आप संभवत: जानती हैं कि पन्द्रह मिनट में जहाज छूट जायगा।"

उस स्त्री ने कुछ उत्तर न दिया। वह मेरी बात के उत्तर में शायद और लपककर आगे बढ़ गयी। मेरी आशंका कुछ बढ़ गयी। परन्तु अब मैं उससे उत्तर लेने को उतारू था, क्योंकि जैसा मैं पहिले कह चुका हूँ, मुझे अपना जहाज छोड़ना अभीष्ट न था। खासकर इस कारण और कि अगले टिकाव के बन्दर

कोबे पर मेरी भारी डाक और संसार के कोने-कोने से आयी जरूरी चिट्ठियाँ मेरा इन्तजार कर रही थीं। मैंने अपनी चाल फिर बढ़ा दी। मेरा कन्धा करीब-करीब उसके कन्धे को छूने लगा।

मैंने उससे फिर कहा—"आपने मेरे स्टीमर की सीटी अभी सुनी है। मुझे उससे जाना ही होगा। शीघ्र लौटकर मुझे वहीं पहुँचा दीजिये।"

वह एकाएक रुक गयी, मेरी बात उसे कुछ धृष्ट-सी लगी।

उसने कहा—"जिस कार्य के लिये आप मेरे साथ चल रहे हैं, उसकी गुरुता आपके स्टीमर छोड़ देने से उत्पन्न होनेवाली हानि से कहीं बढ़कर है।"

वह फिर चल पड़ी। उसने जाना, इतना मेरे लिये काफी होगा। परन्तु मेरे पाँवों-तले जमीन सरक गयी। उसके इस हल्के जवाब को सुनने के लिये मैं तैयार न था। मैंने सोचा था कि मेरी बात सुनकर वह खेद प्रकट करेगी और शीघ्र मुझे बन्दर पर पहुँचाने के लिये घूम पड़ेगी, परन्तु उसके उत्तर ने मुझे उत्तेजित और उद्विग्न दोनों कर दिया।

मैंने दृढ़तापूर्वक पूछा—"आपने क्या उत्तर दिया?"

उसने अपना वह उत्तर दुहरा दिया। उस उत्तर में न तो किसी प्रकार की उतावली थी, न भय था। मैं परेशान था और मेरे क्रोध का पारा चढ़ा जा रहा था। मैंने सोचा, यह एहसान का अजीब पुरस्कार है।

"मैं अपना स्टीमर किसी प्रकार भी नहीं छोड़ सकता।" मैंने दृढ़तापूर्वक कहा। मैं यह कहते-कहते उसके मुँह के बहुत समीप पहुँच गया।

"क्या एक संभ्रान्त अमेरिकन का शिष्टाचार यही है?" उसने उत्तर में पूछा।

"जब याचना आदेश के स्थानापन्न हो चुकी है, तब संभ्रान्त अमेरिकन को लाचार होकर अपने शिष्टाचार की साधुता से उत्पन्न होनेवाली हानि को रोकने के लिये उसमें व्यतिक्रम करना पड़ा है।" मैंने भी उसी स्वर में उत्तर दिया।

उसने एक बार उपेक्षापूर्वक मेरी ओर देखा, फिर वह उसी तीव्र गति से बढ़ चली। पर मैं भी अब उसे छोड़नेवाला न था और रुक भी न सकता था; क्योंकि अब समय बहुत ही कम था—शायद केवल दस मिनट।

मैंने फिर एक बार बढ़कर जोर से कहा—"मैं कहता हूँ, मैं अपना स्टीमर किसी प्रकार भी नहीं छोड़ सकता।"

"यह आप कहते हैं और इसे मैं सुनती भी हूँ, परन्तु यही मैं नहीं कहती।" चलते ही चलते उसने कहा।

"आप मेरे कार्य-क्रम की विधायिका नहीं, उसका विधायक मैं स्वयं हूँ।"

"क्या सचमुच? यदि ऐसा होता तो क्या आप इस समय उस लंगर उठाते हुए स्टीमर पर न होते?"

सच ही, उसका कहना बहुत कुछ सही था। और वह उसी पूर्व गति से बढ़ती गयी।

"क्या आप सुनती हैं कि मैं अपना स्टीमर किसी प्रकार भी नहीं छोड़ सकता?" मैंने जोर से कहा और तेज बढ़कर करीब-करीब उससे टकरा गया

अब मुझे ऐसा मालूम होता है जैसे मुझसे विशेष क्रुद्ध होती हुई भी वह संयत हो बोली—"स्टीमर छोड़ना और न छोड़ना अब आप की शक्ति से परे है और वैसे मैंने आपको बाँध तो रखा नहीं है। आप सर्वथा स्वतंत्र हैं और अपनी इच्छा के अनुकूल आचरण कर सकते हैं।"

वह बढ़ती गयी। इसी समय स्टीमर की अन्तिम सीटी बजी—छूटने से पाँच मिनट पहिले की। मेरे धीरज का बाँध टूट गया और मेरे संयम की पराकाष्ठा हो गयी। मेरे मन में एक बार आया—आज यदि उस स्त्री की जगह कोई पुरुष होता। यदि वह कोई पुरुष होती, तो मैं उसे बहुत मारता, मारकर गिरा देता, यदि कहीं उस प्रत्युत्पन्न क्रोध से उसका खून ही न कर डालता। वह अब भी लगातार चली जा रही थी।

"खबरदार!" मैंने चिल्लाकर कहा, "यदि एक कदम भी आगे बढ़ी। मेरे हाथ में रिवाल्वर है, और वह भरा है।" और अपनी बात की सार्थकता सिद्ध करने के अर्थ अपने सामने और उसके पास की दीवार पर मैंने गोली छोड़ दी।

वह ठठाकर हँस पड़ी। मैं स्वयं अपनी गोली की आवाज से और उससे कहीं बढ़कर उसकी हँसी से चौंक पड़ा, वह रुक कर खड़ी हो गयी।

"तुम किसी डाकू-दल की सदस्या हो, इसका मुझे अब विश्वास हो गया है। मेरा स्टीमर तो छूट ही गया, पर तुम अब बताओ कि मुझे इसी समय बन्दर पर पहुँचाती हो या नहीं? मैं स्वयं इस बात को छिपाना नहीं चाहता कि मैं तुमसे समुचित बदला लूँगा।" मैंने फिर भी कहा।

वह एकाएक लौट पड़ी। मेरे पास आकर वह बोली—"सावधान, अमेरिकन! तुमने एक चीनी संभ्रान्त नागरिका का अपमान किया है, इस बात को तुम समझते हो। तुम्हारे स्टीमर के छूट जाने का दुख मुझे भी है; परन्तु मैं फिर भी तुमसे कहती हूँ कि जिस कार्य के लिये मैं तुम्हें लिये जाती हूँ, वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। तुम वहाँ पहुँचकर अपने जीवन के सबसे बड़े आश्चर्य का सामना करोगे।"

यह अन्तिम बात कहते-कहते उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। आह, उसका हाथ कितना कोमल था! उसकी आवाज कितनी दुर्बल थी, परन्तु साथ ही कितनी दृढ़! कोई उसकी बातों पर अविश्वास नहीं कर सकता था, इतनी शक्ति, इतना अनुनय उनमें था। मैं फिर हार गया।

परन्तु वह हार माननेवाली औरत न थी। उसने शायद जाना कि मैं जरूरत से ज्यादा बोल गया था। वह एक-एक वाक्य का उत्तर देने चली।

उसने कहा—"और तुम्हारी उद्दण्डता की बात, सो उसके निस्बत भा सुन लो। और सोचो, मैं एक अबला नारी अपनी विपत्ति से मजबूर, कृशांगी ठहरी और तुम छः फीट ऊचे विशाल असुर-से जवान और उसके ऊपर हथियार-बन्द!"

वह ठठाकर फिर एक बार हँसी।

"अगर तुम मुझे क्षति पहुँचाना चाहो," वह कहती गयी, "तो क्या उस शस्त्र के बगैर नहीं पहुँचा सकते? और मैं स्वयं निहत्थी अपनी रक्षा भी तो नहीं कर सकती। परन्तु क्षण भर सोचो, यदि मैं अपने बचाव के लिये चिल्लाऊँ तो लोग क्या कहेंगे? तुम्हारी क्या अवस्था होगी? इस सूनी गली में, इस विशाल शरीर के साथ-साथ हाथ में ऊपर से रिवाल्वर भरे जिसे तुम एक बार छोड़ चुके हो?"

वक्तव्य में प्रचुर अर्थ था। मैंने स्वयं उसका औचित्य देखा। ग्लानि से मेरा हृदय भर आया। वह कितनी युक्तियुक्त थी, मैं कितना तर्कहीन। मैं सर्वथा विजित हो गया। और एक बात। इसमें सन्देह नहीं कि उसकी वाणी की मधुरिमा और कर की कोमलता से मैं कुछ अव्यवस्थित हो गया था; परन्तु इस बात को मैं दावे के साथ कह सकता हूँ और यद्यपि सौगन्ध झूठे

लोग खाते हैं, परन्तु यदि जरूरत समझी जाय, तो मैं सौगन्ध तक खाने को तैयार हूँ कि उस स्त्री की ओर मेरा भाव आदर का बना रहा, विशेषकर उसके शौर्य को देखकर। मैंने अपना रिवाल्वर फेंक दिया। रह-रहकर गोली की आवाज मेरे कानों में गूँज-गूँजकर मेरा उपहास करने लगी। मैंने ईश्वर को अनेक धन्यवाद दिये कि स्त्री पर गोली छोड़ने की और उसे धमकाने की मेरी प्रवृत्ति एक ऐसे देश में हुई, जहाँ अफीम मानवता की शक्तियों को सुला देती है। मैंने एक बार सोचा—यदि कहीं यह रिवाल्वर की आवाज इस अवस्था में न्यूयार्क में हुई होती—और मैं काँप उठा।

स्त्री फिर चल पड़ी। मैं मन्त्रमुग्ध-सा उसके पीछे चला। अब मुझे स्टीमर के छूटने की परवाह न थी। सोचा—प्रात: केबिल देकर कोबे में अपना असबाब उतरवा लूँगा। मुझे अच्छी तरह याद है कि मेरी नेत्री फिर चक्करदार गलियों से होकर चलने लगी; और यदि मैं भूलता नहीं, तो कह सकता हूँ कि उस समय मुझे यह सकारण संदेह होने लगा कि कई बार उन्हीं गलियों से घूम-घूम हम दोनों निकले। फिर भी अब मुझे आधिभौतिक भयों से छुटकारा मिल चुका था। नि:शंक मैं उस गुरुतर कार्य के उत्तरदायित्व की ओर चुपचाप बढ़ता चला जा रहा था, जिसके प्रति उस असाधारण नारी ने कई बार मेरा ध्यान आकर्षित किया था।

रह-रहकर कुछ ढूँढ़ने का-सा स्वर दूर पर सुन पड़ने लगा और बाद में जब हम आस्मान के एक खुले खण्ड के नीचे निकले, मैंने उमड़ते समुद्र का गर्जन सुना। चार बज चले थे और दूर के पूर्वी आकाश पर कुछ लाली दौड़ चली थी। इसी समय मुझे लिये वह स्त्री एक छोटा मैदान पार कर विशाल भवन के प्राङ्गण में घुसी।

सहसा कई व्यक्ति प्रकाश लिये फिरते और किसी वस्तु को ढूँढ़ते दिखाई पड़े।

उनमें से एक उस स्त्री को पहिचान कर बोला—"अरे, वे तो यह आयीं।"

मैंने अब समझा, अवश्य यह स्त्री इसी संभ्रान्त परिवार की है, और अवश्य इस परिवार के लोग किसी बड़ी आफत में हैं। बात चीनी भाषा में कही गयी थी, जिसका मैंने अपनी यात्राओं में कुछ अभ्यास कर लिया था।

जैसे ही हम दोनों द्वार पर पहुँचे, प्रकाशवाहकों ने हमें घेर लिया। स्त्री भीतर घुस गयी, फिर एक गम्भीर व्यक्ति के साथ बाहर निकली।

उसके साथ के व्यक्ति ने पहले तो कुछ अपने आदमियों से—कुछ अपने आपसे कहा—"फिर आज वही बात!"

फिर उसने मुझसे बड़ी मीठी और अनुनयभरी अंग्रेजी में कहा—"महानुभाव, मैं बड़ा ही लज्जित हूँ। यह मेरी पत्नी है जो आपको यहाँ तक लिवा लायी है। यह आप जैसे अनेक व्यक्तियों को इसी प्रकार यहाँ ला चुकी है। आप मुझे क्षमा करें और साथ ही इसे भी। यह पगली है।"

अभिनय

[१]

"रोमा !"

"हाँ, मामा, क्या बात है ?"

"कहाँ की तैयारी है ?"

"जरा ३०४ तक जाऊँगी ।"

"३०४, बस ३०४, जब देखो तब ३०४ !"

रोमा चुप रही ।

उसकी माँ ने फिर कहा—रोमा यह तुम्हारा ३०४ वाला रोमान्स कब खतम होगा ?

"रोमान्स कैसा, मामा ?" रोमा बोली ।

"रोमान्स कैसा ? रोमान्स वही जो फ्रेडरिक तुम्हारे लिये प्रस्तुत कर रहा है ।"

"छि:, मामा, कैसी बात कहती हो ?"

"कैसी बात ! क्या झूठ कह रही हूँ ?"

"और नहीं तो क्या, मामा । मैं तो डचेज को देखने जा रही हूँ ।"

"डचेज ? कौन-सी डचेज ?"

"अरे, वही डचेज, मामा, जो इंगलैण्ड से आयी हुई है। उसकी तो सारे न्यूयार्क में धाक है।" रोमा ट्वायलेट रूम की खिड़की से सिर बाहर निकालती हुई बोली—"जहन्नुम में जाय तुम्हारी वह डचेज और जहन्नुम में जाओ तुम। रोमा, तुम नितान्त स्वतन्त्र हुई जा रही हो।" माँ ने कुछ खीझकर कहा।

"कैसी बात कहती हो, मामा। वृद्धावस्था में सचमुच ही तुम्हारी अक्ल मारी जा रही है।" रोमा ने कुछ चिढ़कर कहा—"जब बाहर जाती हूँ, तुम समझती हो रोमान्स के लिये ही जाती हूँ।"

"अच्छा, अच्छा, अब जरा जबान इतनी न चला। तीस वर्षों तक मैंने भी 'हालीवुड' में खाक नहीं छानी है। एक-से एक इण्डियन प्रिंस, पारीजियन छैला, इंगलिश डचेज और अमेरिकन मल्टी-मिलिओनर देखे हैं और उनकी थाह ली है। एक-से एक मक्कार और मतलबी निकले। भूखे हैं, वे भूखे। समझी, भोली लड़की?"

रोमा सुनती रही।

"और देख, रोमा, मुझे चरा नहीं। डचेज की आड़ में शिकार न खेल। फ्रेडरिक को भी मैं जानती हूँ। एक ही छँटा निकलेगा।" माँ ने फिर कहा।

फ्रेडरिक की शिकायत सुनकर रोमा फिर चिढ़ गयी।

"फ्रेडरिक को फिर तुमने घसीटा। आखिर उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

"मेरा वह छोकरा क्या बिगाड़ेगा? तुम्हारा वह बिगाड़ रहा है। और यदि तुमने मेरी बात न मानी, तो मुँह की खाओगी।

माँ की बात अभी खतम भी न हुई थी कि एक चमकती रोल्स धीरे-धीरे आकर लॉन के दरवाजे पर रुकी। उसकी आवाज मानों रोमा की पहिचानी हुई थी। उसका शृंगार समाप्तप्राय था। अलकों को भौंहों पर गिरा वह बाहर दौड़ी। उसकी माँ भी धीरे-धीरे उठ खड़ी हुई।

एक संभ्रान्त व्यक्ति मोटर से उतरा और वह लॉन की ओर बढ़ा ही था कि रोमा दौड़ती हुई उसके पास पहुँच गयी।

"गुड ईविनिंग, मिस स्मिथ !"

"गुड इविनिंग, मिस्टर रॉथ !" मिस रोमोला स्मिथ ने अपना हाथ बढ़ाते हुए प्रत्याभिवादन किया। फिर वह माँ से बोली—"मामा, मिस्टर रॉथ। कितने भले हैं मिस्टर रॉथ मामा।"

"गुड इविनिंग, मिसेज स्मिथ ! कैसी हैं ?"

"गुड इविनिंग, मिस्टर रॉथ !' बड़ी अच्छी हूँ, धन्यवाद। बड़ी कृपा की।"

"कृपा कैसी मिसेज स्मिथ ? आपके परिवार के साथ रहना तो बड़े आनन्द की बात है। 'मारबुल पैलेस' जा रहा था, सोचा शायद मिस स्मिथ भी चलें, तो साथ ले लूँ।" मिस्टर रॉथ बोले।

"बड़ी दया, धन्यवाद !" माँ-बेटी दोनों एक साथ बोल उठीं।

मिसेज स्मिथ बालपन से प्रौढ़ावस्था तक स्टेज की रानी रहीं। जब थियेटर का रंग धुँधला हुआ और सिनेमा का रंग चढ़ा, तब वह स्टेज छोड़ चित्रपट पर आयीं और उन्होंने प्रमुख फिल्मस्टार की बहुत दिनों तक शान निबाही। प्रौढ़ावस्था में जब नम्बर पाँच स्ट्रीट के धनी मिस्टर रिचार्ड स्मिथ ने उनकी ओर

अपना हाथ बढ़ाया, तो उन्होंने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। उस संबन्ध को उन्होंने निबाहा भी खूब। भाग्य भी उनके खूब चमके, क्योंकि प्रौढ़ावस्था में फिल्मस्टार की चमक जब मैली हो जाती है, उससे कम लोग रीझते हैं और रिचार्ड स्मिथ तो अपने धन के बल पर किसी भी तरुणी अभिनेत्री को इच्छामात्र से उपलब्ध कर सकते थे। परन्तु दाम्पत्य-जीवन मिस्टर स्मिथ के भाग्य में न था और वे विवाह के दूसरे ही वर्ष चल बसे। उनकी नवविवाहिता पत्नी उनकी विशाल संपत्ति की स्वामिनी हुईं। मिस रोमोला का जन्म मिस्टर स्मिथ की मृत्यु के बाद, उसी साल हुआ और यद्यपि लोगों ने स्मिथ के पितृत्व में सन्देह किया; परन्तु यह बात उनके मित्रों में भली प्रकार जानी हुई थी कि रोमोला उन्हीं की पुत्री है। उनकी मृत्यु भी किसी अकस्मात् कारण से न हुई, जिससे और किसी प्रकार का शक किया जा सकता। वे चेचक के शिकार हुए और उनकी विधवा ने वर्ष पर्यन्त शोक के काले कपड़े पहिने। साल भर न वह किसी 'बॉल' में गयीं, न किसी थिएटर अथवा सिनेमागृह में उन्होंने पैर रखे। अपनी एकमात्र कन्या को भी उन्होंने भरसक सुन्दर कार्यों में लगाया, उसके लिये अच्छे ट्यूटर और भली धाय चुनी। कन्या ने अपनी माता का सौन्दर्य और पिता की दृढ़ता पायी थी, जिन्हें उसके बढ़ते हुए कैशोर और यौवन निरन्तर भरते रहे।

मिस स्मिथ ने अपनी अट्ठारह वर्ष की अवस्था में ही बड़ा गौरव प्राप्त कर लिया था। अभिनय में तो सारे हॉलीउड में उसके जोड़ की कोई अभिनेत्री न थी। सौन्दर्य के क्षेत्र में तो उसने अपना नया साका ही चलाया था। परन्तु इतना अवश्य था कि उसने एक बार भी हॉलीउड में पैर नहीं रखा। इस विरक्ति में उसकी उतनी ही अभिरुचि थी, जितनी उसकी माँ

का प्रयास था। उसे बड़े-बड़े प्रलोभन दिये गये, हॉलीउड के संचालकों द्वारा, अमेरिका के धन-कुबेरों द्वारा। पर उसने दोनों को ठुकरा दिया। किसी की ओर फिरकर न ताका।

मिस रोमोला स्मिथ की दया अथवा प्रेम के फिर भी पात्र थे। उनमें विशेष ख्याति थी जर्मन कलाकार फ्रेडरिक और अमेरिकन धनाढ्य मिस्टर रॉथ की। वैसे शायद और व्यक्तियों से, जिनका स्मिथ परिवार में विशेष मान था, मिस स्मिथ का केवल सौजन्य का व्यवहार था। परन्तु रॉथ और फ्रेडरिक के सम्बन्ध में तो लोगों की दो रायें न थीं। फ्रेडरिक का सम्बन्ध तो बहुत ही स्पष्ट-सा लक्षित होता था और रॉथ के प्रति भी मिस स्मिथ का सौहार्द्र फ्रेडरिक से कुछ ही घटकर था।

मिस्टर रेजीनाल्ड विक्टर रॉथ के पिता जॉन वैलेन्टाइन रॉथ अमेरिका के प्रमुख धनकुबेरों में से थे। कहते हैं राकफेलर और कारनेगी से धनाढ्यों को भी जब-जब ऋण की आवश्यकता हुई वैलेन्टाइन रॉथ ने निस्संकोच दिया। उनसे बहुत पूर्व उनके पूर्वज हेरोद रॉथ मूनिख से अट्ठारहवीं सदी के अन्तिम चरण में अमेरिका आये थे, जिन्होंने न्यूयार्क में जर्मन रंगों का कारबार शुरू किया था। इस व्यवसाय में वे खूब फूले-फले। केवल एक बार उनकी दशा कुछ बिगड़ी थी सो भी उनके पीछे एक विलासी वंशज के जीवन काल में। रेजीनाल्ड के पितामह ने कैनेडियन गेहूँ का भी रोजगार हाथ में में लिया, जिससे उन्होंने धन और ख्याति दोनों कमायी। उनके पुत्र वैलेन्टाइन ने तो अपने कुल की मान-प्रतिष्ठा आकाश तक पहुँचा दी। बड़े-बड़े अमेरिकन सेठ उनकी कृपा के अभिलाषी थे और बड़े-बड़ों पर उनके एहसान थे। स्वयं युनाइटेड स्टेट्स की सरकार उनकी ऋणी थी। बड़ी-बड़ी तिजारती कम्पनियों,

रेलवे, बीमा आदि में उनके अनन्त हिस्से थे, जिनसे विपुल संपत्ति प्रतिवर्ष बरसती थी। पैसिफिक सागर के पूर्वी द्वीप-समूहों के लाख के रोजगार पर, जिसकी योरप में लिपस्टिक बनती थी, उनका एकमात्र प्रभुत्त्व था।

वैलेन्टाइन रॉथ, रेजीनाल्ड के पिता, अभी-अभी अपने युवा-पुत्र के हाथ में अपनी विशाल सम्पत्ति छोड़ कर मरे थे। रेजीनाल्ड भी बड़ा विवेकशील, सुसंस्कृत और मिलनसार व्यक्ति था। उसने पिता के मरने के उपरान्त अनेकों महत्त्वपूर्ण कार्य किए थे, जिनमें पेन्सिल्वेनिया का विशाल पुस्तकालय और वर्जीनिया की रात्रि-पाठशालाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं। रेजीनाल्ड के शौक भी बहुत सुलझे हुए थे, जो उसके पिता की विशेष देन थीं। हॉलीउड के संचालकों ने उसपर भी अपने जाल फेंके; परन्तु उसने उनसे स्पष्ट कह दिया कि उसकी रुझान और तरफ है। जैसे प्राय: होता है, अमेरिकन संभ्रान्त सुन्दरियों और फिल्मस्टारों ने उसे आकृष्ट करने के अनेक प्रयत्न किये; परन्तु उसने उनकी ओर से अपनी नजर घुमा ली। केवल एक व्यक्ति ने उसके भाव-क्षेत्र में प्रवेश पाया था—वह थी रिचार्ड स्मिथ की बेटी मिस रोमोला स्मिथ।

रेजीनाल्ड क्वाँरा था। मिसेज स्मिथ का इसीलिये वह विशेष कृपापात्र था। वह चाहती थी कि वह उसकी 'रोमा' को स्वीकार कर ले। वह स्वयं रोमोला को चाहता था; परन्तु गम्भीर स्वभाव का होने के कारण कभी उसने अपने विचार उसपर जबर्दस्ती नहीं डाले न उसकी अस्वाभाविक स्वीकृति के लिए ही उसने कोई अनुचित दबाव की बात सोची। विशेषकर इस कारण कि वह जानता था कि रोमोला फ्रेडरिक के प्रति अनुरक्त है। रोमोला का वास्तव में फ्रेडरिक के प्रति विशेष सद्भाव

था, जिसे प्रेम कहा जा सकता है और जो उन दिनों उस समाज में प्रेम ही के नाम से कहा जाता था। परन्तु स्वयं रोमोला दोनों के प्रति बड़ा अनुराग रखती थी। इसीलिए रेजीनाल्ड ने अपनी हार न मानी थी और वह सतत उसके प्रेम को जीतने के प्रयत्न में लगा रहता था। उसको रोमोला के लिए कुछ भी अदेय न था और रोमोला इसे भले प्रकार जानती थी। इसीलिए वह उसका और सम्मान करती थी।

फ्रेडरिक न्यूयार्क में नवागन्तुक था। पर वह बड़ा ही विचक्षण था। उसकी शिष्टता ने अमेरिका के भावुकों को अपनी ओर खींच लिया था। उसका शारीरिक-सौन्दर्य असाधारण था, जिसपर न्यूयार्क की सुन्दरियाँ शलभों की भाँति टूटतीं और टूटकर भस्म हो जातीं; क्योंकि उसकी कामना बड़ी ही संयत थी, जिसकी चेष्टा बहुत कुछ दीपक की भाँति ही अनचीती थी। फ्रेडरिक जर्मन था और शोर यह था कि वह जर्मनी का एक महान करोड़पति था। परन्तु वह अपनी आकांक्षाओं का दास था। भाग्यवशात् उसकी आकांक्षाएँ निम्नकोटि की न थीं। वह कला का परम पुजारी था। अभिनय, संगीत, वास्तु, शिल्प सभी उसके परम इष्ट और इनकी साधना में वह अपनी प्रतिभा और अपना समय व्यय करता था। अभिनय और संगीत में तो उसने न्यूयार्क में धन पानी की भाँति बहाया। परन्तु वह व्यावसायिक अभिनय और संगीत का शत्रु था। वह अमेचियर (अव्यवसायिक) रूप से इन विषयों का सेवी और अभ्यस्त था।

इस कार्य में उसकी पार्टनर थी डचेज। डचेज एक भेदभरी नारी थी। उसके विचारों का साधारण ज्ञान लोगों को न था। वह थी भी बड़ी मानिनी और मनस्विनी। जिस रूप से उसने न्यूयार्क में रुपये व्यय किये, उससे यह कहा जा सकता है कि

वह करोड़पति थी। कहा तो यहाँ तक जाता था कि उसके खर्च के अलावे जो रुपये फ्रेडरिक खरचता था वह सारा उसे वही देती थी। वह इङ्गलैंड की थी, परन्तु शायद उसके पूर्वज कभी जर्मनी में रह चुके थे। शायद हैनोवर में उसकी बड़ी जमींदारी थी और उसका अगाध धन अफ्रीका से आता था, जहाँ वह एक विस्तृत भूखण्ड की स्वामिनी थी। वह फ्रेडरिक की एक प्रकार से पूरक थी। सुन्दर तो वह अप्रतिम थी ही, मनस्विनी भी वह एक ही थी। वह किसी से मिलती न थी और श्रीमानों के कार्ड उसके 'स्टीवार्ड' मात्र उस तक पहुँचा सकते थे। स्वयं उसके 'फुटमेन' को उस तक पहुँचने की आज्ञा न थी। फ्रेडरिक के मादक रूप की भाँति ही उसका सौन्दर्य भी बड़ा मनमोहक था। बराबरी की हैसियत से उसने दो ही आदमियों को स्वीकार किया था; वे थे—रेजीनाल्ड रॉथ और रोमोला स्मिथ।

फ्रेडरिक की भाँति ही वह भी कला के अव्यवसायिक अंगों की उपासिका थी। और जिस प्रकार फ्रेडरिक वायोलिन बजाने में अपना सानी नहीं रखता था, वह भी तम्बूरे की गति और स्वर-गान में अद्वितीय थी। लोगों का यह विश्वास था कि अमेचियर कला में फ्रेडरिक-से कलाप्राण व्यक्ति को उसीने दीक्षित किया था। जो कुछ भी हो, इस समय जो न्यूयार्क में एक धूम-सी मच गयी थी वह था फ्रेडरिक और डचेज द्वारा एक अमेचियर समाज का संगठन। इसके उपलक्ष में प्रथम स्मारक-स्वरूप एक अद्भुत कलापूर्ण अमेचियर फिल्म तैयार करने की योजना हो रही थी। इसकी विशिष्ट संयोजिका स्वयं डचेज थी।

इस फिल्म की तैयारी में डचेज ने लगभग दस करोड़ डालरों की योजना उपस्थित की। उसका कहना था कि यह सारा व्यय एकमात्र वह अपने साधनों से बर्दाश्त कर सकती थी, परन्तु

चूँकि यह एक विशाल अन्तर्जातीयअमेचियर कलावर्ग की संस्थापना के स्मारकरूप में हो रहा था ; उचित यह था कि उसमें सभी कला के विशिष्ट उपासक हाथ बटाएँ। न्यूयार्क के युवा धनाढ्यों को विशेष रूप से इस प्रस्ताव की खूबी रुची और उन्होंने उसमें हाथ बटाने का पूरा-पूरा विश्वास दिलाया। इन उदारचित्त और उत्साहशील व्यक्तियों में प्रख्यातनामा रॉथ और रोमोला स्मिथ अग्रगण्य थे।

इस फिल्म का प्लाट भी उस अद्भुत प्रज्ञाशील डचेज ने ही सोचा था। एक करोड़पति के ऋद्ध भवन में अन्तर्जातीय चोरों ने चोरी की और उन्होंने अपनी अद्भुत बुद्धि से सरकार को विस्मित कर दिया। इस फिल्म का तात्पर्य था साधारण सिनेमा संसार से जनसाधारण को आगाह करना और चोरी की चमत्कारी धूर्तता से लोगों की, विशेषकर श्रीमानों की रक्षा करना। इस प्रकार का उद्देश सचमुच तभी सफल हो सकता था जब कोई अमेचियर संस्था इस फिल्म का भार अपने ऊपर ले। हालीउड तो स्वभाव से ही इसका परम विरोधी था। और निरन्तर डाकुओं से त्रस्त रहनेवाले धनाढ्य अमेरिकनों के लिए तो यह वास्तव में एक प्रकार से अमूल्य लाभ था। वे इसमें बतायी तरकीबों से अपनी तिजोरियों की रक्षा करा सकते थे।

विशेष महत्त्व की बात इसमें यह थी कि इसके नायक फ्रेडरिक और नायिका स्वयं डचेज थीं। रोमोला और रॉथ को भी इसमें विशेष पार्ट मिले थे। और जिस फिल्म में डचेज और रोमोला पार्ट करने को तत्पर थीं उसकी शूटिंग में तो न्यूयार्क के धनाढ्य अपना सर्वस्व तक लगा देने को प्रस्तुत थे।

आज अन्तर्जातीय अमेचियर दल की एक महत्त्वपूर्ण बैठक थी। रॉथ ने प्यार से रोमोला का हाथ पकड़ लिया और उसे लेकर वह अपनी रोल्स में जा बैठा।

[२]

सभापति का स्थान डचेज ने लिया था।

"मैं इस बात को आप लोगों को पूर्णतया जना देना चाहती हूँ कि इस सारे खर्च की व्यवस्था मैं अकेली कर लेती ; यदि मेरा यह विचार न होता कि यह आयोजन सार्वजनिक हो।" वह बोली।

"मैं श्रीमती डचेज की बात का अभिप्राय भली प्रकार से समझता हूँ और उससे पूर्णतया सहमत हूँ।" नम्बर १७ स्ट्रीट के विख्यात पेट्रोलियम सम्राट् रेड क्लिफ ने आधा उठते हुए कहा।

"मुझे भी इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है।" न० ३०४ के ब्यूकाम्प ने सुझाया। इतना जरूर है कि मैं पसन्द यह करूँगा कि इसे एक लिमिटेड कन्सर्न कर लिया जाय।"

इस प्रस्ताव पर कई आपत्तियाँ हुईं। कई स्थान से 'नहीं' 'नहीं' की आवाज आयी।

रॉथ ने उठकर कहा—मैं इस बात को किसी प्रकार भी स्वीकार नहीं कर सकता ; क्योंकि ऐसा करने से श्रीमती डचेज का आशय पूर्णतया नष्ट हो जायगा। कम्पनी होकर यह संस्था फिर वही व्यवसायिक रूप धारण करेगी और इसमें तथा हालीउड के व्यवसाय में कोई अन्तर न रह जायगा।

"मैं मिस्टर रॉथ के विचारों से सर्वथा सहमत हूँ।" मिस रोमोला स्मिथ ने कुछ मुसकराते हुए कहा।

अब फ्रेडरिक उठा। उसने फिर से संस्था की योजना का पुराना प्रस्ताव पढ़ते हुए उन विचारों को दुहराया जो रॉथ ने प्रकट किए थे। फिर अपनी सुन्दर दन्त-पंक्ति को चमकाता हुआ वह बैठ गया।

गम्भीर विचक्षण डचेज फिर उठी।

उसने प्रत्येक व्यक्ति पर अपनी दृष्टि डाली और कहा—अब मुझे अपने प्रस्ताव के विषय में कुछ भी नहीं कहना है; क्योंकि मिस्टर रॉथ आदि सज्जनों ने उसकी उपादेयता पर पूरा प्रकाश डाल दिया है। इसमें सन्देह नहीं कि इसे किसी प्रकार भी व्यवसायिक रूप देने से प्रारम्भिक योजना के सारे आदर्श नष्ट हो जायँगे।

डचेज बैठ गयी। फ्रेडरिक अपने मानोकोल को सम्हालता हुआ फिर उठा।

मुसकराता हुआ वह बोला—अब मैं आपका ध्यान उस विशेष कार्य की ओर आकर्षित करूँगा जिसके लिए आज की यह बैठक बुलायी गयी है। मैं चाहता हूँ कि आज हममें से प्रत्येक सदस्य इस बात की घोषणा कर दे कि वह इस कार्य में कितनी सहायता करेगा। मैं स्वयं अपनी निजी संपत्ति से दो करोड़ डालर इसमें देता हूँ और मुझे श्रीमती डचेज की स्वीकृति इस विषय में प्राप्त है कि मैं उनकी ओर से इस बात को घोषित कर दूँ कि वे तीन करोड़ देंगी। अब अमेरिका अपना भाग स्वीकार करे।

रेडक्लिफ कुछ खाँसता हुआ उठा। उसने कहा—मैं एक करोड़ डालर देना स्वीकार करता हूँ।

न्यूकाम्प ने भी गला साफ करते हुए कहा—मैं भी डेढ़ करोड़ इस कार्य में दे दूँगा।

रेडक्लिफ को यह असह्य हो उठा कि रुपये के मामले में वह डचेज के सामने किसी से झुक जाय। वह फिर उठा।

"मैं अपना विशाल सामुद्रिक जहाज 'ऐटलाण्टिक' संस्था को देता हूँ।" उसने दाँत पीसते हुए कहा।

"मैं अपने दो एयर-लाइनर 'न्यूयार्क' और 'फिलिपाइन्स' देता हूँ।" बूकाम्प उत्तर-सा देता हुआ बोला।

'ऐटलान्टिक' अमेरिका के माल ढोनेवाले प्रमुख जहाजों में से था और 'न्यूयार्क' और 'फिलिपाइन्स' विशाल यात्री-वायुयान थे। डचेज मन ही मन मुसकरायी।

"मैं यह 'मारबुल पैलेस' और दो करोड़ डालर समर्पित करता हूँ।" रॉथ धीरे-धीरे बोला।

फिर मिस स्मिथ ने दस लाख डालर और अपने जेवर और जवाहिरात फिल्म बनाने के अवसर पर देने की प्रतिज्ञा की। इससे अधिक वह कुछ नहीं दे सकती थी, क्योंकि उसकी संपत्ति की स्वामिनी अभी उसकी माँ जीवित थी। फिर अनेकों श्रीमानों में से किसीने बीस लाख, किसी ने पचास लाख देना स्वीकार किया। प्रत्येक दान पर करतल-ध्वनि हुई। दानियों की बाछें खिल गयीं। सरकारी कागज पर जो पहले से ही प्रस्तुत था, सबने अपने-अपने दान के अंक लिखकर उसपर दस्तखत कर दिये।

डचेज ने उठकर कुछ मुसकराते हुए सबको धन्यवाद दिया और कहा कि बिना उनकी निःस्वार्थ सहायता के यह कार्य आदर्श रूप में संभव नहीं; परन्तु अब उसकी सफलता में किसी को संदेह नहीं हो सकता।

अब इस कार्य के संचालन के अर्थ एक उपयुक्त मंत्री की आवश्यकता प्रतीत हुई। रॉथ ने फ्रेडरिक का नाम प्रस्तुत किया।

हर्ष की तालियाँ बज उठीं। वैसी क्षमतावाला दूसरा व्यक्ति और कौन था? यूनाइटेड स्टेट्स् की सरकार के शिक्षा-मंत्री इस संस्था के संरक्षक बनाये गये।

फिर फ्रेडरिक ने प्रस्ताव किया कि चूँकि यह एक अन्तर्जातीय संस्था है, इसका कोई-न-कोई रूप प्रत्येक देश में रहे। अमेरिका में इसकी स्थायी संपत्ति रहे और फिल्म का मुख्य भाग न्यूयार्क में ही बनाया जाय। परन्तु यूरोप के संतोष के लिये नकद संपत्ति पेरिस के 'बैंक डी फ्रांस' में रखी जाय।

प्रस्ताव तर्कपूर्ण था। इसमें किसी को आपत्ति न हुई। इस प्रकार की अन्तर्जातीय संस्था के लिये तो वास्तव में ऐसी बातें बुनियादी होती हैं।

× × ×

दूसरे सप्ताह में चेक आने लगे। संस्था और उसके सेक्रेटरी के नाते फ्रेडरिक के नाम पर विदेश के बैंकों में हिसाब खुल गये। फ्रेडरिक ने अपना तन-मन-धन सभी इस संस्था के कल्याण कार्य में लगा दिया। डचेज भी इस अर्थ अपना सब-कुछ न्योछावर कर देने को सदा तत्पर रहती। रॉथ तो अमेरिका में होनेवाले इस संस्था के प्रयत्नों के प्रेसिडेन्ट ही थे। मिस रोमोला स्मिथ, रेडक्लिफ, ब्यूकाम्प सभी अधिकाधिक द्रव्य और समय देने को सदा प्रस्तुत रहते। डचेज ने अपने निजी स्टेट का कार्य सब अपने सेक्रेटरियों के ऊपर छोड़ दिया। इस मानव-उपकार संबन्धी कार्य को करते समय यदि उसकी निजी आय में घाटा भी लगे तो उसे कोई परवाह न थी। उसका यह त्यागमय आदर्श न्यूयार्क के धनियों में विद्युत की भाँति घर करने लगा। वह सब कार्य धीरे-धीरे सोच समझ कर करती थी। किसी बात की उतावली न थी। फ्रेडरिक तो

सार्वजनिक संपत्ति के व्यय में एक अभूतपूर्व कैशियर था। एक पैसा भी बेकार खर्च न होता था। वह स्वयं किसी प्रकार के मार्ग के व्यय में संस्था के रुपये स्वीकार नहीं करता था। किसी भी कर्मचारी के मार्गव्यय की वह पूर्णतया परीक्षा करता था। लोग उसकी नीति देख उसकी बुद्धि और तत्परता को सराहने लगे। कार्यसमिति ने भी माना कि खजान्ची और मंत्री पद के लिये फ्रेडरिक की भाँति व्यक्ति मिलना सर्वथा असम्भव था।

× × ×

पार्ट बँट गये। फिल्म का नाम रखा गया 'चोरी'। प्रधान नायक का पार्ट फ्रेडरिक ने लिया, सहकारी का रॉथ ने। इसी प्रकार नायिका का पार्ट डचेज को मिला और उपनायिका का मिस स्मिथ को। रेडक्लिफ और ब्यूकाम्प बैंकर बने।

रिहर्सल नित्य होने लगे। उसमें सम्मिलित होने के लिये पात्र अत्यन्त उत्साह से भर चले। उनकी रुचि उसमें ऐसी बढ़ी कि वे दिन भर तो किसी प्रकार अपनी कोठियों में काट लेते और संध्या काल निर्धारित समय से बहुत पूर्व ही नं० ३०४ के 'मारबुल पैलेस' की ओर चल पड़ते। बड़ी उत्सुकता से वे नित्य संध्या की बाट जोहते।

गंभीर डचेज का पार्ट तो अद्भुत क्षमता से उतरता। फ्रेडरिक तो कला का प्रधान पण्डित ही था। और रॉथ और रोमोला ने भी अपने पार्टों को खूब निबाहा। रेडक्लिफ और ब्यूकाम्प तो बराबर स्पर्धा की दृष्टि से अपने पार्ट करते। दोनों को इस बात की इच्छा थी कि वे एक दूसरे से डचेज के सामने अभिनय में बढ़ जायँ। ब्यूकाम्प में कुछ वाक्चातुरी रेडक्लिफ से अधिक थी, परन्तु रेडक्लिफ का पीवर शरीर बिना किसी अन्य साधन के ही सेठ-सा जँचता, वैसे पेशे का तो वह बैंकर था ही।

परन्तु जब वे दोनों अपने पार्ट करने लगते, हँसते-हँसते दर्शकों के पेट में बल पड़ जाते। स्वयं गम्भीर डचेज उनकी स्पर्धा और उनके अभिनय देख अपनी हँसी न रोक सकती। और प्राय: वह कभी एक को, कभी दूसरे को उसके अभिनय की खूबसूरती पर दाद दिया करती। रेडक्लिक और ब्यूकाम्प बाग-बाग हो जाते। दोनों आपस में डचेज की दी हुई शाबाशियों की संख्याओं का हिसाब लगाते और वे जिसे अधिक मिली होतीं वह दूसरे को गर्व से देखता, उस पर फबतियाँ कसता।

न्यूयार्क में इस संस्था ने धाक जमा दी। अखबारों के कालम इसकी स्तुति में रँगे जाने लगे। इसके कार्यकर्ताओं का यश विदेशी पत्रों द्वारा भी भूमण्डल में फैल चला। अमेरिका के अनेकों दूसरे व्यक्ति भी इसमें सम्मिलित होने के लिये अब उत्सुक होने लगे। परन्तु अब उसमें सारे स्थान भर चुके थे। वे केवल सहानुभूति रखनेवाले सदस्यों में ही स्थान पा सकते थे। इस संस्था के सदस्यों की कलाप्रियता का बखान होने लगा और केवल इसकी सदस्यता ही ललित-कलाओं की पारदर्शिता का यथेष्ट प्रमाणपत्र थी।

[२]

फिल्म लेने की तैयारियाँ होने लगीं। 'मारबुल पैलेस' शूटिंग का मुख्य स्थान था। वैसे न्यूयार्क और समुद्रतट के डाकयार्ड और हारबर सभी इस कार्य में उपादेय सिद्ध होने लगे। अत्यन्त बेशकीमत वस्तुओं का प्रयोग होने लगा। रॉथ और दूसरे धनाढ्य अपने-अपने कीमती जवाहिरात 'मारबुल पैलेस' में भरने लगे। रोमोला ने स्मिथ परिवार के विख्यात जेवर डचेज को दिये। डचेज ने उसकी बड़ी सराहना की। परन्तु स्वयं डचेज के जेवरों ने रोमोला अथवा अन्य करोड़-

पतियों के जवाहिरात को अंधकार में डाल दिया। रोमोला स्वयं उसके जेवर देख ललचने लगी।

कलाप्रिय प्राणियों के दिल ही दिल होता है, व्यवसायिक विचार नहीं। जब डचेज ने देखा कि रोमोला उसके जेवरों की विशेष प्रशंसा कर रही है, उसका उदार मन नाच उठा। उसने रोमोला के धुँधले जेवरों के बदले अपने चमकते अमूल्य जेवर उसे दे डाले। रोमोला उन्हें पहिनकर चमक उठी। रॉथ रोमोला के ठाट को देखता रह गया, रीझ गया।

डचेज के पास ऐसे जेवरों की कमी न थी। लोगों का विश्वास था कि उसके हीरे डेन्मार्क में कटे थे। जेवरों के डिजाइन उसने स्वयं तैयार किये थे, जिनको पेरिस के सुनारों ने गढ़ा था। उसने अपनी तिजोरी से और भी मूल्यवान जेवर निकाले और उनसे सज-धजकर वह प्रमुख नायिका बनी। बिजली के अनन्त रंग-बिरंगे बल्बों के प्रकाश में उसकी द्युति चमक उठी; रह रह कर उसके लालायित प्रेमियों के हृदयों में कौंधने लगी। और जब उसने उस अद्भुत दक्ष फ्रेडरिक की वायोलिन के साथ अपने तम्बूरिन का राग मिलाया, एक अजीब समा बँध चली। उसके गले का स्वर निरंतर बहने लगा और उसके स्वर का कम्पन रसिकों में विक्षेप के साधन भरने लगा। न्यूयार्क के रसिक परिवार को उसने लूट लिया।

चोरों का दल एक अन्तर्जातीय-रूप में संगठित हुआ। फ्रांस, जर्मनी, इंगलैण्ड, स्पेन, रूस, पोलैण्ड, इटली, अमेरिका सभी उसमें सम्मिलित थे। नोरा के वेष में डचेज उसकी नेत्री थी और संसार का विख्यात डाकू रुडोल्फ के रूप में फ्रेडरिक उसका सहकारी था। रॉथ और रोमोला रूपर्ट और वेन्डेटा बन उनके प्रतिनिधि के रूप में अमेरिका में एक वृहद् चोरी के साधन इकट्ठे

करने लगे। वेन्डेटा और रूपर्ट ने वाशिंगटन के विलासप्रिय धनाढ्य नागरिकों को अपने जाल में धीरे-धीरे फाँस लिया।

वे दोनों जब समृद्ध वाशिंगटन और न्यूयार्क के धनिकों की बागडोर अपने हाथ में कर चुके, उन्होंने संगीत का अद्भुत समारोह न्यूयार्क में करना स्थिर किया। पेरिस की विख्यात नर्तकी ताया निमंत्रित हुई। ताया अपने संगीत-परिवार के साथ आयी। कई प्रदर्शन उसने किए। एक में वह विरहिणी अभिसारिका बनी, दूसरे में गर्विणी काउन्टेस। फिर तीसरे में जिप्सी खानाबदोशियों की नेत्री। प्रत्येक में उसका सहकारी जीन उसके साथ था।

न्यूयार्क ताया के प्रदर्शनों से प्रमत्त हो उठा। ताया वास्तव में नोरा (डचेज) थी और जीन रुडोल्फ (फ्रेडरिक) था। इस विभोरावस्था में फिल्म का मुख्य भाग बनने लगा। पेरिस से बुलाये गये फिल्म निर्माण में पारंगत कलाकार शूटिंग करने लगे। चोरी का अभिनय किया जाने लगा।

फिल्म की सहूलियत के लिए रेडक्लिफ, न्यूकाम्प और अन्य बैंकरों ने अपनी-अपनी रत्नभरी तिजोरियाँ 'मारबुल पैलेस' में ला रखीं। इन तिजोरियों में अरबों के जवाहिरात, अमेरिका के चुने हुए धनी परिवारों की सदियों की कमाई संपत्ति निक्षिप्त थी।

रात्रि में जब नाच और गान के साज सजते, ताया और जीन श्रोताओं को अपने गान और वाद्य की निपुणता से अचरज में डाल देते। फिर दिन में जब रात्रि के थके दर्शक सो जाते, रुडोल्फ और नोरा तिजोरियों के सामान थोड़ा-थोड़ा कर निकाल लेते। तिजोरियों के खोलने में तनिक भी दिक्कत न होती। न हथौड़े की जरूरत न अन्य साधनों की। एक तेल-सा द्रव पदार्थ लगाते

ही उनके ताले मिनट भर में बिना कोई शब्द किये धीरे-धीरे खुल जाते। अद्भुत बात यह थी कि चोरी दिन में होती।

फिर अन्त में वह दिन आया जिस दिन चोरी का विशेष अवसर नियत था। सारी रात नाच-रंग जमा रहा। शराब की धारा बहती रही। बेहोश हो-हो उसमें पार्ट लेनेवाले रसिक ताया और जीन पर गिरते रहे। ताया एक-एक को पकड़ लेती, एक-एक को झकझोर देती। खुशी और विक्षेप से यह रसिक परिवार असावधान होता गया। प्रात: के समीर ने उन्हें धीरे-धीरे चेतनाशून्य कर दिया।

अब रुडोल्फ और नोरा, रूपर्ट और वेन्डेटा सावधान हो अपने कार्य में लगे। रेडक्लिफ और ब्यूकाम्प उठाकर तिजोरियों-वाले 'स्ट्रांग-रूम' में दवाओं के प्रयोग से और बेहोश कर डाल दिए गए। चोरी का बाजार गर्म हुआ। शूटिंग जोर से होने लगी। पेरिस के फिल्म विशारद अपना कार्य विशेष तत्परता से करने लगे।

यह एक अन्तर्जातीय चोरी थी। रुडोल्फ और नोरा न्यूयार्क के बन्दर पर सचेष्ट थे और रूपर्ट और वेन्डेटा उनकी मदद में मशगूल। रूपर्ट, वेन्डेटा और उनके सहकारी 'मारबुल पैलेस' से बहुमूल्य वस्तुएँ उठा-उठाकर भेजते। बीसों लारियों में वहाँ का बेशकीमत सामान—सोने चाँदी की कुर्सियाँ, कोच, मोतियों की झालरोंवाले पर्दे, भारी कीमती गलीचे, अमूल्य रत्नों के आभूषण, करोड़ों के डालर—कुछ ही घंटों में न्यूयार्क के बन्दर पर पहुँच गये। वहाँ रुडोल्फ और नोरा उन्हें 'ऐटलांटिक' नामक जहाज में भरने में तल्लीन थे। भारी-भारी वस्तुएँ जहाज पर लाद दी गयीं और विशेष रत्न और जवाहिरात ब्यूकाम्प के दिये एयर-लाइनर 'फिलिपाइन्स' में भरे गये। उसीमें रुडोल्फ और नोरा और

उनके विदेशी सहकारी चोर और डाकू बैठकर उड़ चले। रूपर्ट और वेन्डेटा वहाँ वालों को विश्वास दिलाने के लिए पीछे छोड़ दिये गये। तै रहा कि वे दूसरे महीने में 'न्यूयार्क' में यात्रा करेंगे।

चोरों के छिपने का स्थान अफ्रीका के सहारा में नियत किया गया था, इस हेतु 'न्यूयार्क' उसी ओर उड़ चला। साथ ही 'ऐटलाण्टिक' ने भी उसी ओर बढ़ने के लिए लंगर उठाये। पेरिस के फिल्म विशारद अद्भुत क्षमता से फोटो ले रहे थे। विद्युतगति से उनका 'मूवी' थिरक रहा था। 'फिलिपाइन्स' सुदूर बादलों में छिपा जा रहा था और 'ऐटलाण्टिक' वेग से पैसिफिक के वक्ष को चीरता चला जा रहा था।

दूर-दूर के फिल्मप्रेमी इस दृश्य को देखने आये थे। यूरोप के भी कितने ही कलाकार वहाँ उपस्थित थे। न्यूयार्क और अन्य अमेरिकन नगरों के नागरिक उमड़े पड़ते थे। सारा हॉलीउड देख रहा था और उसके निपुण संचालक इस बिना परम्परा के अमेचियर सफलता को देख चकित थे। डचेज का यह अद्भुत प्रयास देख लोग विस्मित हो गये। लोगों ने कहा—जो सफलता कलाधुरीण अमेचियरों के खेल में होती है, वह व्यवसाय बुद्धि-वाले फिल्म निर्माताओं में कहाँ?

रॉथ और रोमोला, रूपर्ट और वेन्डेटा के वेश में, अपनी संस्था के प्रति साधुवाद सुन-सुन पुलकित हो रहे थे।

फिल्म आधा बन गया। बाकी सहारा की मरुभूमि में, डाकुओं के स्वदेश में बननेवाला था। परन्तु वहाँ गर्मी के दिन थे। भूतल जल रहा था, आकाश आग उगल रहा था। फिल्म-निर्माण विशेष कर यूरोप और अमेरिकनों द्वारा वहाँ संभव न

था ; जाड़ों की प्रतीक्षा करनी आवश्यक थी। अभी तीन महीने काटने थे।

अमेरिका के धनाढ्यों, रेडक्लिफ और ब्यूकाम्प अफ्रीका के सुखमय समय की आशा में किसी प्रकार तीन महीनों की अनंत अवधि काटने लगे।

निश्चित कार्यक्रम के अनुसार रूपर्ट और वेन्डेटा भी अपने 'न्यूयार्क' में उड़ चले। अमेरिका में उनका भी फिल्म तैयार कर लिया गया। परन्तु चार दिनों के बाद जब 'न्यूयार्क' के उड़ाकों की लाश और उसके टूटे हिस्सों को जापानी जहाज ने उठाया तब अमेरिका के धनाढ्यों में कुहराम मच गया।

सहारा में फिल्म निर्माताओं का पता न चला। अमेरिका के धनाढ्य बैंकरों का दिवाला हो गया। पता लगाने का कार्य जेनेवास्थित अन्तर्राष्ट्रीय संस्था ने अपने हाथ में लिया, परन्तु उनको भी सफलता न मिली।

वे कौन थे ?

रिपोर्ट

"अच्छा, फिर ?"

"फिर श्रीमन्, गोलियाँ दगने लगीं। उनकी आवाज से कान फटने लगे और सनसनाहट हृदयों में एक भयानक आतंक भरने लगी। एक के बाद एक गली सूनी होने लगी। जो जहाँ था वहीं दुबक रहा। कुछ ही मिनटों में बर्लिन सूना-सा लगने लगा। अपने घरों में भी लोग कानाफूसी करने लगे। दीवारों के पीछे भी किसी की बात करने की हिम्मत न होती थी।

"लोगों के हट जाने से फायरिंग बन्द हो गई होगी !"

"फायरिंग बन्द होने से क्या वास्ता, महानुभाव ? यह रात शैतान की थी, मनुष्य की नहीं। जब मनुष्यों की आवाज बन्द हो गई, उनका चीत्कार प्रारम्भ हुआ। उनकी वेदना का शब्द वास्तव में गोलियों की तड़तड़ाहट से कहीं बढ़कर था। गलियों का रक्तपात तो धीरे-धीरे बन्द हो गया, परन्तु उसके बाद घरों के भीतर भीषण काण्ड होने लगे। राइफिलें बाहर छोड़ दी गईं और उन्होंने रिवाल्वर और कटारें सम्हालीं।"

"फिर ?"

"फिर मकानों के कमरे शहर की गलियों में परिणत हो गये। अन्तर केवल इतना था कि गलियों में लगातार चीत्कार होते रहे थे, घरों में रह रह कर एक परिवार हाय! हाय! कर उठता था।"

"पिछली रात तब बार्थ्योलोमो की रात थी।"

"ठीक, महान् मार्शल, ठीक। सचमुच ही पिछली रात बार्थ्योलोमो की रात थी।"

"और अभी जब तुम आए तो शहर का क्या हाल था?"

"वही, रात का। गलियों में मरते हुए तड़प रहे थे, मरे बदबू फैला रहे थे। मार-मार का शोर अब भी मचा हुआ था।"

"तो क्या तुम यह कहना चाहते हो कि अभी हत्याकांड बन्द नहीं हुआ?"

"बिलकुल यही, महानुभाव! अभी बदले की आग जल रही है और अनेकों व्यक्ति जिनको राजनैतिक दलों और उनके सिद्धान्तों से किसी प्रकार की भी दिलचस्पी न थी, आज राइफिल और रिवाल्वर लिये राष्ट्र का कार्य साध रहे हैं?"

"व्यक्तिगत जायदाद का क्या हाल है?"

"वही जो व्यक्तिगत मनुष्य का है। जब मनुष्य से राष्ट्र प्रतिशोध ले रहा है तो वह उसकी संपत्ति किसके लिये छोड़ देगा?"

"नहीं समझे।"

"नहीं समझा, श्रीमन्।"

"इस जायदाद का उत्तराधिकारी कौन होता है जो जप्त होती है?"

"अब समझा। अभी तक उसका शायद कुछ विशेष प्रबन्ध नहीं है। परन्तु विशेष और विख्यात धनाढ्यों की संपत्ति का

वर्गीकरण एक प्रधान नोटरी कर रहा है, जिसके साथ अनेक अधीनस्थ नोटरी हैं। जहाँ अधीनस्थ नोटरी अलग-अलग कार्य करते हैं वहाँ व्यक्तिगत संपत्ति फिर व्यक्तिगत हो जाती है और जहाँ वे प्रधान नोटरी के साथ मिलकर कार्य करते हैं वहाँ वह ज्वाइंट स्टाक हो जाती है। मेरे एक मित्र ने एक नोटरी की बही देखी—उसमें दर्ज थे—अल्युमिनियम के वर्त्तन, कुएँ से जल निकालनेवाले पाइप के टुकड़े, बिजलीवाले पीतल के तार, रद्दी कागज और किताबें, और इस प्रकार की अनन्त तालिका। निस्सन्देह ये वस्तुएँ राष्ट्र की अनमोल समृद्धि के साधन होंगी।"

"व्यक्तिगत रूप से जिनकी संपत्ति को क्षति पहुँची है अथवा जिनकी संख्या नष्ट हुई है वे क्या किसी दल-विशेष के हैं ?"

"दल-विशेष और जाति-विशेष दोनों के।"

"वे कौन हैं ?"

"वे हैं, श्रीमान् , कार्ल मार्क्स के अनुयायी और हिरोद के वंशधर ।"

"हूँ !"

"उनमें अधिकतर तो नष्ट हो चुके हैं, बचे-खुचे नष्ट-प्राय हैं।"

"उन्हीं गोलियों से ?"

"उन्हीं गोलियों से और अपनी गोलियों से भी ।"

"अच्छा तो आत्मघातों की भी कुछ संख्या है ?"

"कुछ नहीं, बहुत महानुभाव। विशेषकर पिछली डिक्री ने तो वह संख्या लाखों तक पहुँचा दी है ।"

"ऐं ! लाखों तक ?"

"बैठें नहीं, श्रीमान् , डॉक्टर की सख्त हिदायत है ।"

"जर्मनी !"

"आह !"

"अच्छा क्या है वह डिक्री ?"

"पहले श्रीमान् लेट जायँ तो मैं आगे कहूँ।"

"बोलो !

"इस नये विधान ने और बातों के साथ-साथ यह भी एलान कर दिया है कि आर्य और अनार्य की सन्तान अनौरस समझी जायगी और अनौरसों के लिये जर्मनी की संपत्ति नहीं है।"

"तो आत्महत्याएँ इसी कारण विशेष हुई हैं ?"

"यह कारण वास्तव में अनेकों में से एक है।"

"सन् सोलह के रूस की दशा तुम्हें याद है ?"

"ठीक उसी प्रकार बे-घरबार के लोग भागे-भागे फिरते हैं। उनके बच्चे रोटी के टुकड़ों को तरसते हैं। अन्तर बस इतना ही है कि रूसी धनकुबेरों की संपत्ति अपनी कमाई न थी, परन्तु जर्मनी के इस वर्ग की सारी संपत्ति उसके पसीने की कमाई थी, उसकी आश्चर्यजनक सूझ की उपज !"

"अच्छा और शहरों का क्या हाल है ?"

"वही जो बर्लिन का है।"

"हैम्बर्ग, कोलोन, मूनिख, लीपत्सिग का ?"

"वही, ठीक वही।"

"हाँ !"

"ड्रेस्टेन और ब्रेस्लो तो शायद बिलकुल ही मटियामेट हो गये हों। फैंकफोर्ट और दार्त्तमुन्त के भी बुरे हाल हैं।"

"कोनिंग्स्बर्ग, मानहाइम और ब्रुन्स्विक ?"

"म्यूनिख के सन् २४ के भगोड़ों को कोनिंग्स्बर्ग ने आश्रय दिया था इसलिये उसे विशेष प्रकार से अनुगृहीत किया गया है।"

"किस प्रकार ?"

"वहाँ से अनार्य प्रजा सर्वथा हटा दी गई है।"

"फ्रेडरिक! बिस्मार्क। विलहेम!"

"बान्न, हाइडेलबर्ग, और फूर्थ में कुछ विचित्र घटनाएँ घटी हैं।"

"वह क्या?"

वहाँ के पुलिस कमिश्नरों को आतंक का भार सौंपा गया था। उन्होंने अपनी बुद्धिमानी का अच्छा परिचय देते हुए एलान कर दिया कि जो लोग विरोधियों के नाम बतायेंगे, उनका विशेष रूप से राष्ट्रीय खरीतों में उल्लेख किया जायगा। फिर तो व्यक्तिगत शत्रुता का लाभ उठाया जाने लगा। पुराने बैर साधे जाने लगे। इस प्रकार लगभग आधा शहर बरबाद हो गया है। अभागा शिमट्ट भी अपने प्रेस के साथ-साथ जला दिया गया!"

"और हमारा प्यारा हिनडेन्बर्ग?"

"श्रीमान्, हिनडेन्बर्ग में जुल्म की ज्यादतियों में कुछ सादगी बर्ती गयी है। वहाँ केवल विधानों को जारी करके विरोधी दल के व्यक्तियों और अनार्य आबादी को कैम्प जेलों में भेज दिया गया है।"

"हत्याकाण्ड वहाँ नहीं हुआ?"

"नहीं, महानुभाव, पर कब तक?"

"पर कब तक?' तुमने ठीक कहा, कैप्टेन।"

"खबर सुना चुका, श्रीमान्।"

"हाँ, अब तुम जा सकते हो। अब मुझे तुम्हारी आवश्यकता न होगी।"

"जी हाँ, स्वामिन्! अब मेरी आवश्यकता यहाँ न होगी। इसलिए मैं अब चला।"

'गुड़ुम', 'गुड़ुम' दो दफे आवाज हुई और हाथ से गिरते रिवाल्वर को सम्हालता-सा कैप्टेन धीरे-धीरे लोट गया।

महापुरुष ने अपने सिरहाने की ओर मुँह फेरकर दम तोड़ते हुए कैप्टेन को देखा, फिर कहा—तुम्हारा यह मतलब था, कैप्टेन? पर ठीक ही है, अब तुम्हारी यहाँ क्या आवश्यकता है? और मेरी भी क्या?

उसने अपनी चादर खींचकर अपने श्वेत केश ढक लिये। फिर वह जर्मनी का पितामह फील्ड मार्शल पाल फान हिन्डेनबर्ग न उठा।

अभागे

"आज इतने दिनों बाद भी फादर टेम्स में कोई अन्तर नहीं। वही जल, वही प्रवाह। विशाल भवनों की बुर्जियाँ अब भी उसमें झिलमिल-झिलमिल करती हैं। सारा लन्दन वैसे ही अब भी व्यस्त है।"

प्रौढ़ा ने यह अपने आप से धीरे-धीरे कहा था; परन्तु सुना उसके साथ ही किसी और ने भी। उसके पास थोड़ी ही दूर पर एक वृद्ध पुल के एक कोने में एक छोटे स्तम्भ पर कुहनी टेके और कर पर अपना चिबुक धरे, एकटक नीचे जल में अपनी परछाईं गौर से देख रहा था। यह तो बिलकुल सही-सही नहीं कहा जा सकता कि वह अपना प्रतिविम्ब ही देख रहा था; पर इसमें सन्देह नहीं कि उसकी नजर नीचे सीधी जल की ओर थी, जहाँ उसकी छाया जल की सतह पर धीरे-धीरे हिल रही थी। वह तन्मय हो नीचे की ओर दृष्टि गड़ाए देख रहा था और उसकी चुप्पी किसी प्रकार भी भंग होती नहीं दीखती थी। न विद्युतगति दौड़ती मोटरों की तीखी कर्णभेदी आवाज से, न चिमनियों के असह्य चीत्कार से। परन्तु उस प्रौढ़ा की बात से मानो उसकी नींद टूट गयी।

उसने उसकी ओर अपना मस्तक फेरा। बसन्त का आरम्भ था। चारों ओर नए फूल गमक रहे थे। परन्तु हवा में अभी तक तीखापन था और हाल ही की वृष्टि के कारण सर्दी कुछ बढ़ गयी थी। वह पुराना मैला फटा हैट, जिसके भीतर से भूरे-पके बाल टेम्स तट के विद्युत्प्रकाश में चमक रहे थे, उस पुरुष ने कानों तक खींच लिया था, उसकी लम्बी दाढ़ी के बाल भी बिलकुल सफेद हो गये थे। उसकी अवस्था लगभग पैंसठ के होगी; परन्तु उसके शरीर की हड्डियाँ विशेष चौड़ी दीख पड़ती थीं, यद्यपि उसका आकार वृद्ध-सा और कुछ-कुछ झुका हुआ था। उसके कपड़े भी फटे थे। पतलून में कितने ही पेबन्द लगे थे और ऊपर के स्वेटर में भी समय ने सुराख कर दिये थे। कोट उसके बदन पर न था। जूतों में भी कितनी सीयनें पड़ी थीं। संभव है उस पुरुष के कपड़े पुराने हों, संभव है नित्य के पहनने से ही उनकी यह गति हो रही हो।

नारी प्रौढ़ा थी—करीब पचास वर्ष की। वह उस पुरुष का एक प्रकार से जवाब थी। उसके कपड़े भी नितान्त मैले और पुराने थे। यह कहना कठिन था कि पेबन्दों की संख्या पुरुष के पैन्ट में अधिक थी या नारी के स्कर्ट में। उसके हैट का आकार इस सुरुचि से बना था कि कोई उसे देखकर कह सकता था कि वह उसका नहीं रहा होगा। किसी शौकीन महिला का ही वह आरम्भ में रहा होगा और उसके फेंक देने के बाद ही इसने उसे उठा लिया होगा; परन्तु इसमें भी को‌ई संदेह नहीं कि वह फेंकी संपत्ति भी इस नारी के अधिकार में कुछ होकर रही, जिसे उसने खूब सधाया। अब उसका रंग उड़ गया था और उसकी बुनावट की आँखें फैल-फैलकर घूर-सी र‍ही थीं। वह भी पुल के ही एक किनारे देर से खड़ी जल में दृष्टि गड़ाये

देख रही थी। जड़-चेतन उसके विचारों में खलल डालता नहीं दीख पड़ता था।

उसने धीरे-धीरे कहा—आज इतने दिनों बाद भी फादर टेम्ज में कोई अन्तर नहीं। वही जल, वही प्रवाह। विशाल भवनों की बुर्जियाँ अब भी उसमें झिलमिल-झिलमिल करती हैं। सारा लन्दन वैसे ही अब भी व्यस्त है।

पुरुष ने मस्तक उठाया। उसने उस स्त्री की ओर देखा।

"सारा लन्दन वैसे ही अब भी व्यस्त है।" नारी ने फिर कहा। "और अब भी सुखी इङ्गलैंड का मुकुट-मणि यह लन्दन पूर्ववत मस्तक उठाये खड़ा है।"

"सुखी इङ्गलैंड का मुकुट-मणि यह लन्दन !" अपने ही शब्दों को उसने दुहराया ; फिर कहा "हुँ !" उसके हुँकार में व्यंग था और थी एक अत्यन्त पीड़ामयी अनुभूति की व्यंजना।

बादल छँट गये थे। आकाश निर्मल था, स्वच्छ नील। नक्षत्र चमक रहे थे। उतने नक्षत्र जितने पूर्णिमा के समीप की रातों में चमका करते हैं। चन्द्रमा स्वयं उस तारकपुञ्ज में विलसता नीलसागर-से विस्तृत गगन में तैर-सा रहा था। और उस आदर्श निर्मल गगन में उस सुधांशु का कलंक उतना ही स्पष्ट झलक रहा था, जितना उस प्रौढ़ा के कहे 'सुखी इङ्गलैंड के मुकुट-मणि इस लन्दन' के सुख पर किया हुआ व्यंग।

नारी ने कहा "हुँ !" और उसने फिर अपना मस्तक नीचे झुका लिया। देर तक वह जल में नीचे देखती रही। कुछ अजीब तकलीफ की तेजी उसके सूखे शरीर-पंजर को रह-रहकर हिला-सी देती। पुरुष निरंतर उस अनोखी औरत की ओर देखता रहा।

नारी की नाक भर गयी थी । उसने उसे अपने फटे स्कर्ट के दामन से पोंछा। शायद वह रो रही थी और रोने के साथ ही कुछ गुनती भी जाती थी। रह-रहकर उसके मुख से जो उच्छ्वास निकल जाता वह अवश्य किसी चिरदुखी प्राणी का कातर उद्‌गार था। निश्चय वह अपने दुखमय जीवन के धागे की अनेक टूटी छोरें एकत्र कर रही थी। देर तक वह इसी प्रकार उच्छ्वास पर उच्छ्वास छोड़ती पुरानी इति वृत्ति जोड़ती रही। और देर तक वह पुरुष उसकी उस मूक कष्टमय पुकार को भरे दिल से चुपचाप सुनता रहा।

"यही स्थल है, यही वह पुल का किनारा जहाँ मेरे दुर्भाग्य का बीज वपन हुआ था। यही वह स्थल है और यहो वह पुलका किनारा" प्रौढ़ा ने टेम्स की ओर से दृष्टि उठाकर पुल पर डाली ।

उसके गालों पर आँसू की सूखी राहें अब भी दीखती थीं जो उसकी त्वचा की झुर्रियों से होकर मुश्किल से नीचे उतर सकी थीं।

"और वही यह बसन्त है, वे ही ये तारे हैं, वही है यह उनका नायक चाँद! आज पूरे पैंतिस वर्ष हो गये।" अपनी बात पूरी कर उसने फिर एक लम्बी साँस ली और ऊपर देखा।

वह शायद कुछ और कहती; परन्तु पास ही एक अपरिचित व्यक्ति को अपनी ओर घूरते देख उसकी चेतना लौट-सी आयी। वह चुप हो गयी।

पुरुष स्वयं कुछ अजीब परिस्थिति का शिकार हो रहा था। इस स्त्री के चीत्कार ने उसके अतीत में कुछ तरंगें उठा दी थीं। रह-रहकर जैसे उसके अतीत के भी चित्रपट बनाकर कोई उसके सम्मुख रख देता—"ऐं! क्या कहा?—'यही स्थल है, यह वह

पुल का किनारा जहाँ मेरे दुर्भाग्य-बीज का वपन हुआ था। यही वह स्थल है और यही वह पुल का किनारा, और यही वह बसन्त है, वे ही ये तारे हैं, वही है यह उनका नायक चाँद। आज पूरे पैंतिस वर्ष हो गये!' ऐं! यह किसकी कहानी है?" उसने सोचा—"मेरी कहानी भी तो कुछ ऐसी ही है। आखिर यह स्त्री कौन है? वह तो यह हो नहीं सकती।"

उसने उस स्त्री पर एक तीक्ष्ण भेद-भरी निगाह डाली; परन्तु स्त्री का मुख नीचे की ओर झुका था। उसपर स्मृतियों के मेघ घुमड़-घुमड़कर बरस रहे थे और आँखों में अँधेरा छा रहा था। वह उसका मुख देख न सका।

"और वह कहानी पैंतिस वर्ष पूर्व की है—वह कहती है।" उसने गुना। "तो क्या यह वही है? न, न, उसकी इसमें न तो आकृति है और न ऊँचाई। इतने दिनों तक उस दुःख के बाद तो उसका जीवित रहना भी संभव नहीं। नहीं, यह विपत्ति की मारी कोई और है। इस विविध चित्रित विश्वपत्र के चित्र प्राय: एक-से होते हैं, समानता उसका प्राण है, क्योंकि उसपर सब चित्रों का चितेरा एक है!"

"वह वर्ष गाँठ का दिन, वह बसन्त की संध्या और वह उस ठंढी रात में उसकी वे गरम-गरम साँसें, उसका वह दीन अनुनय! आह! इन सबने मुझे लूट लिया" स्त्री बड़ी तेजी से सोच रही थी। अतीत बड़ी सुगमता से, बड़ी भेदभरी आकुलता से उसके इतिहास के वे धुँधले पृष्ठ खोलता जा रहा था।

"फिर उसने मुझे छोड़ दिया, भुला दिया, पथ-पथ की भिखारिणी कर दी—"

"परन्तु!" वह कुछ रुककर सोचती हुई-सी फिर बोली—"परन्तु, स्वयं वह अभागा—हाँ, वह अभागा ही था, गरीब,

जीवन का दुखी, जमाने का सताया। मैं उसे दोष क्यों दूँ ? आज वह कहाँ है ?—मेरे पास, उसके लिये भी दो आँसू हैं।" नारी की आवाज पूरी तरह भरी गयी थी। उसने फिर अपने स्कर्ट के किनारे से अपनी नाक और आँखें पोंछीं।

पुरुष धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ा। उसके पास पहुँचकर धीरे ही धीरे उसने अपना हाथ उस झुकी मूर्ति के कन्धे पर रखा।

संसार में उस स्त्री का कोई न था। केवल स्मृतियाँ उसकी सगी थीं। पुरुष का हाथ कन्धे पर पड़ते ही वह चौंकी। उसने अपनी भीगी आँखें उसपर डालीं। मुख पर उसके बादल लहरा रहे थे। गाल के सूखते आँसुओं पर कितने ही केश चिपक रहे थे।

उसने उस पुरुष का हाथ अपने कन्धे से न हटाया और न उस पुरुष ने ही अपना हाथ खींचा। नारी ने विचारा शायद उस श्मश्रुल मुख में एक दयनीय विनय है।

"तुम कौन हो ?" उसने धीरे-धीरे कहा।

"तुम्हारी ही भाँति विपत्ति का मारा एक अभागा।"

"मेरी ही भाँति विपत्ति का मारा एक अभागा ?"

"हाँ, तुम्हारे करुण उच्छ्वासों में मैंने उनके [illegible] का [illegible] देखा, तुम्हारे टूटे शब्दों में मैंने तुम्हारी दुःखभरी कहानी [illegible] झंकार सुनी। क्या तुम मुझे अपना एक अकिंचन हितू मानकर अपनी कथा कहोगी ?"

"हितू मानकर ? यहाँ इस वसन्त की संध्या में ? इस बहती जलराशि के ऊपर झुके पुल की इस छोर पर ? इस चन्द्रमा सनाथ घूमते हुए तारक-मण्डल के नीचे ?" उसने कुछ गुनते हुए, कुछ अपने आप, उस नवागन्तुक से कहा।

पुरुष सोच रहा था—क्या यह उसके प्रति उसका उत्तर है, या अपने अभाग की सुधि ?

"हाँ, हितू मानकर। यहीं इस वसन्त की संध्या में। इस बहती जलराशि के ऊपर, झुके पुल के इस छोर पर। इस चन्द्रमा सनाथ घूरते तारक-मण्डल के नीचे। कहो, तुम अपनी दु:खभरी चिर-संचित कहानी कहो—मैं सुनूँगा।" फिर भी उसने प्रत्युत्तर में कहा।

स्त्री ने फिर अपना मस्तक उठाया। बड़े नेत्रविवरों में घुसी आँखें उसने फिर उस पुरुष पर लगा दीं। पुरुष में एक विशेष विचार-श्रृङ्खला टूटी बिखरी पड़ी थी, उसकी उलझी कड़ियों को वेग से वह सुलझाने का प्रयत्न कर रहा था; परन्तु वे कड़ियाँ कुछ अन्य अनजानी कड़ियों के साथ उलझी हुई थीं। अन्यत्र खोई उन कड़ियों को और अन्यत्र से आ मिली छोरों को सुलझाने के लिये कुछ और सुधि की आवश्यकता थी, किसी अन्य कहानी की छोरें अनिवार्य थीं। वह न सुलझा सका। विचार-श्रृंखलाओं की तेजी उसके मुखमण्डल पर दौड़ रही थी। स्त्री ने स्पष्ट देखा उसके ललाट पर चमकती पसीने की बूँदें! वह सहम गयी। वसन्त की सन्ध्या में जब कुछ सर्द हवा चल रही हो, लन्दन में आदमियों को पसीना नहीं होता—अवश्य इस पुरुष की भी कुछ अनुभूति है, इस बहते जन-स्रोत से विलग, इस अभागिनी की ही भाँति।

पुरुष अपने भीतर की हलचल से कुछ गर्मी का सचमुच ही बोध करने लगा था; यद्यपि अपने ललाट की नन्हीं बूँदें उसने न देखी थीं। उसने अपने मस्तक से वह फटा हैट उठाया। हवा में उसके चाँदी-से बाल लहरा उठे। कुछ लम्बा, कुछ दाढ़ी और मूँछों से छिपा उसका वह चाँदनी में चमकता मुख उस स्त्री ने

देखा। उस किंचित छिपे मुखमण्डल में उसकी बड़ी आँखें, उसकी सीधी लम्बी नासिका स्पष्ट चमक रही थीं। उसके चेहरे में यद्यपि कुछ झुर्रियाँ थीं, परन्तु उसमें न तो समय के किये उसके हैट में सुराख थे न उसमें स्वयं उसके लगाये पुराने टुकड़ों के पेबन्द! उसका चेहरा इटालियन मास्टरों द्वारा खिंची किसी एपास्टल की मूर्ति-सा दमक रहा था। स्त्री ने उसकी चेष्टा में सहानुभूति और उसकी वाणी में परोपकार की दृढ़ता पायी।

"हाँ! फिर तुम मेरी कहानी सुनोगे?" नारी ने काँपते स्वर में पूछा। उसने अपना हाथ अपने कन्धे पर पड़े हाथ पर धीरे-धीरे फेरा।

"बोलो, सुनूँगा।" पुरुष ने भी काँपती आवाज में कहा। उसने अपना हैट फिर अपने सिर पर रख लिया।

"फिर सुनो।"—स्त्री में एक अजीब धुन की तेजी थी—"यही वह स्थल है, यही वह पुल का किनारा। और यही वह बसन्त है, वे ही ये तारे हैं, यही है वह उनका नायक चाँद। आज पूरे पैंतिस वर्ष हो गये। पर सुनो, चलो उस बेंच पर बैठ जायँ।"

नारी उस पुरुष में एक अजीब अपरिभाषित आत्मीयता का आभास पाने लगी थी। उसने अपने कन्धे पर पड़े हाथ को अपने हाथ में ले लिया और वह टेम्स तट के लान पर रखे उस बेंच की ओर बढ़ी, जिसकी ओर अभी-अभी उसने इशारा किया था। पुरुष उसके हाथ के सहारे नीयमान अन्धे की भाँति बढ़ा। इस समय उसे वह नारी अपने से कहीं बढ़कर सशक्त मालूम हुई।

दोनों बेंच पर जा बैठे।

"सुनो"—वह बोली—"यही वह स्थल है, यही वह फुल का किनारा। और वही यह बसन्त है, वे ही ये तारे हैं, वही है यह उनका नायक चाँद। आज पूरे पैंतिस वर्ष हो गये।"

वह दम लेने के लिये रुकी। उसने उस पुरुष की ओर देखा, जिसकी दृष्टि उसपर गड़ी हुई थी।

"आज पूरे पैंतिस वर्ष हो गये जब पिक्केडिली स्क्वेयरवाले सर थियोडोर हल का एक सुन्दर, अत्यन्त सुन्दर पुत्र था—स्टीफेन हल। अत्यन्त सुन्दर था वह सर थियोडोर हल का पुत्र, वह स्टीफेन हल। सुनहरे केश थे उसके, ग्रीशन नाक थी उसकी, सीधी और लम्बी, सुन्दर क्राइस्ट की तरह उसका मुखड़ा था। बड़ी अजीब मादकतावाली उसकी आँखें थीं, बड़ी चौड़ी शक्ति भरी उसकी छाती थी, उस स्टीफेन हल की।"

पुरुष ने एक ठंढी साँस ली।

"उस सर थियोडोर हल की स्त्री लेडी हल स्टीफेन को छोटी उमर में ही छोड़कर मर गयी थीं। इस प्रकार सर थियोडोर हल के स्त्री न थीं। उनके एक स्टीवर्ड थे—जान रसेल। मिसेज जान रसेल ही सर थियोडोर के गृहकार्य देखती थीं। वे ही स्टीफेन को भी सम्हालती थीं। छोटी उमर से स्टीफेन युवा हुआ और मिसेज रसेल के स्नेह के कारण उसने अपनी माँ की कभी याद न की। उस रसेल और मिसेज रसेल की एक कन्या थी—डोरिस। जान और मिसेज रसेल की बड़ी प्यारी बेटी, उनकी आँखों की पुतली।"

पुरुष का माथा उसके कन्धे से आ टिका। उसने कुछ मुड़कर पुरुष की ओर देखा। पुरुष ने अपना माथा धीरे-धीरे टेम्स की ओर फेर लिया।

"स्टीफेन से वह डोरिस छोटी थी, बहुत छोटी, करीब पन्द्रह साल छोटी। स्टीफेन उसे बड़ा प्यार करता। सर थियोडोर भी उसकी ओर कभी-कभी देख लेते। सर थियोडोर बड़े कड़े मिजाज के थे, अत्यन्त चुप्पे और नितान्त गम्भीर। उन्हें देखकर डर लगता, डोरिस तो उनसे बचपन में ही डरती थी और जब कभी वह उसकी ओर प्यार से भी देखते वह डर जाती। स्टीफेन के प्रति उसका आचरण ठीक इसके विपरीत था। वह चुपचाप जाकर उसकी गोद में बैठ जाती और जब कभी उसकी माँ उसकी बिगाड़ी, नुकसान की हुई चीजों को हाथ में लिये धमकियाँ देती, उसकी टोह में निकलती, वह छोटी डोरिस उसी चौड़े छातीवाले स्टीफेन की गोद में दुबक जाती। माँ के चले जाने पर वह उसका चिबुक पकड़-पकड़ उसे प्यार करती और स्टीफेन उसे ऊपर उछाल-उछालकर खेलाता। आह! तुम जानते हो, पथिक, उसकी भुजाओं में कितना बल था?"

नारी ने उस पुरुष की ओर देखा, जिसने अनजाने अपने दोनों हाथों से उसके दोनों कन्धे पकड़ लिये थे और धीरे-धीरे उन्हें दबाते हुए वह स्वयं अपनी स्मृति को दबा-सा रहा था। उसने कुछ उत्तर न दिया। न नारी ने माँगा ही।

उसकी ओर देखती हुई स्त्री ने फिर कहना प्रारम्भ किया—"बड़ा बल था उसकी भुजाओं में—पेरिस, एकाइलस की भाँति। और उसे बड़ा प्रिय था वह होमर का जगद्विख्यात काव्य जिसकी—चैपमैनवाले अनुवाद की—एक-एक पंक्ति उसे याद थी।"

एकाएक स्त्री ने पुरुष की ओर देखा, फिर पूछा—"पर क्या तुम मेरी बात समझते हो, पथिक? होमर और चैपमैन का नाम तुमने सुना है?"

"कहानी कहती जाओ, देवी, बोलती जाओ। होमर और चैपमैन का अनूठा साहित्य मैं जानता हूँ। मैं स्वयं होमर का कभी बड़ा प्रेमी था।"

"सच!" उस स्त्री ने मानो कुछ सन्देहपूर्वक पूछा; फिर कहा—"अच्छा, सुनो—तो उस होमर की एक-एक पंक्ति स्टीफेन को याद थी। वह धीरे-धीरे बढ़ती उस डोरिस को भी होमर पढ़ाने लगा और जब कभी उसकी वह मतिमती डोरिस होमर की कुछ पंक्तियाँ कह उठती, उसके माता-पिता बाग-बाग हो जाते, वह स्वयं खिल उठता।"

"जब शैशव थक चला और नये यौवन के अंकुर धीरे-धीरे डोरिस के तन-क्षेत्र में उठने लगे, तब भी वह स्टीफेन उस डोरिस को होमर पढ़ाता रहा, उसको छेड़ता-खेलाता रहा; परन्तु सख्त मिजाज सर थियोडोर उसके इस आचरण को पसन्द न करते। उनके इस रुख को देख जॉन और मिसेज रसेल ने भी अपनी लड़की को दूसरी वस्तुओं में लगाना शुरू किया; परन्तु स्टीफेन, जिसने अपनी तीस वर्ष की अवस्था तक अपना विवाह न किया था, अवसर निकालकर डोरिस से खेल ही लेता।"

"इसी प्रकार तीन वर्ष और बीते। दो वर्ष पूर्व से ही उस सुन्दर स्टीफेन का स्पर्श उस सीधी डोरिस में एक अजीब गुद-गुदी पैदा करता; परन्तु अब तो वह धीरे-धीरे पंद्रहवाँ लाँघ चली थी। अब स्टीफेन का स्पर्श उसके शरीर में केवल गुदगुदी ही उत्पन्न न करता था, वरन् अब उसके भीतर की एक कल्पना को एक अजीब रूप देता, एक अजीब साध पैदा करता। वह साध क्या थी? स्वयं डोरिस न जानती थी। वही मूक विचित्र भावना धीरे-धीरे स्टीफेन के हृदय में भी घर करने लगी, चुपके-चुपके चोर की भाँति उन दोनों के भीतर पैठ-पैठ उनके हृदय चूसने लगी।"

"एक अद्भुत स्वप्न धीरे ही धीरे डोरिस में अपना सुनहरा संसार सिरजने लगा—हेलेन, वह ग्रीस की सुन्दरी हेलेन और वह ट्रॉय का अलबेला शक्ति की सीमा पेरिस! एक अजब स्वप्न-सुषुप्ति में डोरिस को अपनी ओर खींचने लगा—कुछ धुँधला, अस्पष्ट, हेलेन-पेरिस के सम्बन्ध-सा।"

"कुछ दिन और बीते। सर थियोडोर हल का स्वभाव और परुष होता गया, जॉन और मिसेज रसेल का क्रोध भड़कने लगा। डोरिस का नीड़ अब एकमात्र स्टीफेन का अंक था और स्टीफेन के झुँझलाए मन का बोध थी डोरिस की अनबोली भाषा।"

"परन्तु तुम क्या ऊँघते हो पथिक?" स्त्री ने पुरुष को झकझोर-सा दिया।

"आह! बोलती जाओ, तुमने शृङ्खला की छोरें फिर बिखेर दीं। रुको मत, बोलो, बोलती जाओ।" पुरुष ने कहा। उसकी स्मृतियों को कुछ खोए अंक हाथ लगे थे। उनको अब वह अगली पंक्ति में जोड़ना ही चाहता था।

नारी कुछ हँसी, फिर बोली—अच्छा सुनो। "फिर एक दिन—यही वह स्थल है, यही वह पुल का किनारा और वही यह बसन्त है, वे ही ये तारे हैं, वही है यह उनका नायक चाँद—आज पूरे पैंतिस वर्ष हो गये—यहीं उन दोनों में एक वासना—एक लालसा जगी। दोनों में—स्टीफेन और डोरिस में। स्टीफेन में पेरिस की और डोरिस में हेलेन की। दोनों एक अविज्ञात संसार में एक स्वप्निल जोड़े का धुँधला अनुभव करने लगे। एक हल्के सफेद बादल ने चन्द्रमा के मुख पर अपनी सफेद चादर डाली। तारों की मलिन आभा कुछ छिटकी, टेम्स की कलकल कुछ अधिक स्पष्ट, विशेष मधुर हुई। वह अभागा पेरिस उस

अभागिनी हेलेन को ले भागा। हाय, कहीं इतिहास की गढ़ी-मरी प्रतिमाएँ फूँक मारने से जी उठती हैं! क्यों नहीं उस लालसा को दबा दिया, पथिक?"

पथिक के नेत्र निर्झर हो रहे थे। नारी चौंकी।

"क्या बात है, पथिक?" उसने पूछा।

"कुछ नहीं, कुछ नहीं, यही सोच रहा था कि उनका मन-चीता संसार कितना अनित्य था, कितना मायावी। उनकी वह पेरिस और हेलेनवाली भावना इतिहास की गढ़ी-मरी प्रतिमाओं में फूँक मारती थी। चलो, तुम राह चलो अपनी।" वह बोला।

"फिर पेरिस और हेलेन के वे धुँधले प्रेत स्टीफेन और डोरिस संसार की खाक छानने निकले। उन्होंने सर थियोडोर और जॉन और मिसेज रसेल के उजड़ते उपवन पर अपनी उगती बेलें डालीं और उसे सुखा डाला। पर वे क्या अपनी उगती बेलें हरी रख सके?"

"टूट गया उनका स्वप्न, उजड़ गयी उनकी वह अपनी भाव-नाओं की बसायी दुनिया; और जैसे-जैसे समय ने अपने शिकंजे कसे उनकी खुमारी टूटती गयी।"

"पेरिस भागा, हेलेन खो गयी। ग्रीस नहीं था और न थे उसके वे बाँके सैनिक!"

डोरिस पिस गयी, काल की चक्की में उसने कितने ही भाँवरे भरे। जब मोहनिद्रा टूटी, स्वप्न का संसार उजड़ा, तब एक अधिक भयावह शैतान उसके भीतर घुसा। वह था भूख का भीषण शैतान। उसने आत्म-समर्पण कर दिया। परन्तु वह आत्म-समर्पण, आह वह आत्म-समर्पण कितना भयानक था!"

"आत्म-समर्पण! एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा, बीसियों। और इस आत्म-समर्पण के तारतम्य में जो एक

अनन्त प्राणि-परिवार का उस डोरिस ने सृजन किया, उसका भी हाल सुनोगे, पथिक ? ना, उतावले न हो, मैं उसे न कहूँगी। बस, इतना जान लो कि उस नव जनित परिवार का एक-एक जन उठ गया, प्राणों का जब धागा टूटा एक-एक मोती बिखर चला। मोती ? आह ! मोती ? नहीं, पथिक, वे थे नरक के कीड़े, जिन्हें पेरिस की विस्मृति में हेलेन ने जनमाए थे। आह ! हेलेन का यह अजीब और शायद अद्‌भुत रूप था, इतिहास से परे, जीवन के विविध परतों में शायद सही।"

नारी का कमजोर वक्ष फूल रहा था। साँस लेने के लिए वह रुकी और रुककर उसने पुरुष की ओर अपनी दृष्टि उठाई। पुरुष के आँसू अब सूख गये थे। वह दत्तचित्त अपनी बड़ी आँखें खोले, लम्बी नासिका की सीध में उन्हें डाले, लम्बे भुजाओं से नारी के पार्श्वों को धीरे-धीरे सहलाता-सा चुपचाप सुन रहा था।

"वह स्टीफेन का नाम भूल-सी गयी। साथ के अन्तिम दिनों में जैसे उसे पेरिस कहती थी वैसे ही स्मृति में उसके चले जाने पर भी वह उसको इसी पेरिस के नाम से ही याद करती—तब जब उसके अपने मरे, मृतप्राय परिवार से उसे छुट्टी मिलती।"

"फिर, जैसा मैंने कहा, डोरिस की यह नयी अपनी जनी दुनिया भी मिट चली, भूख और प्यास से व्याकुल, वस्त्रों के टूक जोहती। तब वह डोरिस फिर चली पैंतिस वर्ष की अपनी स्मृति टटोलती लन्दन की ओर।"

"उसके हृदय में एक अजीब व्याकुलता भरने लगी थी। एक अनोखे स्वप्न-संसार का सृजन फिर होने लगा था। उसने सोचा—वसन्त की संध्या है, पुल के पास नीचे जल में स्वच्छ आकाश के तारे निर्मल चाँद के साथ झिलमिल कर रहे हैं। चलो देखें, शायद वह पेरिस वहीं मिल जाय ! यह धुँधली भावना

घनी होने लगी और उसकी घनता इतनी बढ़ी कि डोरिस व्याकुल हो गयी। उसे विश्वास-सा होने लगा—सचमुच ही वह उसे वहाँ मिलेगा।"

"अपनी यह अद्भुत भावना लिये वह डोरिस लन्दन आयी। टेम्स के किनारे, इस पुल के पास पहुँचकर उसने पेरिस को चारों ओर देखा, फिर नीचे जल में देख उसने विचारा—'यही वह स्थल है, यही वह पुल का किनारा, जहाँ मेरे दुर्भाग्य का बीज वपन हुआ था और वही यह बसन्त है, वे ही ये तारे हैं, वही है यह उनका नायक चाँद!' परन्तु कहाँ है वह पेरिस? कहाँ गया वह पेरिस, पथिक?"

"पेरिस? वह स्टीफेन हल, अथवा रहने दो यह पुराना नाम, इसमें पारिवारिक खून का असर है, हाँ तुम्हारा वह पेरिस अभागा पेरिस?" पथिक कुछ उद्भ्रान्त हो बोला। उसने अब तक शायद अपनी टूटी शृङ्खला की कड़ियाँ एकत्र कर सुलझा ली थीं। "वह पेरिस भागा। वह भागा क्योंकि वह सचमुच पेरिस न था, उसके ट्रॉय में न तो वह दुर्ग था और न हेलेन को रखने के लिये, उसकी मर्यादा को ढँकने के लिये, उसमें प्रासाद। इसलिए, पेरिस भागा और वह निरन्तर भागता रहा। इस दुनिया के विशाल वक्ष पर वह भागता रहा। यूरोप का प्रसार उसके पाप और उस पाप की घोर स्मृति के लिये बहुत छोटा था। वह उसे लाँघ विस्तृत एशिया के जादू भरे चीन के शहरों में जा घुसा; परन्तु उसका वह डरावना पहले का इतिहास अपनी लम्बी भुजायें फैलाए अब भी उसकी ओर बढ़ता आता था। पेरिस उस पैसिफिक सागर की जलराशि को पार कर गया। परन्तु अमेरिका की वह अचरज भरी व्यस्तता भी उसकी स्मृति की सजगता को न सुला सकी। जब 'पैसिफिक के महा-

सागर में उस स्मृति को डुबा देने के अर्थ पर्याप्त जल न था, तो अमेरिका के सूखे थल से उसका क्या होता ?"

"पेरिस फिर भागा। वह निरन्तर भागता रहा—पैंतिस वर्ष तक। एकाएक एक दिन एक अजीब भावना उसके मन में पैठी। वही हेलेनवाली भावना—चलूँ, उस टेम्स तट पर चलूँ, उस पुल के किनारे देखूँ। 'बसन्त की सन्ध्या है पुल के पास नीचे जल में स्वच्छ आकाश के तारे निर्मल चाँद के साथ झिलमिल कर रहे हैं—चलूँ, देखें शायद वह हेलेन कहीं मिल जाय !' यह धुँधली भावना धीरे-धीरे घनी होने लगी और जब उसकी घनता पेरिस को बेदम करने लगी, सच्ची-सी दीखने लगी, पेरिस लन्दन की ओर चला।

"एँ, पेरिस लंदन की ओर चला ?" उत्सुक, व्यथित उस नारी ने अपने उठते सन्देह को दबाते हुए चिल्लाकर पूछा।

पुरुष ने उसकी आँखों में देखा जिसकी आँखें अब वेग से भर चली थीं।

"पेरिस लन्दन की ओर चला।" पुरुष ने फिर कहा। "टेम्स के किनारे, इस पुल के पास पहुँच कर उसने हेलेन को चारों ओर देखा और वह सर्वथा निराश-सा हो चला था। उसने धीरे-धीरे सुना—'यही वह स्थल है, यही वह पुल का किनारा जहाँ मेरे दुर्भाग्य का बीज बपन हुआ था ! और वही यह बसन्त है, वे ही ये तारे हैं, वही है यह उनका नायक चाँद' !"

पुरुष चुप हो गया। उसकी आँखें बरस पड़ीं। स्त्री के नेत्र भी भर रहे थे। उसने पुरुष के कन्धे दोनों हाथों जोर से पकड़ लिये। पुरुष उसकी पीठ पर धीरे-धीरे दोनों हाथों से थपकियाँ देता रहा।

पास का पुल खाली था। तारकमण्डल और वह निर्मल चाँद अब भी टेम्स के जल में झिलमिल-झिलमिल कर रहे थे। नक्षत्र कुछ-कुछ सरक चले थे, उनका नायक चाँद कुछ ऊपर उठ आया था। परन्तु स्वयं टेम्स अब भी उसी पुरातन कल-कल से चुपचाप बह रहा था!